Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि प्रसंग ॥

(शनि-पीड़ा शांति के सिद्ध दुर्लभ प्रयोग)

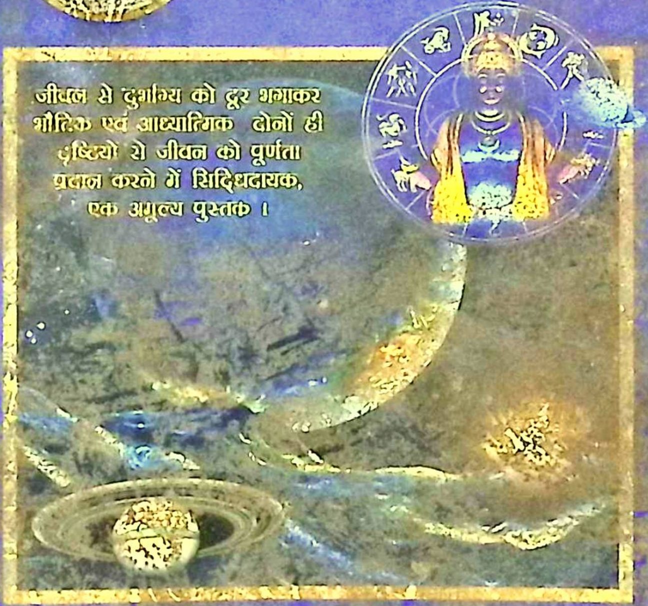

कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः ।
प्रसादं कुरु हे सौरे ! वरदो भव भास्करे ॥

॥ शनि प्रसंग ॥

(शनि-पीड़ा शान्ति के सिद्ध दुर्लभ प्रयोग)

बारह राशियों पर (वर्ष २००४ से २०८४ तक) साढ़ेसाती एवं ढैय्या
की स्थिति एवं चरण पर विशेष फल सहित
वर्ष २०११ से २०९० तक की शनैश्चर जयन्तियों तथा
२५ वर्षों की शनैश्चरी अमावस्या का विवरण

जीवन से दुर्भाग्य को दूर भगाकर
भौतिक एव आध्यात्मिक
दृष्टियो से जीवन को पूर्णता
प्रदान करने में सिद्धिदायक,
एक अमूल्य पुस्तक ।

कर्मयोगी श्री. विष्णु दत्त

॥ श्री शिव उत्सव केंन्द्र ॥
मुंबई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक

॥ श्री शिव उत्सव केंन्द्र ॥

१०२,आय- २ विंग,रॉयल मिडोस,कोप्रोली,

माथेरान रोड,न्यु पनवेल

संपर्क:- ०९० २२२ ८८ ७७ ९

०९३२ ४७८ ४२३१/०९०२९२१०३०३

visit on-www.shrishivutsavkendra.com

शनि प्रसंग

© लेखक : श्री. विष्णु दत्त

प्रथम संस्करण : सन २०१२

मूल्य : ७५/- रुपये

© पुस्तकाकार में प्रकाशित सामग्री पर सर्वाधिकार लेखक के अधीन सुरक्षित है। पुस्तक में प्रकाशित कुछ अंश घुमक्कड़ साधु-संन्यासियों से प्राप्त हैं.अतः उनके बारे में,उनके पते या अन्य जानकारी देना संभव नही है। साधक/उपासक कोई भी ऐसी साधना,उपासना,मंत्र जप या प्रयोग न करे,जो नैतिक, सामाजिक या धर्म परम्परा की दृष्टि से अनुकूल न हो। पुस्तक में प्रकाशित/विज्ञापित आद्यन्त सामग्री के विषय में किसी भी प्रकार की आपत्ति/तर्क या आलोचना स्वीकार्य नही होगी। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में प्रकाशित पूर्ण या आंशिक लेख या सामग्री को कोई भी किसी भी प्रकार से प्रकाशित करने का प्रयास न करे,अन्यथा वह कानूनी हर्जे-खर्चे का जिम्मेदार होगा। श्री शिव उत्सव केन्द्र से संबंधित सभी पदाधिकारी/कर्मचारी मानद एवं स्वैच्छिक और पूर्णतः अवैतनिक हैं तथा उन्हें किसी भी प्रकार का वेतन या पारिश्रमिक नही दिया जाता है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के निर्णय में, मुंबई न्यायालय ही मान्य होगा।

मुद्रक : मेंन्ट्रोनिक्स आर्ट,एस.ज़ी.वर्बे मार्ग,(प),मुंबई.-७०.

SHANI PRASHANG By Shri Vishnu Dutt

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री ॥
शिव उत्सव
केन्द्र

प्रकाशन

उन सभी लोगों का
सादर आभारी हैं,
जिन्होंने 'शनि प्रसंग' को
पुस्तकाकार देने में
सहायता की एवं
अपने अमूल्य सुझाव दिए ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ पुरोवाक् ॥

ग्रन्थावतारणार्थ व्याख्यानांश:

'शनि प्रसंग' कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी द्वारा संकलित एवं लिखित पुस्तक है। श्री विष्णु दत्तजी ज्योतिष एवं शास्त्र के अधिकारी विद्वान है। इन्होंने बड़े ही मनोयोग से इस पुस्तक का संकलन-सम्पादन किया है। इस पुस्तक की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता शनि के सम्बंध में लोक-जीवन में व्याप्त भ्रांतियों का निराकरण है। लेखक ने साठ संक्षिप्त अध्यायों में शनि से सम्बद्ध सारे प्रश्नों को समेटा है। तदुपरांत शनि और हनुमान प्रसंग को चित्रित किया गया है। इसी क्रम में शनि के बारे में कुछ रोचक तथ्य दिए गए हैं। लेखक ने बड़े ही कौशल से शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को विश्लेषित किया है। इसके उपरांत मंत्रानुष्ठान प्रयोग को दर्शाया गया है। लेखक ने नवग्रहों के मंत्र एवं जप संख्या, दान योग्य वस्तुएँ, अनुकूल रत्न, दान का समय तथा गोत्र के साथ-साथ राशियों के मंत्र तथा नवग्रह स्तोत्र भी प्रस्तुत किया है।

इसी क्रम में शनि-मंत्रानुष्ठान तथा जप विधान भी प्रस्तुत किया है। लेखक ने शनि-शांति पर विशेष प्रयोग की विधियाँ भी बतलाई हैं। इसके अंतर्गत शनि व शनि पत्नी प्रयोग, शनि कंटकी प्रयोग, पशुपतास्त्र प्रयोग, विशालाक्ष वरद प्रयोग, नरसिंह कवच प्रयोग तथा शिवकृत श्रीनृसिंह स्तुति प्रस्तुत किया है। इसके अलावा विवाह-बाधा निवारण प्रयोग, श्री वटुक भैरव प्रयोग, श्री वटुक भैरव कवचम्, श्याम सूत्र प्रयोग तथा शनि पाताल क्रिया का निर्वचन किया गया है। लेखक ने शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग, शिव प्रार्थना प्रयोग, महामृत्युंजय जप प्रयोग, श्री शिवाष्टोत्तरशत दिव्यनामामृत स्तोत्र, श्री

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हनुमान प्रयोग,श्री हनुमान चालिसा,श्री शनि चालिसा,शनैश्चर व्रत कथा तथा आनेवाले ७५ वर्षो की साढ़ेसाती- ढैय्या, ८० वर्षों की शनैश्चर जयन्तियाँ व २५ वर्षों की शनैश्चरी अमावस्याओं का विवरण दिया है । इस पुस्तक का अंतिम प्रसंग खण्ड 'अनुष्ठान प्रसंग' शीर्षक से है । इसके अंतर्गत मंत्र प्रसंग,शनि यज्ञ,'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' इत्यादि का विवेचन किया गया है । इस पुस्तक के अंत में लेखक ने आगामी पुस्तक 'विवाह चिंतामणि', 'सौभाग्य चिंतामणि' एवं 'रुद्राक्ष प्रसंग' का संक्षिप्त परिचय दिया है ।

सारांश यह है कि शनि प्रसंग धर्म निष्ठ भारत जनमानस के लिए बेहद उपयोगी पुस्तक है । इस पुस्तक से पाठकगणों को न केवल शनि के सारे पक्षों का परिचय मिलता है अपितु वे शनि के शुभाशुभ फलों का भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं । लेखक ने अपने अध्यवसाय से तथा प्रतिभाके बलपर शनि से सम्बद्ध प्राय:सभी प्रश्नों का निराकरण किया है जिससे पाठकगण विधिवत लाभान्वित हो सकते हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण तथा समूचा हिंदी जगत इस पुस्तक का खुले मन से स्वागत करेगा तथा सूर्यपुत्र शनिदेव के रचनात्मक पक्षों का परिचय प्राप्त कर सकेगा । मैं 'शनि प्रसंग' के प्रकाशन के उपलक्ष्य में लेखक कर्मयोगी श्री विष्णु दत्तजी का अभिनंदन करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में वे और भी पुस्तकें लिखकर अपनी प्रतिभा से हिंदी जगत को चकित करेंगे ।

॥ डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ॥
हिन्दी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय,मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सर्वजनहितकारी 'शनि प्रसंग' ॥

श्री शिव उत्सव केन्द्र के संचालक कर्मयोगी श्री विष्णुदत्त जी द्वारा लिखित शनि प्रसंग नामक पुस्तक का समग्र अवलोकन किया। जिसमें शनिग्रहजनित बाधाओं के निवारण हेतु अनेकानेक आश्चर्य-जनक उपायों का संग्रह देखने को मिला। ये सामान्य ही नहीं अपितु दुर्लभ और अनुभवसिद्ध वेदपुराणोक्त स्तोत्र,मंत्र,तंत्र,यंत्र,रुद्राक्ष धारण,औषधस्नान,दान एवं जप पूजनादि विविध उपाय हैं। उपायों के साथ-साथ उनकी सरल एवं प्रामाणिक विधियाँ भी दी गयीं हैं। शनि कब कौन-कौन सी समस्याएँ देता है उन परिस्थितियों की जानकारी भी पुस्तक में प्रस्तुत की गयी है। इसके साथ-साथ सभी राशियों पर अस्सी वर्ष की शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या की स्थिति, शनैश्चर जयन्तियाँ व अमावस्याओं की तिथियों का विवरण तथा संसार में प्राणियों के दैनिक जीवन की अन्य अनेक समस्याओं के समाधान आदि अनेक विषयों के कारण इस पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

आशा करते हैं कि कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी के इस अथक प्रयास का सभी धार्मिक सज्जन परिपूर्ण लाभ उठायेंगे। जिससे उनका यह परिश्रम सार्थक सिद्ध हो और वे आगे भी भविष्य में इसी प्रकार जन- कल्याण के कार्य करते रहें। हम परमपिता परमेश्वर से उनकी उत्तरोत्तर अभिवृद्धि की शुभमंगल कामनाएँ करते हैं।

॥ वेदाचार्य डॉ.कीर्त्तिकान्त शर्मा ॥
अनुसन्धानाधिकारी
इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
जनपथ,नई दिल्ली.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सुखद अनुभव है 'शनि प्रसंग' ॥

कर्मयोगी श्री विष्णु दत्तजी द्वारा लिखित 'शनि प्रसंग' ग्रंथ जन-मानस के लिए परमकल्याणकारी ग्रंथ है । यद्यपि शनिदेव पृथ्वीलोक के दंडाधिकारी हैं । वे अधर्मी, पापियों को उनके बुरे कर्मो का दंड अवश्य देते हैं । वे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से सब देखते रहते हैं । उनकी पैनी दृष्टि से देव, दानव, मानव, यक्ष, गंधर्व कोई भी नहीं बच सका है । समग्र ग्रंथ पर दृष्टिपात करने पर यह सुखद अनुभव होता है कि लेखक ने जन-मानस के हृदय में व्याप्त शनिदेव के भय एवं क्रूरता को दूर करने के लिए सफल प्रयास किया है । पाठकों को यह ग्रंथ पढ़ने के बाद विचार पूर्वक इसमें सुझाये हुए उपायों को अपनाने पर इसकी विशेषता की पुष्टि का प्रत्यक्ष प्रमाण स्वतः मिल जायेगा । शनि प्रसंग पुस्तक में लेखक नें शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या की जिस प्रकार से तात्कालिक स्थिति, उसके फलादेशों का वर्णन और तत्संबंधी बाधाओं, समस्याओं का सहज एवं सफल निदान प्रस्तुत किया है, वह अपने आप में अद्‌भुत है । इस पुस्तक की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है ।

लेखक श्रद्धेय कर्मयोगी श्री विष्णु दत्तजी की लेखनी से शब्दांकित् 'शनि प्रसंग' संस्करण एवं समय-समय पर उनके निर्देशन में सम्पन्न होने वाले '॥ श्री शनि-हनुमान महायज्ञ ॥' शनि जनित पीड़ा से व्यथित लोगों के लिए संजीवनी के समान हैं । लोक कल्याणार्थ लिखा गया यह ग्रंथ आस्थावान पाठकों के लिए परम हितकारी सिद्ध होगा । इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ....

॥ श्री प्रमोद दातरंजे ॥
वरिष्ठ.अधिक्षक, नेशनल सैम्पल सर्वे ऑर्गनाइजेशन
(एफ.ओ.डी), भारत सरकार.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ एक अनुठा प्रयास है 'शनि प्रसंग' ॥

'शनि प्रसंग' जिसके लिए आप लंबे समय से उत्कंठित थे, अब आपके हाथों में है। ग्रहों के प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण अमावस्या-पूर्णिमा को समुद्र के किनारे चन्द्रमा के प्रभाव से उठने वाले ज्वार-भाटे के रुप में देखा जा सकता है। चूंकि चन्द्रमा की गति बहुत तेज होती है इसलिए उसका प्रभाव भी सहज दिखायी देता है। इसी प्रकार क्रमशः अन्य ग्रहों का भी प्रभाव है। जिसमें शनि का स्थान बड़ा विशेष है। ज्योतिषीय दृष्टि से इस बात पर किंचितमात्र भी संदेह नहीं किया जा सकता कि शनि से मनुष्य के कर्मो का फल निर्धारित होता है, जिसे न्याय कहते हैं। न्याय के साथ भावुकता मेल नहीं खाती, उसके लिए थोड़ा कठोर होना ही पड़ता है। इस कठोरता को लोग निष्ठुरता, निर्दयता, उपेक्षा, क्रोध, अहंकार, क्रूरता और शनि के कोप नाम से संबोधित करते हैं। शनि से मनुष्य, देव-दानव, पशु-पक्षी आदि योनि एवं पर्यावरण तक सभी प्रभावित होते हैं। शनि की इस विभीषिका को ध्यान में रखकर 'शनि प्रसंग' पुस्तक में ज्योतिष के प्रति अनुराग रखने वालों का बड़े ही सुंदर और सहज ढंग से मार्गदर्शन किया गया है।

शनि विषय पर अच्छे सरल ग्रंथ कम उपलब्ध होने एवं जनमानस में शनि-शाँति के समुचित उपाय के आधे-अधूरे ज्ञान होने से प्रायः शनि को भय के पर्याय के रुप में देखा जाता है। यह पुस्तक शनि संदर्भ में एक अनूठा प्रयास है, पाठक भली-भांति इसमें दिए गये उपायों का अध्ययन, मनन और प्रयोग करके अल्पकाल में ही अपनी अभिलाषा पूरी करके कष्टों से मुक्त हो सकते हैं। इस पुस्तक में जहाँ पर मन्त्रों का प्रयोग दिया गया है, जिसमें दश महाविद्या नवग्रह प्रयोग, शनि साधना, पशुपतास्त्र प्रयोग, विशालाक्ष वरद प्रयोग, शनि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाताल क्रिया, नरसिंह (कवच) प्रयोग, विवाह-बाधानिवारण प्रयोग, वटुक भैरव से संबंधित प्रयोग, श्यामसूत्र प्रयोग, शनैश्चरी अमावश्या प्रयोग-१, शनैश्चरी अमावश्या प्रयोग-२, शिव-प्रार्थना प्रयोग (शिव आम्नाय स्तोत्रम्) महामृत्युंजय जप प्रयोग, श्रीशिवाष्टोत्तरशतदिव्य-नामामृत स्तोत्रम्, हनुमान प्रयोग एवं यज्ञ विधान आदि प्रयोग विशेष स्थान रखते हैं, पाठकों से विनम्र प्रार्थना है कि यदि योग्य व्यक्ति से यथाविधि समझकर उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें तो इन प्रयोगों में सिद्धि प्राप्त कर लेना सरल हो जाएगा। पाठक जो उपाय आसानी से कर सकते हैं उसे ही करें, जिसे नहीं कर सकते हैं उसे किसी विद्वान ब्राह्मण द्वारा ही विधिपूर्वक करवायें अन्यथा कम लाभ या हानि हो सकती है। पाठक वर्ग विशेष अनुकूलता के लिए 'श्री शिव उत्सव केंद्र' द्वारा संपन्न होने वाले 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' में प्रयास कर अवश्य सम्मिलित हों क्योंकि इस यज्ञ में पूर्ण विधि से अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है जिससे जीवन में अनुकूलता और मनोकामना अवश्य फलीभूत होती है, ऐसा मेरा ही नहीं हजारों-हजारों लोगों का व्यक्तिगत अनुभव और दृढ़ विश्वास है।

श्रद्धेय कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी का यह प्रयास पाठकों को सुख, शॉंति, समृद्धि एवं प्रगति प्रदान करे और आत्मकल्याणकारी बनने में पूर्ण सहायक हो।

॥ आचार्य श्री वेदव्रत मिश्र ॥
दर्शन-पुराणेतिहासाचार्य, एम.ए.
उत्तर प्रदेश.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ चमत्कारों से परिपूर्ण हैं 'शनि प्रसंग' के अनुभव ॥

आपके द्वारा लिखी पुस्तक 'शनि प्रसंग', शनि के प्रति अकारण भय, मिथ्या संशय को दूर कर शनि को अनुकूल करने के श्रेष्ठतम एवं सरलतम साधनों से संकलित एक अनूठी कृति है।

इस पुस्तक में शनि से संबंधित रोचक प्रसंगों, तथ्यों, सरलतम् एवं विशिष्टतम् मंत्र प्रयोगों एवं संक्षिप्त यज्ञ विधान सहित आनेवाले ७५ वर्षों तक की साढ़ेसाती- ढैय्या,८०वर्षों की शनि जयंती तथा २५ वर्षों की शनैश्चरी अमावस्या का विवरण देकर आपने इस पुस्तक को और भी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बना दिया है। इसके साथ ही समय-समय पर आपके निर्देशन में संपन्न होनेवाले 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' के सामूहिक विशाल आयोजनों के माध्यम से जिस प्रकार से हजारों लोग लाभान्वित हो रहे हैं,वह अपने आप में एक विस्मय और विमुग्ध कर देनेवाली विलक्षण घटना है।

मैं अपने दो अनुभवों को पाठकों के साथ बांट रहा हूँ। प्रथम यह कि कुछ वर्ष पूर्व जब एक बार आप पुणे में जनवरी के माह में १०८ कुंडीय यज्ञ संपन्न करवा रहे थे। उस समय कुछ लोगों को आपकी साधारण वेष-भूषा और सहज वार्तालाप से आपकी सक्षमता पर शंका उत्पन्न हुई। यह बात जब मुझे पता चली तो मैंने इस बात का आपके समक्ष निवेदन किया। आपने सहज भाव से कहा "मुझे आडंबर पसंद नहीं है, अनुष्ठान आरम्भ होने दीजिए, शंका का समाधान भी हो जाएगा और अनुभव भी हो जाएगा।" साधारणतः जनवरी ठंडी का महीना होता है परंतु उस दिन अप्रेल-मई की तरह चिलचिलाती धूप पड़ रही थी,लोग पसीने से तर-बतर हो रहे थे। तभी मंच से आपने सभी को संकल्प के लिए हाथ में जल लेने को कहा और संकल्प करवाकर जैसे ही अनुष्ठान का मंत्रोच्चारण आरंभ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किया,अचानक पाण्डाल वर्षा की फुहार में भीग गया। मंत्रोच्चारण क्रम सम्पन्न करने बाद आपने बताया कि जब मंत्रों का प्रयोग उचित विधान से और पूर्ण श्रद्धा से किया जाता है,तो वह निश्चित ही अपना प्रभाव दिखाता है। यह वर्षा की हल्की-हल्की फुहार इस बात का संकेत है कि हमारा संकल्प और पूजन विधिवत् सम्पन्न हो रहा है। मैंने अभी जिन मंत्रो का प्रयोग किया,वह उस देवता से संबंधित था,जिन्हें जल अत्यंत प्रिय है। पुणे की इस घटना के आज भी हजारो लोग साक्षी हैं।

दूसरी घटना तलेगॉव नगरपरिषद की है,जो पुणे जिला के अंतर्गत आता है। आप यहाँ पर 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' करवा रहे थे तलेगॉव के आस-पास पर्वतीय क्षेत्र होने से वर्षा के दिनों में यहाँ लगभग रोज ही दोपहर के बाद वर्षा होती थी।'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ'के लिए जब स्थान और समय का निर्धारण किया गया, संयोग से वह प्रात: १०.३० बजे का समय था और आसमान स्वच्छ था। संयोगवश किसी का भी ध्यान वर्षा के समय की ओर नहीं गया, निर्धारित दिन और समय पर यज्ञानुष्ठान आरंभ हुआ,पूजन का पूर्वार्ध क्रम सम्पन्न हुआ,कुछ देर विराम के बाद यज्ञ का उत्तरार्ध क्रम शुरु होने वाला था। यज्ञ के लिए वेदियाँ तैयार थीं। लकड़ियाँ,हवन सामग्री आदि सभी कुछ यथा स्थान पर रख दी गयी थीं। मध्यान्ह का समय अभी समाप्ति की ओर बढ़ने ही वाला था कि,अचानक आकाश में बादल घिर आये और देखते ही देखते वर्षा आरंभ हो गयी,थोड़ी ही देर में स्थिति ऐसी हो गयी कि समूचे पांडाल में,छॉव के लिए लगाये गये मंडप से मोटी-मोटी जल की धार गिरने लगी। जैसे-तैसे लोगों और यज्ञ सामग्रियों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आयोजनकर्ताओं द्वारा यज्ञ समारोह के दिन के चयन एवं व्यवस्था में भारी चूक हो गयी है और इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समारोह को अब यहीं पर विराम देना पड़ेगा। अब लोग बस प्रतीक्षा कर रहे थे कि, वर्षा थोड़ी देर के लिए रुके और हम अपने घर की ओर प्रस्थान करें। लगभग सब ने यज्ञ के उत्तरार्ध अर्थात संभावित यज्ञ कार्यक्रम के आगे सम्पन्न होने की आशा छोड़ दी थी।

इस आयोजन में कुछ लोग ऐसे भी आये थे जो आपको निकट से जानते थे, उनका कहना था कि अगर आप चाहें तो यह यज्ञ बिना किसी बाधा के आगे बढ़ सकता है। उनकी बातों पर कुछ लोग, जो आपके इस समारोह में पहली बार आये थे, उन्हें घोर आश्चर्य हुआ। इस प्रकार लोग आपस में बातचीत कर ही रहे थे कि इसी बीच पता चला कि, आपने लोगों से धैर्य रखने को कहा है और यह भी कहा है कि थोड़ी ही देर में यज्ञ आरंभ हो जाएगा। लोगों ने देखा कि आपने मंच के पास ही उपयुक्त स्थान देखकर एक छोटा-सा यज्ञकुंड बनवाया और अग्नि प्रज्वलित कर संक्षिप्त पूजनोपरांत यज्ञकुंड में मंत्रों से आहुतियाँ प्रदान करने लगे। लोग यह दृश्य अपलक देख रहे थे। अभी आपके द्वारा आहुतियाँ प्रदान करते हुए कुछ ही मिनट बीते होंगे कि लोगों ने अनुभव किया कि वर्षा कुछ धीमी होने लगी है और १०-१५ मिनट में ही सबकुछ सामान्य हो गया। यज्ञानुष्ठान की तैयारी पुनः आरंभ कर दी गयी और कुछ ही समय बाद लोग अपने-अपने यथा स्थान पर बैठकर यज्ञाहुतियाँ प्रदान करने लगे। यज्ञ में भाग लेनेवाले लोगों के तब आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब संध्याकाल में पूर्णाहुति और आरती के पश्चात लोग अपने-अपने घरों में जैसे ही पहुँचे, वैसे ही घमासान बरसात शुरु हो गयी और अगले दिन तक अनवरत होती रही।

अत्यंत शालीनता एवं कर्मठता का परिचय देते हुए आपने जिस प्रकार से धर्म और कर्म का अनूठा आदर्श प्रस्तुत करते हुये लोककल्याणकारी धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रमों, शिविरों, महायज्ञों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं यात्राओं के माध्यम से जो जनजागरण एवं नव चेतना का संचार किया है, वह निश्चय ही अभिनन्दनीय व प्रेरणादायी है।

आपके दीर्घकालीन अध्ययन एवं अनुभवों के आधार पर लिखी गयी पुस्तक 'शनि प्रसंग' से जन-सामान्य में अंधविश्वास और अंधानुकरण से बचने एवं अपने विवक-बुद्धि से उचित निर्णय लेने व स्वस्थ चिंतन और उत्तम ज्ञान का प्रसार होगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

मैं स्वयं को परमसौभाग्यशाली मानता हूँ, जो मुझे आपका साहचर्य एवं स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला। श्रद्धावनत।

॥ श्री. हरिभाऊ गोविंदराव उंब्रजकर ॥
ओ. ओ. सि. (सिवि),
रक्षा मंत्रालय (भारत सरकार).

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अमृत कलश है 'शनि प्रसंग'॥

वस्तुतः जिज्ञासा ही सृजन का मूल स्रोत है। मानव की जिज्ञासा ने ही नवीनतम चीजों को जन्म दिया है। इस सर्जनात्मक जीवन-प्रवाह में कुछ खोज-बीन करके लिखने की परंपरा रही है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 'श्री शिव उत्सव केन्द्र' के संस्थापक मित्रवर श्री विष्णु दत्त जी ने 'शनि-प्रसंग' पुस्तक लिखकर एक बहुमूल्य 'रत्न' लोक को समर्पित किया है जो अपने आप में दुर्लभ तो है ही, साथ ही अचूक राम-बाण भी है।

इस ग्रंथ के विविध पहलुओं मसलन शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के महत्वपूर्ण तथ्य, मंत्रानुष्ठान प्रयोग, शनि शांति पर विशेष प्रयोग, 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' आदि पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि इसकी समग्र दृष्टि परान्तसुखाय है। निष्कर्षतः इस ग्रंथ के समस्त रोचक- प्रसंग पुस्तक की उपादेयता को स्वतः बढ़ा देते हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ के संदर्भ में मेरे काव्यमय भाव इस प्रकार हैं:-

"शिव उत्सव केन्द्र के संस्थापक श्री विष्णु दत्त,
'शनि-प्रसंग' पुस्तक लिख, लोक को किया प्रदत्त,
लोक को किया प्रदत्त, इसमें जीवन का रस है,
है यह जीवन-सार, यह तो अमिय कलश है,
कहते सत्य 'दिनेश' यह तो अदभुत पुस्तक है,
लोक कल्याणार्थ की आपने कोशिश भरसक है"

मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपनी विशेषताओं को धारण किये हुए यह ग्रंथ पाठकों द्वारा खूब प्रशंसनीय तो होगा ही साथ ही उनका कल्याण भी करेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.......

॥ प्रो. दिनेश कुमार ॥ (काव्य भूषण) एम.ए., एम.फिल.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं यात्राओं के माध्यम से जो जनजागरण एवं नव चेतना का संचार किया है, वह निश्चय ही अभिनन्दनीय व प्रेरणादायी है।

आपके दीर्घकालीन अध्ययन एवं अनुभवों के आधार पर लिखी गयी पुस्तक 'शनि प्रसंग' से जन-सामान्य में अंधविश्वास और अंधानुकरण से बचने एवं अपने विवक-बुद्धि से उचित निर्णय लेने व स्वस्थ चिंतन और उत्तम ज्ञान का प्रसार होगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

मैं स्वयं को परमसौभाग्यशाली मानता हूँ, जो मुझे आपका साहचर्य एवं स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला। श्रद्धावनत।

॥ श्री. हरिभाऊ गोविंदराव उंब्रजकर ॥
ओ.ओ.सि.(सिवि),
रक्षा मंत्रालय (भारत सरकार).

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अमृत कलश है 'शनि प्रसंग'॥

वस्तुतः जिज्ञासा ही सृजन का मूल स्रोत है। मानव की जिज्ञासा ने ही नवीनतम चीजों को जन्म दिया है। इस सर्जनात्मक जीवन-प्रवाह में कुछ खोज-बीन करके लिखने की परंपरा रही है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 'श्री शिव उत्सव केन्द्र' के संस्थापक मित्रवर श्री विष्णु दत्त जी ने 'शनि-प्रसंग' पुस्तक लिखकर एक बहुमूल्य 'रत्न' लोक को समर्पित किया है जो अपने आप में दुर्लभ तो है ही, साथ ही अचूक राम-बाण भी है।

इस ग्रंथ के विविध पहलुओं मसलन शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के महत्वपूर्ण तथ्य, मंत्रानुष्ठान प्रयोग, शनि शांति पर विशेष प्रयोग, 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' आदि पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि इसकी समग्र दृष्टि परान्तसुखाय है। निष्कर्षतः इस ग्रंथ के समस्त रोचक- प्रसंग पुस्तक की उपादेयता को स्वतः बढ़ा देते हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ के संदर्भ में मेरे काव्यमय भाव इस प्रकार हैं:-

''शिव उत्सव केन्द्र के संस्थापक श्री विष्णु दत्त,
'शनि-प्रसंग' पुस्तक लिख, लोक को किया प्रदत्त,
लोक को किया प्रदत्त, इसमें जीवन का रस है,
है यह जीवन-सार, यह तो अमिय कलश है,
कहते सत्य 'दिनेश' यह तो अदभुत पुस्तक है,
लोक कल्याणार्थ की आपने कोशिश भरसक है''

मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपनी विशेषताओं को धारण किये हुए यह ग्रंथ पाठकों द्वारा खूब प्रशंसनीय तो होगा ही साथ ही उनका कल्याण भी करेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ......

॥ प्रो. दिनेश कुमार ॥ (काव्य भूषण) एम.ए., एम.फिल.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आपके द्वारा 'शनि प्रसंग' पुस्तक पर दी गई शुभकामनाओं के प्रति हार्दिक आभार.....

॥ स्वामी देवेन्द्रानंद सरस्वती जी महाराज ॥

श्रीमज्जगदाचार्य नैमिष व्यास पीठाधीश्वर
नैमिषारण्य.उत्तर प्रदेश.

॥ श्री रामनरेश यादव ॥

माननीय राज्यपाल,मध्यप्रदेश.

॥ श्री कामाख्या शर्मा ॥

प्र.पुजारी,कामाख्या पीठम् ,आसाम.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनोगत...

॥ श्री विष्णु दत्त ॥

'शनि प्रसंग' पुस्तक में प्रवेश से पहले अगर हम यह समझ लें कि, शनि प्रभाव का अर्थ क्या है ?अभिप्राय क्या है ? तो उचित होगा, तभी 'शनि प्रसंग' की सार्थकता भी होगी। संक्षेप में अब तक का मेरा यह अनुभव रहा है कि, शनि साढ़ेसाती, ढैय्या अथवा शनि की कोई भी दशा कभी भी किसी घटना विशेष को उत्पन्न नहीं करती है बल्कि जन्मांग में ग्रहों के योग-संयोग से उत्पन्न फल या घटना, बल, समय और स्थान का निर्धारण करती है। अत: शनि का नाम सुनकर हाथ-पॉव ठण्ढे करने से पहले जन्मांग में शनि की स्थिति, उसका बल और फल का विचार करने के पश्चात् ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचें तो उत्तम होगा।

किसी भी एक राशि के दो व्यक्तियों पर शनि का प्रभाव एक-सा नहीं होता है, क्योंकि सभी के जन्मांग में ग्रहों की स्थिति एक जैसी कभी नहीं रहती है। अत: शनि के नाम से स्वयं या किसी अन्य को भयभीत करने से पहले उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में अवश्य रखें।

मैं चाहता हूँ, उदास चेहरों पर मुस्कान आये। मुँह लटकाये हुए लोगों के जीवन में नई चेतना का प्रवेश हो। लोग भ्रम और भय से मुक्त हों, क्योंकि इसके अनुगमन से लोगों ने स्वयं को इतना दीन बना लिया है कि शनि के विषय में सुनने और जानने का उनका सामर्थ्य जाता रहा है।

'शनि प्रसंग' इसी क्रम में एक सम्बोधन मात्र है। जिसमें पथ-प्रदर्शन भी है और प्रार्थना भी। आशा है, प्रबुद्ध पाठक वर्ग अपने विचार एवं अनुभवों से मुझे अवश्य अवगत करायेंगे।

मेरी शुभकामना पाठकों के प्रत्येक शुभ संकल्पों के साथ है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सुख प्राप्नुयात् ॥

(सुख की प्राप्ति)

'उत्तर कालामृत' में कालीदास के शब्दों में ,

पुण्यम् वाप्यथ पापरुपमपि वा कर्मार्जित प्राग्भवे ,
तत्पाकोऽत्र तु खेचरस्य हि दशा भुक्त्यादिभिर्ज्ञायते ।
तस्मात्खेट दशा विभाग इह चावश्यम् क्रमात्तुल्लम् ,
ज्ञेयम् तत्तदनिष्ट शाँति करणादिष्टम् सुखम् प्राप्नुयात् ॥

अर्थात्

पूर्व जन्म कृत कर्मों द्वारा संचित पुण्यों और पापों अर्थात् शुभ और अशुभ कर्मों का फल वर्तमान जन्म में ग्रहों की दशा आदि के द्वारा प्रकट होता है। अतएव जो कष्ट,भोग,दशा द्वारा प्रकट हो रहा है,उसका कारण और फल निष्कर्ष ज्ञात करना ही उचित है,क्योंकि अनिष्ट की शांति कर सुख प्राप्ति का यही एकमात्र उचित साधन है।

॥ जीवन में वही महत्वपूर्ण है, जो वर्तमान में उपस्थित है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥शनि प्रसंग॥

शनैश्चरस्य लक्षणसम्बन्धः व निदान ज्ञानम्

१. शनि परिचय २३

२. शनि और हनुमान प्रसंग २९

३. शनि के विषय में कुछ रोचक तथ्य ३३

॥ शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के महत्त्वपूर्ण तथ्य ॥

४. शनि साढ़ेसाती (वृहद कल्याणी) ३५

५. शनि ढैय्या (कंटक शनि) ३६

६. साढ़ेसाती चरण ३७

७. शनि साढ़ेसाती/ढैय्या और बारह राशियाँ कष्ट एवं हानिप्रद (घातक) चरण सहित (वर्ष २००४ से २०८४ तक) ३९

८. शनि चरण (पाद अर्थात् पाया .)फल ५१

९. शनि महादशा-अंतर्दशा संक्षिप्त फल विवेचन ५२

१०. शनि के सामान्य शुभ-अशुभ फल ५४

११. मंत्र के स्वरूप एवं अंग ५६

॥ मंत्रानुष्ठान प्रयोग ॥

१२. नवग्रहों के मंत्र एवं जप संख्या, दान योग्य वस्तुएँ, अनुकूल रत्न, दान का समय तथा गोत्र ६१

१३. राशियों के मंत्र ६५

१४. नवग्रह स्तोत्रम् ६७

१५. नवग्रहादि गायत्री मंत्र ६८

१६. अथ नवग्रह बलिअर्पणम् ६८

१७. दशमहाविद्या नवग्रह प्रयोग ६९

१८. शनि साधना (जप विधान) ७३

१९. शनि ध्यान, आवाहन, स्थापन संकल्प ७५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२०. पुराणोक्त मंत्र ७५
२१. तान्त्रोक्त मंत्र ७६
२२. वेदोक्त मंत्र ७७
२३. दशरथ कृत शनि स्तोत्रम् ७८
२४. जैन साहित्य में शनि मंत्र ७९
२५. शनि कवच ८०
२६. जप सूत्र ८१
२७. सर्व सिद्धिप्रदायक शनि अष्टोतरशतनामस्तोत्रम् ८२
२८. शनि व्रत ८४
२९. शनैश्चर व्रत (राजा विक्रमादित्य) कथा ८६
३०. शनि प्रसन्नता हेतु-दान योग्य वस्तुएँ ९२
३१. शनि अनुकूलता हेतु-औषधि स्नान ९२
३२. शनि और सातमुखी रूद्राक्ष ९४
३३. शनि रत्न-नीलम ९५
३४. शनि की दशा और आचार-विचार ९७
३५. शनि की दशा और हमारा संकल्प ९८

॥ शनि-शांति पर विशेष प्रयोग ॥

३६. ☞ शनि व शनिपत्नी प्रयोग १००
३७. ☞ पशुपतास्त्र प्रयोग १०१
३८. ☞ विशालाक्ष वरद प्रयोग १०३
३९. ☞ नृसिंह (कवच) प्रयोग १०४
४०. ☞ शिवकृत नृसिंह स्तोत्रम् १०७
४१. ☞ विवाह-बाधानिवारण प्रयोग १०८
४२. ☞ वटुक भैरव प्रयोग ११०
४३. ☞ वटुक भैरवकवचम् ११२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४४. भैरव के कुछ चमत्कारीक सिद्ध मंत्र ११३
४५. श्यामसूत्र प्रयोग ११४
४६. अनुभूत कदलीफल प्रयोग ११५
४७. शनि पाताल क्रिया ११६
४८. शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग-१ ११७
४९. शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग-२ ११८
५०. शिव-प्रार्थना प्रयोग (शिव आम्नाय स्तोत्रम्) ११९
५१. महामृत्युंजय जप प्रयोग १२२
५२. श्री शिवाष्टोत्तरशत दिव्यनामामृत स्तोत्रम् १२५
५३. हनुमान प्रयोग १२९
५४. हनुमान चालीसा १३२
५५. शनि चालीसा १३४

॥ अनुष्ठान प्रयोग ॥

५६. शनैश्चर जयन्तियाँ (वर्ष २०११ से २०९० तक) १३६
५७. शनैश्चरी अमावस्याएँ (वर्ष २०११ से २०३६ तक) १३७
५८. शीघ्र सफलता दायक कुछ उपयोगी मंत्र १३८
५९. शनि यज्ञ (संक्षिप्त विधान) १३९
६०. श्री शनि-हनुमान महायज्ञ १४८
महायज्ञ विचार १५१
श्री शिव उत्सव केंन्द द्वारा संचालित सेवायें १५२
श्री शिव उत्सव केंन्द्र की संग्रहणीय पुस्तकों की एक झलक १५८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ प्रसादं कुरु हे सौरे ॥

सूर्यपुत्र! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः ।
देवासुरमनुष्याश्च पशुपक्षिसरीसृपाः ॥
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु व्रजन्ति ते ।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः ॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येते त्वया दृष्ट्याऽवलोकिताः।
देशाश्च नगरग्रामा द्विपाश्चैव तथा द्रुमाः॥
त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे! वरदो भव भास्करे॥

सभी का ग्रसन करने वाले हे सूर्यपुत्र,तुम्हें नमस्कार है । देव,दानव,मनुष्य,पशु,पक्षी,सर्प आदि योनि वाले प्राणी तुम्हारी दृष्टि मात्र से दीन अर्थात् दुःखित हो जाते हैं । ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, सप्तर्षि आदि पर जब भी तुम्हारी दृष्टि पड़ती है तो,वे भी अपने पदों से पतित अर्थात् पद से हीन हो जाते हैं । देश,नगर, गाँव, द्वीप तथा वृक्ष आदि भी तुम्हारी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट हो जाते हैं । अतः हे सूर्यपुत्र हम पर प्रसन्न होकर, हमें अपना शुभ फल प्रदान करो ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि परिचय

पौराणिक कथाओं में, शनि को यमराज और यमुना (नदी) का भाई तथा सूर्य की द्वितीय पत्नी छाया का पुत्र कहा गया है। शनि को पीड़ा, दुःख, भय और क्रोध का प्रतिरुप माना जाता है। यह ग्रह अपने भीतर जातक को राजा से रंक और रंक से राजा बनाने का अद्‌भुत सामर्थ्य रखता है। प्रायः ऐसी मान्यता है कि, शनि की वक्र दृष्टि जिस पर एक बार पड़ जाए,उस पर विपत्तियों का ऐसा क्रम आरंभ हो जाता है कि जातक लगभग अस्तित्वहीन ही हो जाता है।

नवग्रहों में शनि सर्वाधिक तीक्ष्ण और लंबे समय तक प्रभाव देने वाला ग्रह है। जब सृष्टि की रचना हुई तब क्रमशः उत्पत्ति का कार्य ब्रह्मा, पालन का कार्य विष्णु और रक्षा एवं संहार का कार्य भगवान शिव ने संभाला। भगवान शिव ने पतितों की रक्षा और मनुष्यों को उनके संचित कर्मो का दंड देने के लिए शनि को नियुक्त किया। इस प्रकार शनि,भगवान शिव के गणों में सम्मिलित होकर पृथ्वी के न्यायाधीश के पद पर विराजमान हैं।

जीवन में सभी का समय एक-सा नहीं रहता है। लाभ-हानि, यश-अपयश, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती ही रहती हैं। इसका कारण मनुष्य द्वारा किया गया संचित कर्म तो ही होता है, साथ ही ग्रहों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

नवग्रहों में सभी ग्रहों का अपना विशेष स्थान है,परंतु इनमें शनि की भूमिका कुछ विशेष ही रहती है। अनुकूल एवं उच्च का होने पर शनि मनुष्य को उस ऊँचाई पर बैठा देता है, जहाँ अपयश, हानि, शत्रु, दारिद्रय, दुःख, अकाल - मृत्यु और भय उसे छू भी न पाये। जातक मिट्टी में भी हाथ लगाये तो वहाँ से भी सोना निकलने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लगता है । उसका दुर्भाग्य ऐसे मिटने लगता है , जैसे सूर्य के उदय होते ही अंधेरा मिट जाता है।

कालांतर में यही शनि जब प्रतिकूल हुआ है,तब अपने प्रचंड प्रभाव से बड़े-बड़े सम्राटों,ईश्वरीय अवतारों,मनुष्यों और प्रकृति को भी विचलित कर दिया है;तब शनि का नाम सुनते ही बड़े से बड़े धीर-वीर योद्धाओं को भी पसीना छूट गया है।

वस्तुत:शनि के प्रतिकूल प्रभाव होने पर उसकी क्रूरता मनुष्य को आकाश से जमीन पर पटकने में देर नहीं करती है । सर्वप्रथम जातक के हितैषी ही उसकी आलोचना करना आरंभ कर देते हैं,या उसका साथ छोड़ने लग जाते हैं । व्यक्ति को दर-दर की ठोकरें, अकस्मात् खर्च,कर्ज,मानसिक पीड़ा,दैवीय बाधा,अनायास शत्रु, रोग-दोष,आलस्य,व्यापार-व्यवसाय में निरंतर उतार-चढ़ाव,हानि और न जाने क्या-क्या दुर्भाग्य के प्रतीक उसे चारों ओर से घेरने लगते हैं।

प्रत्येक कदम पर समस्या,उलझनों और कष्टों से वह लगभग अधमरा हो जाता है। कभी-कभी तो परिस्थितियाँ ऐसी भी आ जाती हैं कि,भोजन रहकर भी निवाला उसके मुँह तक नहीं पहुँच पाता है। वस्तुत:देखा जाए तो समस्त दिशाएँ उसके लिए परेशानियाँ और उलझने लिए खड़ी रहती हैं। शनि अत्यंत बलवान और निश्चित रूप से अपना प्रभाव दिखाने वाला तमोगुणी ग्रह है। सामान्यत:शनि के विषय में यह कहा है कि, साँप का काटा पानी माँग सकता है पर शनि का मारा पानी भी नहीं माँग सकता है।

प्राय:शनि का नाम लेते ही भयभीत करने वाला एक डरावना दृश्य आँखों के सामने तैर जाता है,.....हो भी क्यों न ? इतिहास पर अगर एक दृष्टि डालें तो, शनि की क्रूर दृष्टि से बड़े-बड़े धुरंधर बाहुबली और अवतारी भी नहीं बच पाये हैं। शनि ने उन्हें उस स्थिति में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पहुँचा दिया, जिसे सुनकर ही लोगों को पसीना छूट जाता है।

जब शनि ने पांडवों पर अपना कुप्रभाव दिखाया तब पांडव द्यूत क्रीड़ा में दुर्योधन के आमंत्रण पर उद्धृत हुए और जुए में अपना सब कुछ हार बैठे। जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें अपमानित होकर अपना राज्य भी गँवाना पड़ा और वनवास एवं अज्ञातवास का दारूण दु:ख भोगना पड़ा।

काल भी जिससे भयभीत होता था, ऐसे सत्य के धनी कर्तव्य-निष्ठ सूर्यवंशी राजा हरिश्चंद्र को शनि की वक्रदृष्टि के कारण राज्य से वंचित होकर दर-दर भटकना पड़ा। उनकी परिस्थिति यहाँ तक आ गयी कि, उन्हें अपने पुत्र और पत्नी को भी बेचना पड़ गया।

राजा हरिश्चंद्र की दारूण स्थिति के विषय में एक लोकोक्ति बड़ी प्रसिद्ध है।

राजा हरिश्चंद्र महल में एक दिन कंचन भरे खजाना।
एक दिन करैं डोम घर नौकरी मरघट बना ठिकाना॥

इसका अर्थ यह है कि, राजा हरिश्चंद्र की एक दिन ऐसी स्थिति थी कि, उनका महल सोने-चाँदी, रत्न आभूषणों से भरा रहता था, उनके ऐश्वर्य का अनुमान ही नहीं लगाया जा सकता था। शनि की दृष्टि पड़ने पर उनकी दशा यह हो गयी कि वे दरिद्रता की चरम सीमा पर पहुँच गये और उन्हें डोम के यहाँ श्मशान की रखवाली और अंतिम-संस्कार शुल्क वसूलने की नौकरी करनी पड़ी एवं श्मशान को ही अपना घर बनाना पड़ा।

इसी प्रकार राजा नल जिनका ऐश्वर्य, गुण, लोकप्रियता, पराक्रम देवताओं को भी लज्जित कर देता था। जब उन पर शनि की कुदृष्टि पड़ी, तब उन्हें भी दर-दर का भिखारी बन कर राज्य, वैभव, परिवार, पत्नी से दूर होकर वनवास में दुर्दिनों को झेलना पड़ा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशरथनंदन श्रीरामचन्द्र पर जब शनि का दुष्प्रभाव पड़ा, तब शनि ने उन्हें राजपद से उठाकर वन में चौदह वर्ष के लिए ला पटका, जहाँ उन्हें पत्नी विछोह,अकारण शत्रु,दुख:दायी यात्रा और अंतत: मान -प्रतिष्ठा, जीवन-मरण का युद्ध देखना पड़ा। इतना ही नहीं जब यही शनि रावण पर भारी पड़ा,तब रावण को अपने कुल समेत सर्वनाश का मुँह देखना पड़ा। उस समय रावण का समस्त ज्ञान,बल, पराक्रम किसी काम न आया। अंतत: रावण के वंश में कोई दीपक जलाने वाला भी नहीं बचा।

शनि की प्रचंण्ड पीड़ा और प्रकोप संबंधित अगर लिखा जाए तो,समूचा एक वृहद ग्रंथ ही निर्मित हो जाएगा। शनि जब अपना दुष्प्रभाव देता है, तब जातक निम्न परिस्थितियों से गुजरने लगता है :-

१.सर्वप्रथम जातक द्वारा जाने -अंजाने गलत निर्णय होने लगता है,जिससे उसके पतन का मार्ग खुल जाता है।

२.शनि पीड़ित जातक के बंधु-बांधव समर्थ होकर भी उसका साथ नहीं देते हैं और मित्र-सहयोगी प्राय: धोखा देने लगते हैं।

३.अकस्मात् शत्रु एवं रोग उत्पन्न होने लगते हैं और साहस, आत्मबल जवाब देने लगता है।

४.आय के स्रोतों में कमी,बाधा और व्यवसाय -व्यापार में हानि होने लगती है।

५.परिवार का मधुर सम्बन्ध बिगड़ने लगता है तथा नित्य कलह का वातावरण निर्मित होने लगता है।

६.स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। स्मृति कमजोर होने लगती है।

७.अकारण क्रोध आने लगता है। जीवन नीरस लगने लगता है और मन उचाट-उदास रहने लगता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

८.संतान का शिक्षा में ध्यान कम लगता है एवं उसके गलत संगत या स्वछंद होने का भय रहता है।

९.नित्य नई छोटी-छोटी परेशानियाँ खड़ी होती हैं और व्यर्थ में समय एवं धन का अपव्यय होता है।

शनि के अन्य दुष्प्रभावों का विस्तृत विवरण शनि के सामान्य शुभ-अशुभ फल नामक शीर्षक से इसी पुस्तक में वर्णित है।

शनि के संबंध में ये बातें अक्षरशः सत्य हैं,परंतु यह शनि के अशुभ भावों का एक पक्ष मात्र है। वस्तुतः शनि से घबराने की आवश्यकता नहीं है,क्योंकि शनि तो जीवन की व्यवस्था है। शनि किसी का न हित करता है और न अहित ही करता है। शनि तो भाग्य का नियंता है,जो हमारे पूर्व (गत-विगत जीवन) कृत कर्मों के फलों को प्रारब्ध के रुप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। शनि जातक को कर्म की पृष्ठभूमि का दर्शन कराता है और उसकी विवेचना कर फल प्रदान करता है। शनि अपने न्यायधीश पद की गरिमा की रक्षा करते हुए सभी को उनके कर्मों का फल देता है। भले ही वह कोई भी हो, आखिर न्याय करने के लिए निष्पक्ष या यह कहें कि, शनि को क्रूर बनना ही पड़ता है। शनि अपनी इसी क्रूरता के कारण भय के पर्याय के रूप में जाना जाता हैं।

शनि का प्रभाव क्षेत्र विस्तृत है। शनि अपना प्रभाव महादशा, अंतंदशा,प्रतिअंतंदशा,सूक्ष्मदशा में तो दिखाता ही है,परंतु ढेय्या एवं साढ़ेसाती में अपना विशेष प्रभाव दिखाता है। शनि क्री पीड़ा जातक को तब अत्यधिक प्रभावित करने लगती है,जब एक ही साथ पति-पत्नी, पिता-पुत्र अथवा भाई-भाई क़ो शनि की ढेय्या या साढ़ेसाती लगती है। वस्तुतः शनि की तीन विशेष दृष्टियों से संभवतः ही कोई परिवार बच पाता है,क्योंकि शनि का प्रभाव एक साथ सदैव पॉच राशियों पर रहता है। इसमें तीन राशियों पर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साढ़ेसाती एवं दो राशियों पर ढैय्या रहती है। चुंकि किसी भी परिवार में एक साथ कई सदस्य रहते हैं, उनमें से किसी भी एक सदस्य पर शनि का दुष्प्रभाव होने से,पूरा परिवार कहीं न कहीं उससे प्रभावित अवश्य होता है। फलस्वरूप परिवार में कलह,परेशानी, रोग, अभाव एवं अशांति का न्यूनाधिक प्रभाव बना ही रहता है इसलिए प्रत्येक परिवार के लिए शनि की स्थिति और अपनी समस्या को ध्यान में रख कर शनि-शॉंति का उपाय अवश्य करना चाहिए। शनि की दशा या साढ़ेसाती का यह अर्थ है कि शनि का विशेष शासन चल रहा है एवं उसी के अनुरूप ही जीवन में घटनाएँ घट रही हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि और हनुमान प्रसंग

एक कथा के अनुसार दक्षिण भारत में राम सेतु के समीप एक बार श्रीहनुमान अपने प्रभु श्रीरामचंद्रजी के ध्यान में मग्न थे। सूर्य अस्त होने के निकट थे। शीतल मंद हवा बह रही थी। ध्यानावस्थित हनुमान का रोम-रोम आनंद से भरा हुआ था, उन्हें बाह्य जगत की रंच मात्र भी स्मृति न थी।

संयोग वश उसी समय शनि भी सागर तट पर टहल रहे थे। टहलते हुये शनि मन ही मन अपनी शक्ति और पराक्रम का स्मरण कर,अहंकार के वशीभूत होकर यह सोच रहे थे-'मेरी एक वक्र दृष्टि मात्र से मनुष्य, देव-दानव कॉप उठते हैं। मुझ से युद्ध तो दूर,मेरे आगमनका समाचार सुनकर ही बड़े-बड़े योद्धा पलायन कर जाते हैं। मैं अपने बल का प्रयोग कहां करुँ ? किससे लड़ूँ ? किसके पास जाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करुँ ? कौन है,जो मुझसे दो-दो हाथ कर सके ?'शनि टहलते हुए यह सोच ही रहे थे कि,उनकी दृष्टि ध्यानमग्न हनुमान पर पडी। उन्होंने अतुलित बलधाम हनुमान से युद्ध करके उन्हें पराजित करने का निश्चय किया। इस प्रकार का संकल्प करते हुये शनि हनुमान के पास पहुँचे। संध्याकाल निकट होने से सूर्यदेव की रक्तिम किरणों में शनि का शरीर और भी काला एवं भयंकर प्रतीत हो रहा था।

हनुमान के निकट पहुँचकर उद्दण्डता के साथ शनि ने ललकारते हुए कहा-'बंदर ! मैं युद्ध के उद्देश्य से तुम्हारे सामने उपस्थित हूँ ,तुम ध्यान का पाखण्ड छोड़कर आओ और मुझसे युद्ध करो।' इस प्रकार तिरस्कार युक्त कटुवाणी को सुनकर मारुतनंदन ने अपने नेत्र खोले और विनम्रता एवं सहजता से कहा-'मान्यवर कृपया अपना परिचय दें और यहाँ पधारने का कारण बताएँ।' शनि ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गर्वोन्नत होकर कहा-'मैं सूर्यपुत्र शनि हूँ ,जिसके नाम मात्र को सुनते ही संसार काँप उठता है। मैंने तुम्हारे बल की बड़ी प्रशंसा सुनी है इसलिए आज मैं तुम्हारी शक्ति का परीक्षण करना चाहता हूँ। देखता हूँ तुममें कितना बल है। अब मैं तुम्हारी राशि पर आ रहा हूँ। सावधान ! महावीर ने अत्यंत शालीनता से कहा-'हे शनिदेव ! मैं वृद्ध हो चला हूँ और शांत चित्त होकर अपने प्रभु श्रीरामचंद्रजी का ध्यान कर रहा हूँ। कृपया आप इसमें व्यवधान न डालें,कहीं अन्यत्र चले जायें। शनि ने अहंकार पूर्वक कहा-'मैं एक बार आगे बढ़कर पीछे लौटना नहीं जानता। मैं जहाँ जाता हूँ,वहाँ अपना वर्चस्व और शासन स्थापित कर ही देता हूँ।'इस प्रकार शनि एवं हनुमान में कई बार उत्तर-प्रत्युत्तर हुआ और बार-बार हनुमान ने शनि से प्रार्थना पूर्वक यही कहा कि -'हे महात्मन् मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझमें युद्ध करने की न इच्छा है और न शक्ति ही है। आप कृपया किसी अन्य वीर- योद्धा को ढूँढ़ कर उससे युद्ध करें। मुझे क्षमा करें और मेरे ध्यान में विघ्न उपस्थित न करें।'

'पीठ दिखाना तुम्हें शोभा नहीं देता है। तुम्हारी कायरतापूर्ण वाणी को सुनकर,मुझे तुम्हारी वीरता पर शंका हो रही है। तुम्हारी दयनीय स्थिति को देखकर मुझे तुम पर दया आ रही है ,फिर भी मैं तुमसे युद्ध किये बिना रहूँगा नहीं।' यह कहते हुये युद्ध को उद्धत शनि ने हनुमान का हाथ पकड़ लिया और अपनी व्यंग युक्त वाणी से उन्हें उकसाने लगे। हनुमान ने शीघ्रता से अपना हाथ झटककर छुड़ा लिया परंतु शनि ने पुनः लपककर हनुमान का हाथ पकड़ लिया और उन्हें खीचते हुए युद्ध के लिए विवश करने लगे।

शनि द्वारा इस प्रकार के उदप्तापूर्ण हठ को देखकर हनुमान ने कहा- 'आप विनम्रता से मानेंगे नहीं।' यह कहते हुए हनुमान ने धीरे से अपनी पूँछ को बढ़ाकर उसमें शनि को लपेटना आरंभ कर दिया,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछ ही क्षणों में हनुमान की सुदृढ़ पूँछ में शनि इस प्रकार जकड़ गये कि उनका हिलना भी कठिन हो गया, उनकी श्वास अवरुद्ध होने लगी। अब शनि का समस्त गर्व,बल,पराक्रम और धैर्य निरुत्तर हो गया। वे असहाय,दीन-हीन और विवश होकर पूँछ के दृढ़पाश के बंधन की वेदना से कराहते हुए छटपटाने लगे।

संध्या समय हो रहा था, अब श्रीराम-सेतु की परिक्रमा का समय हो गया था इसलिए हनुमान अपने आसन से उठे और श्रीराम- सेतु की दौड़ते हुए प्रदक्षिणा करने लगे। दौड़ते हुए हनुमान की पूँछ श्रीराम- सेतु की शिलाओं पर स्पर्श हो रही थी और रह रह कर हनुमान अपनी पूँछ शिलाखण्डों पर पटक भी रहे थे। शिलाखंडों पर पूँछ के पटकने से शनि की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गयी,उनके पूरे शरीर से रक्त बहने लगा। हनुमद् पूँछ से वह स्वयं को अलग करने में सभी प्रकार से असमर्थ हो गये,उनकी सभी शक्तियाँ और प्रयास पूर्णत: निष्फल सिद्ध हो गया था। अब रक्त से लथपथ शनि के दु:ख और पीड़ा की सीमा न रही।

पवनसुत हनुमान तीव्र वेग से श्रीरामसेतु की प्रदक्षिणा में निमग्न थे,उनकी प्रदक्षिणा में शीघ्र कहीं विश्राम दिखायी नहीं दे रहा था। शनि के लिए बलीमुख हनुमान का यह चक्रवाती रुप सर्वथा अप्रत्याशित था। अब शनि को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था,वे अत्यंत भयभीत स्वर में बार-बार याचना करने लगे- 'हे महावीर करुणा-निधान ! दया करें। आप कृपानिधि हैं, अपनी उद्दण्डता का फल मुझे मिल गया है कृपया अब आप क्षमा कर दें और मुझे मुक्त करें।' शनि की इस प्रकार कातर वाणी को सुनकर हनुमान एक स्थान पर खड़े हो गये। श्रीराम-सेतु की शिलाओं पर बार बार घसीटे और पटके जाने के कारण शनि का पूरा शरीर लहूलुहान हो गया था। पीड़ा से उनका अंग-प्रत्यंग दु:ख रहा था। मारुतनंदन ने शनि को संबोधित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करते हुए कहा-'यदि तुम मेरे भक्त को संताप न देने का वचन दो,तो मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूँ और अगर तुमने वचन भंग किया तो मैं तुम्हें दंड दूँगा।''मैं आपके भक्तों को कभी भी संताप नहीं दूँगा। कृपया मुझे बंधन से मुक्त करें'-शनि ने कहा।

शनि के वचन सुनकर अंजनीपुत्र हनुमान ने शनि को बंधन मुक्त कर दिया। उन्होंने हनुमान के चरणों में सादर प्रणाम किया। शनि अपने कृत पर लज्जित थे। उनके शरीर से रक्त बह रहा था और जगह- जगह लगे घावों से मन व्याकुल था,वे अपनी देह पर लगाने के लिए तेल मांगने लगे।

कहते हैं, जो शनिदेव के अंगों पर तेल चढ़ाता है, शनिदेव उस पर प्रसन्न होकर उसे अपना आर्शिवाद प्रदान करते हैं। इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए आज भी शनिदेव को तेल चढ़ाया जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि और कुछ रोचक तथ्य

हिंदी	* शनि.
संस्कृत	* शनैश्चर.
अंग्रेजी	* सैटर्न.
उर्दू	* जोहल.
फारसी	* जुदूल/कोदवान.
वाहन	* गीध, मयूर, अश्व, गधा, वृषभ, महिष, काक, सियार, सिंह, श्वान.
नक्षत्र स्वामी	* पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद.
दूरी	* ८८ करोड ६० लाख मील (सूर्य से).
दूरी	* ८९,००,००,०००मील (पृथ्वी से).
व्यास	* १,४२,६०,००,०००कि.मीटर.
गुरुत्व शक्ति	* ९५ गुनाअधिक.(पृथ्वी से).
चंद्रमा	* शनि के दस चंद्रमा हैं.
ग्रह पथ	* साढ़े उन्तीस वर्ष (परिक्रमा).
दशा अवधि	* साढ़ेसात एवं ढाई वर्ष.
ढैय्या की गति	* (सामान्य) १३५, (वक्री) १०५.
महादशा अवधि	* उन्नीस वर्ष.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुकूल देव	*हनुमान	दिशा	*पश्चिम
गुरु	*भगवान शिव	कृति	*वातश्लेष्मक
पिता	*सूर्य	वर्ण	*कृष्ण
माता	*छाया	तत्च	*वायु
भ्राता	*यम	कारक	*मृत्यु, दारिद्र्य
भगिनी	*यमुना		
गोत्र	*कश्यप	गुण	*तमोगुण
मित्र	*बुध, शुक्र	राशि	*मकर, कुंभ
शत्रु	*रवि, चंद्र, मंगल	दिन	*शनिवार
		माला	*काली हकीक
सम	*गुरु	आसन	*काला कंबल
मंडल	*धनु	जप सं.	*२३,०००.
अधिदेवता	*यम	पुष्प	*कृष्ण
प्रत्यधिदेवता	*प्रजापति	समिध	*शमी
रत्न	*नीलम	धान्य	*उड़द
धातु	*लोहा	फल	*उत्तत्ती
वस्त्र	*कृष्ण	नैवेद्य	*तिल
पद	*स्वर्ण, रजत, ताम्र और लौह		

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के महत्त्वपूर्ण तथ्य

शनि साढ़ेसाती (वृहद कल्याणी)

शनि साढ़ेसाती अर्थात् वृहद कल्याणी, यह एक चरण में दो वर्ष छः महीने अर्थात् अढ़ाई वर्ष की अवधि तक रहती है और इस प्रकार तीन चरण अर्थात् साढ़ेसात् वर्ष तक एक राशि पर अपना प्रभाव दिखाने के कारण इसे साढ़ेसाती कहा जाता है। एक बार साढ़ेसाती का मुँह देखने के बाद किसी भी व्यक्ति को ३० वर्ष उपरांत ही अगली साढ़ेसाती का साक्षात्कार करना पड़ता है। प्रायः कोई भी व्यक्ति जीवन में तीन बार ही साढ़ेसाती देख पाता है । प्रथम साढ़ेसाती बाधाओं, हानियों एवं कष्टों से युक्त, दूसरी साढ़ेसाती पहले की अपेक्षा थोड़ी सुखद एवं तीसरी साढ़ेसाती भीषण एवं चतुर्दिश दुःखो से युक्त रहती है। इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि, शनि अपने उच्च-नीच भावों के द्वारा ही शुभ या अशुभ फल देता है। साढ़ेसाती विचार करते समय शनि कौन से भाव का स्वामी है, किसका भावाधिपति है और किसके लिए योगकारक है, इसका अवश्य ध्यान रखें।

सामान्यतः शनि प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम एवं द्वादश भाव (स्थान) में शुभ फल नहीं देता है। इन भावों के फल विवेचन के समय अन्य योगों तथा स्थितियों पर भी ध्यान अवश्य देना चाहिए।

इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को भी अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि शनि का कुफल तभी प्रभावशाली होगा जब शनि शुभ फल नहीं दे रहा हो एवं योगकारक न हो और उसकी महादशा- अंतर्दशा या सूक्ष्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अंतर्दशा अथवा साढ़ेसाती - ढैय्या जातक पर चल रही हो।

शनि सामान्यतः वृश्चिक ,कर्क एवं सिंह लग्न के लिए अनिष्ट-कारी ही होता है। साढ़ेसाती की स्थिति में किसी अन्य योगकारक या शुभ ग्रह की दशा में ऐसा प्रतीत हो सकता है कि,स्थिति शुभ है,परंतु साढ़ेसाती किसी भी स्थिति में शुभ प्रभावों की वृद्धि नहीं करती है।

शनि ढैय्या (कंटक शनि)

ढैय्या अर्थात् कंटक शनि, इसे छोटी पनोती भी कहते हैं। यह दो वर्ष छः महीने अर्थात् अढ़ाई वर्ष की अवधि तक रहती है,इसलिए इसे ढैय्या कहा जाता है। चन्द्रं लग्न से गोचरीय शनि जब ४-७ एवं १० भाव में स्थित हो तो,कंटक शनि की स्थिति बनती है। इस स्थिति को ज्योतिविदों ने भयंकर अशुभ बताया है।

इन भावों में कमशः रोग-शोक, आवासीय सुख में न्यूनता एवं अस्थिरता,दीर्घ प्रवास व सम्पति का विनाश,व्याधि,प्रभावित आजीविका,कार्य में बाधाएँ,अर्थाभाव,दग्ध चित्तवृति एवं असफलताएँ रहती हैं।

दो बातें सदैव ध्यान में रखें

१. शनि के अशुभ परिणाम की स्थिति में अन्य ग्रहों के फलों में भी कमी होती है।

२.शनि के शुभ परिणाम देने पर अन्य ग्रह भी शुभ फल देने लगते है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साढ़ेसाती चरण

ज्योतिर्विदों ने साढ़ेसाती को तीन चरणों में विभक्त किया है। जिनके फल निम्न प्रकार से शब्दांकित हैं।:-
(साढ़ेसाती अवधि को तीन समान भागों में बाँटने पर ढ़ाई-ढ़ाई वर्ष के तीन समान भाग हो जाते हैं, यही प्रथम, द्वितीय, तृतीय चरण है)

प्रथम चरण-

अनावश्यक भ्रमण होता है। आर्थिक पीड़ा एवं क्षति स्तब्ध कर देती है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होता है। स्वास्थ्य, शारीरिक सुख पर आक्रमण होता है। सिर, नेत्र-विकार की संभावना बढ़ जाती है। पिता, आत्मिय कष्टप्रद स्थिति का अनुभव करते हैं, क्षेत्र (स्थान) परिवर्तन या स्वज्जनों से पृथकता होती है। मानसिक संताप होता है।

द्वितीय चरण-

व्यक्तित्व क्षीण होता है, पारिवारिक सुख एवं आर्थिक क्षेत्र प्रभावित होता है। शारीरिक सामर्थ्य, विकासगति, मानसिक बल अवरुद्ध होता है। सामाजिक पतन, मित्रों का अकाल, शत्रु पीड़ा, असफल प्रयास, अकारण कष्ट एवं खर्च, व्यर्थ प्रवास, रोग एवं मानसिक खिन्नता व कार्यो में अवरोध होता है।

तृतीय चरण -

निष्कंटक सुख दुर्लभ हो जाता है। प्रतिष्ठा पतन की ओर उन्मुख होती है। व्यय एवं श्रम दोनों ही अप्रत्याशित ढंग से आवश्यकता से अधिक ह्रास होता है। यश धूमिल होने लगता है। आय से अधिक व्यय, शारीरिक कष्ट, मानसिक संताप, विपरीत परिस्थितियों की लंबे समय तक उपस्थिति एवं क्षुद्र, निम्नवृति, हल्के स्तर के लोगों द्वारा अपमानित होना पड़ता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साढ़ेसाती/ढैय्या, चरण एवं राशि देखने की संक्षेप विधि

साढ़ेसाती/ढैय्या एवं उसके चरण देखने के लिए सर्वप्रथम अपनी जन्मपत्रिका द्वारा स्वयं की (चंद्र) राशि ज्ञात करें। जन्मपत्रिका के अभाव में अपने जन्मनाम का पहला अक्षर अथवा यह भी संभव न होने पर अपने प्रचलित नाम का पहला अक्षर अर्थात् प्रथमाक्षर द्वारा स्वयं की राशि ज्ञात करें। पाश्चात्य मतानुसार राशि जानने की एक अन्य विधि भी है, जिसमें राशि जानने के लिए नाम, समय या वर्ष की आवश्यकता नहीं होती है। इसमे केवल जन्म दिनांक और महीने की जानकारी की अपेक्षा होती है, उदाहरण के लिए अगर किसी का जन्म २१ मार्च से लेकर २० अप्रेल के मध्य किसी भी तारीख को, किसी भी वर्ष में हुआ हो तो उसकी राशि मेष अर्थात Aries समझनी चाहिए।

साढेसाती, ढैय्या, महादशा या अंतर्दशा का विवेचन करते समय (चंद्र) राशि के फलादेश को ही शत-प्रतिशत सत्य (सटीक) माना गया है।

शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के महत्त्वपूर्ण तथ्य में शब्दांकित शनि साढ़ेसाती के तीनों चरणों में, सभी राशियों के लिए अलग-अलग चरण कष्ट एवं हानि प्रद (घातक) होता है, इसका विवरण इस प्रकार से है। :-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि साढ़ेसाती/ढैय्या और बारह राशियाँ

कष्ट एवं हानि प्रद (घातक) चरण सहित

(वर्ष २००४ से २०८४ तक)

१. मेष राशि (राशि स्वामी-मंगल)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

मेष राशि के नक्षत्र :- अश्विनी, भरणी, कृतिका (प्रथम चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♈ - Aries (Mar 21-Apr 20)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
ढैय्या	०२/११/२०१४	२६/१०/२०१७
साढ़ेसाती	२९/०३/२०२५	३१/०५/२०३२
ढैय्या	१३/०७/२०३४	२७/०८/२०३६
ढैय्या	११/१२/२०४३	०७/१२/२०४६
साढ़ेसाती	१४/०५/२०५४	०७/०३/२०६२
ढैय्या	२४/०८/२०६३	०३/०७/२०६६
ढैय्या	०५/०२/२०७३	११/१०/२०७६

मेष राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का द्वितीय (मध्य) चरण अर्थात् मध्य का ढाई वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२.वृषभ् राशि (राशि स्वामी-शुक्र)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(ई,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो)

वृषभ राशि के नक्षत्र :-

कृतिका (शेष तीन चरण),रोहिणी,मृगशीर्ष (प्रथम दो चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♉ - Taurs (Apr 21-May 20)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
ढैय्या	२६/०१/२०१७	२४/०१/२०२०
साढ़ेसाती	०३/०६/२०२७	१३/०७/२०३४
ढैय्या	२७/०८/२०३६	१३/०७/२०३९
ढैय्या	०७/१२/२०४६	०४/१२/२०४९
साढ़ेसाती	०७/०४/२०५७	०९/०५/२०६४
ढैय्या	१३/१०/२०६५	३०/०८/२०६८
ढैय्या	१६/०१/२०७६	१५/०१/२०७९

वृषभ् राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रथम चरण अर्थात् आरंभ का ढाई वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३.मिथुन राशि (राशि स्वामी-बुध)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(का,की,कू,घ,ङ:,छ,के,को,ह)

मिथुन राशि के नक्षत्र :-

मृगशिरा (शेष दो चरण),आर्दा,पुनर्वसु (प्रथम तीन चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार Ⅱ - Gemini (May 21-Jun 21)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
ढैय्या	१०/०९/२००९	०४/०८/२०१२
ढैय्या	२४/०१/२०२०	१७/०१/२०२३
साढ़ेसाती	०८/०८/२०२९	२७/०८/२०३६
ढैय्या	२२/१०/२०३८	२६/०९/२०४१
ढैय्या	०६/०३/२०४९	२५/०२/२०५२
साढ़ेसाती	२७/०५/२०५९	०३/०७/२०६६
ढैय्या	३०/०८/२०६८	०४/११/२०७०
ढैय्या	१५/०१/२०७९	०७/०१/२०८२

मिथुन राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का तृतीय चरण अर्थात् अंत का ढाई वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४.कर्क राशि (राशि स्वामी- चंद्र)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)

कर्क राशि के नक्षत्र :-

पुनर्वसु (शेष चौथा चरण),पुष्य,आश्लेषा ।

पाश्चात्य मतानुसार ♋ - Cancer (June 22-July 23)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
ढैय्या	१५/११/२०११	०३/११/२०१४
ढैय्या	२९/०४/२०२२	२९/०३/२०२५
साढ़ेसाती	३१/०५/२०३२	१३/०७/२०३९
ढैय्या	२८/०१/२०४१	३०/०८/२०४४
ढैय्या	२५/०२/२०५२	०५/०२/२०५५
साढ़ेसाती	११/०६/२०६१	३०/०८/२०६८
ढैय्या	०४/११/२०७०	२३/१०/२०७३
ढैय्या	१२/०४/२०८१	२०/०३/२०८४

कर्क राशि वालों को शनि साढ़ेसाती का द्वितीय व तृतीय चरण अर्थात् मध्य एवं अंत का पाँच वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५. सिंह राशि (राशि स्वामी-सुर्य)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सिंह राशि के नक्षत्र :-

मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी (प्रथम चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♌ - Leo (July 24-Aug 23)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
साढ़ेसाती	०६/०९/२००४	०४/०८/२०१२
ढैय्या	०२/११/२०१४	२६/१०/२०१७
ढैय्या	२९/०३/२०२५	२३/०२/२०२८
साढ़ेसाती	१३/०७/२०३४	२६/०९/२०४१
ढैय्या	११/१२/२०४३	०७/१२/२०४६
ढैय्या	१४/०५/२०५४	०७/०४/२०५७
साढ़ेसाती	२४/०८/२०६३	०४/११/२०७०
ढैय्या	०५/०२/२०७३	११/१०/२०७६

सिंह राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रथम व द्वितीय चरण अर्थात् आरंभ एवं मध्य का पाँच वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६.कन्या राशि (राशि स्वामी-बुध)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(टो,पा,पी,पू ,ष,ण,ठ,पे,पो)

कन्या राशि के नक्षत्र :-

उत्तरा फाल्गुनी (शेष तीन चरण),हस्त,चित्रा (प्रथम् दो चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♍ - Virgo (Aug 24-Sept 23)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
साढ़ेसाती	०१/११/२००६	०२/११/२०१४
ढैय्या	२६/०१/२०१७	२४/०१/२०२०
ढैय्या	०३/०६/२०२७	१७/०४/२०३०
साढ़ेसाती	२७/०८/२०३६	३०/०८/२०४४
ढैय्या	०७/१२/२०४६	०४/१२/२०४९
ढैय्या	०७/०४/२०५७	२७/०५/२०५९
साढ़ेसाती	१३/१०/२०६५	२३/१०/२०७३
ढैय्या	१६/०१/२०७६	१५/०१/२०७९

कन्या राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रथम चरण अर्थात् आरंभ का ढाई वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७.तुला राशि ♎ (राशि स्वामी-शुक्र)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

तुला राशि के नक्षत्र :-

चित्रा (शेष दो चरण), स्वाति, विशाखा (प्रथम तीन चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♎ - Libra (Sept 24-Oct 22)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
साढ़ेसाती	१०/०९/२००९	२६/१०/२०१७
ढैय्या	२४/०१/२०२०	१७/०१/२०२३
ढैय्या	०८/०८/२०२९	३१/०५/२०३२
साढ़ेसाती	२२/१०/२०३८	०७/१२/२०४६
ढैय्या	०६/०३/२०४९	२५/०२/२०५२
ढैय्या	२७/०५/२०५९	०७/०३/२०६२
साढ़ेसाती	३०/०८/२०६८	११/१०/२०७६
ढैय्या	१५/०१/२०७९	०७/०१/२०८२

तुला राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का तृतीय चरण अर्थात् अंत का ढाई वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

८. वृश्चिक राशि (राशिस्वामी-मंगल)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिक राशि के नक्षत्र :-

विशाखा (शेष चौथा चरण), अनुराधा, ज्येष्ठा ।

पाश्चात्य मतानुसार ♏ - Scorpio (Oct 23-Nov 22)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
साढ़ेसाती	१५/११/२०११	२४/०१/२०२०
ढैय्या	२९/०४/२०२२	२९/०३/२०२५
ढैय्या	३१/०५/२०३२	१३/०७/२०३४
साढ़ेसाती	२८/०१/२०४१	०४/१२/२०४९
ढैय्या	२५/०२/२०५२	०५/०२/२०५५
ढैय्या	११/०७/२०६१	०९/०५/२०६४
साढ़ेसाती	०४/११/२०७०	१५/०१/२०७९
ढैय्या	१२/०४/२०८१	२०/०३/२०८४

वृश्चिक राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का द्वितीय व तृतीय चरण अर्थात् मध्य एवं अंतका पाँच वर्ष कष्ट एवं हानिप्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९. धनु राशि (राशि स्वामी-गुरु)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

धनु राशि के नक्षत्र :-

मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, (प्रथम चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♐ Saggittarius (Nov 23-Dec22)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
साढ़ेसाती	०२/११/२०१४	१७/०१/२०२३
ढैय्या	२९/०३/२०२५	२३/०२/२०२८
ढैय्या	१३/०७/२०३४	२७/०८/२०३६
साढ़ेसाती	११/१२/२०४३	२५/०२/२०५२
ढैय्या	१४/०५/२०५४	०७/०४/२०५७
ढैय्या	२४/०८/२०६३	०३/०७/२०६६
साढ़ेसाती	०५/०२/२०७३	०७/०१/२०८२

धनु राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रथम व द्वितीय चरण अर्थात् आरंभ एवं मध्य का पाँच वर्ष कष्ट एवं हानि प्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१०. मकर राशि (राशि स्वामी-शनि)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(भो, जा, जी, खो, गा, गी, खी, खू, खे)

मकर राशि के नक्षत्र :-

उत्तराषाढा (शेष तीन चरण), श्रवण, धनिष्ठा (प्रथम् दो चरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♑- Capricorn (Dec 23-Jan 20)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
साढ़ेसाती	२६/०१/२०१७	२९/०३/२०२५
ढैय्या	०३/०६/२०२७	१७/०४/२०३०
ढैय्या	२७/०८/२०३६	१३/०७/२०३९
साढ़ेसाती	०७/१२/२०४६	०५/०२/२०५५
ढैय्या	०७/०४/२०५७	२७/०५/२०५९
ढैय्या	१३/१०/२०६५	३०/०८/२०६८
साढ़ेसाती	१६/०१/२०७६	२०/०३/२०८४

मकर राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का सभी चरण आंशिक शुभ होता है। परंतु कुंडली का अशुभ शनि अपनी दशा में कष्ट एवं हानि प्रदान कर सकता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

११.कुंभ राशि (राशि स्वामी-शनि)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(गू,गे,गो,सा,सी,सू ,से,सो,दा)

कुंभ राशि के नक्षत्र :-

धनिष्ठा (शेष दोचरण),शतभिषा,पूर्वा भाद्रपद (प्रथम तीनचरण)।

पाश्चात्य मतानुसार ♒ - Aquarius (Jan 21-Feb 19)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
ढैय्या	१०/०९/२००९	०४/०८/२०१२
साढ़ेसाती	२४/०१/२०२०	२३/०२/२०२८
ढैय्या	०८/०८/२०२९	३१/०५/२०३२
ढैय्या	२२/१०/२०३८	२६/०९/२०४१
साढ़ेसाती	०६/०३/२०४९	०७/०४/२०५७
ढैय्या	२७/०५/२०५९	०७/०३/२०६२
ढैय्या	३०/०८/२०६८	०४/११/२०७०
साढ़ेसाती	१५/०१/२०७९	२०/०३/२०८४

कुंभ राशि वालों को शनि साढ़ेसाती के सभी चरण आंशिक शुभ होते हैं,परंतु अशुभ शनि अपनी दशा में हानि प्रदान कर सकता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१२. मीन राशि (राशि स्वामी-गुरु)

इस राशि वाले जातकों के नाम का प्रथमाक्षर।

(दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, चा, ची)

मीन राशि के नक्षत्र :-

पूर्वा भाद्रपद (शेष एक चरण), उत्तरा भाद्रपद, रेवती।

पाश्चात्य मतानुसार ♓ - Pisces (Feb 20-Mar 20)

अवधि	प्रवेश	निकास/निर्गम
ढैय्या	१५/११/२०११	०२/११/२०१४
साढ़ेसाती	२९/०४/२०२२	१७/०४/२०३०
ढैय्या	३१/०५/२०३२	१३/०७/२०३४
ढैय्या	२८/०१/२०४१	३०/०८/२०४४
साढ़ेसाती	२५/०२/२०५२	२७/०५/२०५९
ढैय्या	११/०७/२०६१	०९/०५/२०६४
ढैय्या	०४/११/२०७०	२३/१०/२०७३
साढ़ेसाती	१२/०४/२०८१	२०/०३/२०८४

मीन राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का तृतीय चरण अर्थात् अंत का ढाई वर्ष कष्ट एवं हानि प्रद होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल संपूर्णतया अनिष्टकारी ही हो,ऐसा आवश्यक नहीं है। यदि किसी जातक की कुंडली में शनि उच्चस्थ,मित्रक्षेत्री,स्वक्षेत्री अथवा वर्गोत्तम स्थिति में पडा हो तो,जातक पर शनि का दुष्प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता है।

शनि चरण

(पाद अर्थात् पाया फल)

जन्म के समय जब शनि द्वादश भाव में १.६.११ स्थान में होता है, तब स्वर्णपाद,जब २.५.९ में होता है तब रजत पाद, जब ३. ७.१० में होता है तब ताम्र पाद और जब ४.८.१२ होता है तब लौहपाद कहलाता है।

लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वसौख्यं च कांचने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत् ॥

शनि चरण जब **लौह पाद** में होता है तब धन संपत्ति का क्षय (विनाश),कंचन अर्थात **स्वर्ण पाद** में होने पर सभी प्रकार के सुख प्रदान करता है। **ताम्र पाद** में होने पर साधारण शुभ प्रभाव देता है और रजत अर्थात **चाँदी के पाद** में होने पर सौभाग्य का उदय होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि महादशा-अंतर्दशा

शनि महादशा में नवग्रहों की अन्तर्दशा की अवधि

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

संक्षिप्त फल विवेचन

शनि/शनि:-

ईर्ष्या द्वेषादि अग्नि से आक्रांत,धन की क्षति,अपयश और कलंकित जीवन के क्षण होते हैं।

शनि/बुध:-

भाग्योदय होता है,आचार-विचार उत्तम होता है। सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

शनि /केतु:-

परिवार से मतभेद,न्यून निद्रा,निम्न स्तरीय लोगों से वाद-विवाद, कलह होता है।

शनि/शुक्र:-

मित्रों की अभिवृद्धि, दुःख का नाश, यश-मान- धन एवं विवाह के योग बनते हैं।

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि/सूर्य:-

त्रिविध ताप अर्थात् शारीरिक- मानसिक- भौतिक कष्ट का आगमन एवं असह्य पीड़ा होती है।

शनि/चंद्र-

आत्मीय जनों के सुख में कमी,माता/पत्नी को पुन:-पुन: मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा होती है।

शनि/मंगल:-

भयास्पद स्थिति,यश-मान-प्रतिष्ठा का प्रश्न बार- बार उपस्थित होता है,परिवार-स्वस्थान से दूर होने का स्थिति निर्मित होती है।

शनि/राहु:-

शारीरिक रोग,गतिशील कार्यक्रमों में बाधा,शत्रु एवं राज्य पक्ष से संताप,धनागम प्रभावित होता है।

शनि/गुरू:-

सम्मान-प्रतिष्ठा,गृहस्थसुख,धन आगमन,चल-अचल संपत्ति, बंधु-बांधव का सुख प्राप्त होता है।

दशा-अंतर्दशा का फल कथन जातक की कुंडली में स्थित ग्रहों के पारस्परिक संबंधों के आधार पर ही करना शास्त्रोचित कहा गया है अन्यथा फल कथन में त्रुटि की संभावना प्रबल हो सकती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि के सामान्य शुभ-अशुभ फल

शनि निसर्गतः विचित्र परिणामों एवं गतिविधियों से परिपूर्ण स्वभावतः पाप ग्रह है। शनि की दशा,योग और उसके फल की अत्यंत सावधानी से विवेचना करने की आवश्यकता होती है। अनुकूल होने पर यह सौभाग्य से अलंकृत करता है तो,प्रतिकूल होने पर दुःखों से मण्डित भी कर देता है।

शुभ फल-

शनि चरराशिस्थ ,स्वराशिस्थ ,मित्रराशिस्थ ,दशारंभ में बली,स्वनवांशस्थ,मित्रनवांशस्थ या उच्चनवांशगत होकर शुभग्रहों से दृष्ट होने पर अपनी दशा में उत्तमोत्तम फल प्रदान करता है।

यथा:- शत्रुसंहारक,सदाचारी,धनवान,मृदुभाषी,सौभाग्यवान,उत्तम मित्र,योगी, सज्जन-स्नेही,सुस्थिर-चित्त,श्रेष्ठ सम्पत्ति, यश,भोग, न्यायालय, सेना/ पुलिस/ सुरक्षा अधिकारी, प्रशासनिक सेवा,क्षेत्र विशेष में उच्च/सर्वोच्च पद,चिकित्सा मर्मज्ञ,ठेकेदारी, शिल्पकला, धार्मिक नेतृत्व,संपादन,लेखन,राजसम्मान,राजनेता,परम्परा प्रिय, संस्थान संस्थापक,शिक्षा-संस्थान प्रमुख,तेजस्वी, सुखी व्यवस्थित जीवन चर्या, रस अलंकार पूर्ण वाणी,जनप्रियता,प्रवास से सम्मान, बहुकलाकोविद् एवं स्त्री-संतान,माता-पिता,बंधु-बांधव आदि का सुख देता है।

अशुभ फल-

सामान्यतः जन्मांग में जब शनि प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम ,सप्तम, अष्टम, नवम,दशम एवं द्वादश स्थान में हो अथवा शत्रु या नीच (मेष) राशि गत हो या सूर्य,मंगल,राहू,केतु आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो,तब शुभ फल नहीं देता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि प्रसंग ॥

जीवन में जब भी निम्न प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो, तब शनि के कुफल पर विचार अवश्य करें।

यथा:-निरंतर आधि-व्याधि,दैन्य,धन-हानि,नैराश्य,मिथ्या(झूठा) आरोप,छोटे से छोटे कार्यों में भी अधिक समय का लगना, पराश्रयी (अन्य के अधीन रहना),वाद-विवाद में फँसना, आपत्ति-विपत्ति आना,बंधु-बांधवों द्वारा विरोध,तिरस्कार,स्वजनों का असयोग, असमय पुत्र/भार्या (पत्नी)/माता/पिता से कलह/ मतभेद या इनके स्वास्थ्य अथवा(विशेष परिस्थितियों में) जीवन की हानि,वैवाहिक विलंब,द्विविवाह,जीवनसाथी का अनैतिक संबंध, पैतृक संपत्ति या स्व-स्थान त्यागने की परिस्थिति,अकस्मात घोर शत्रुओं का उदय, कुसंगी-दुश्चरित्र लोगों के मध्य निवास,लंबे समय तक (दीर्घ) रोगी रहना,स्नायु पीड़ा, नेत्रों/पैरों या हड्डियों के रोग, भगंदर/ पीलिया / दंतरोग आदि,जोड़ो के दर्द,मंदबुद्धि,चित्तभ्रम,धन का नाश,संतति विलंब,संततिकष्ट,कुसंतति,पति/पत्नी से दुर्भाग्य,रूग्ण पति/पत्नी, कलंक,कारावास,दु:खी दाम्पत्य,अल्पायु में मातृ- पितृ विछोह या पिता की निर्धनता,शत्रुवत् मित्र,मित्रों द्वारा सर्वस्व हरण,शिक्षा/ व्यवसाय में अवरोध,शिक्षा में कमजोर,अल्पशिक्षा, घोर आलस्य, प्रमाद,आत्महत्या-रक्तपात आदि क्रूर विचार,भूत-प्रेत-पिशाच आदि के प्रकोप,पत्थर या पेड़ से आघात,अपघात, संघर्ष भरा जीवन, परदेश वास,घनघोर श्रम,षडयंत्र,कष्टप्रद धनार्जन या घोर धन का व्यय, पारिवारिक -सामाजिक कलह, कलंक का भय एवं अपमान जनक परिस्थितियाँ लगभग जब साथ-साथ चलें। जीवन में ऐसी घटनाओं की स्थिति में शनि के प्रकोप को दुर्लक्ष नहीं करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्र के स्वरूप एवं अंग

शास्त्रों में वर्णित सभी मंत्र-साधनायें, उपासनायें, मनुष्य द्वारा कृत पापों के परिमार्जन तथा आध्यात्मिक एवं भौतिक आनंद की प्राप्ति कराने वाले श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली माध्यम हैं।

मंत्र दैवशक्ति के सबीज एवं सजीव प्रतीक हैं, जिसे आर्य संस्कृति के आदि में ऋषियों ने अपनी तपश्या के चरम बिंदु पर जाकर, समाधि की स्थिति में प्राप्त किया। प्रत्येक मंत्र में संबंधित देवता के प्रभाव प्रकट करने की रहस्यमयी क्षमता होती है।

मूल रूप से मंत्र अपने भीतर देवता अथवा अभीष्ट के संपूर्ण उद्गम एवं नियंत्रित शक्ति को समाहित किये हुए रहता है। मंत्रो का सतत् अभ्यास तथा जप वह सब कुछ प्रदान करने में सक्षम हैं, जो साधक का अभीष्ट होता है, इसमें मंत्रप्रदाता गुरू, देवता और मंत्र के प्रति अटूट श्रद्धा एवं समर्पण की आवश्यकता होती है। श्वेताश्वतर उपनिषद्- ६ में इस संबंध में कहा गया है:-

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्था: प्रकाशन्ते महात्मन:॥

अर्थात जो देवता के प्रति अपनी पूर्ण पराभक्ति रखता है और वैसी ही पराभक्ति अपने गुरू के प्रति रखता है, उसके समक्ष सभी शास्त्र स्वयं प्रकट हो जाते हैं ऐसे साधक को अपनी साधना में सिद्धि अवश्य मिलती है, ऐसा महात्माओं का बारम्बार वचन है।

पुस्तकों में प्रकाशित विधि-विधान एवं मंत्रों के प्रकाशन में कहीं-कहीं त्रुटियाँ भी रहती हैं तथा मंत्र के शुद्ध उच्चारण व देश-काल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परिस्थिति अनुसार उसके प्रयोग का पूर्ण अनुभव सिद्ध ज्ञान मात्र पुस्तकों द्वारा ले पाना असंभव है। ऐसे में लाभ के स्थान पर हानि भी संभव है, इसलिए शास्त्रों में मंत्र एवं विधि को गुरू के माध्यम से ही प्राप्त करने का विधान है। भगवान शिव का वचन भी है, यथा:-

पुस्तके लिखिता विद्या नैव सिद्धिप्रदा नृणाम्।
गुरूं विनापि शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकारः कथंचन॥

अर्थात् मात्र पुस्तक में लिखी विद्या से सिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती है, इसलिए शास्त्रों में बिना गुरू के उपदेश के किसी प्रकार के कार्य का अधिकार नहीं है।

मंत्र के अंगः- मंत्र के मुख्यतः पाँच अंग होते हैं:-

१.॥ ऋषि ॥

मंत्र का प्रथम अंग है, ऋषि। वह दृष्टा, जिसने अपनी तपस्या के द्वारा सर्वप्रथम अनुभूति प्राप्त की और देवता को जाना एवं जगत् को मंत्र प्रदान किया।

२.॥ छंद ॥

मंत्र का दूसरा अंग है, छंद। जिसके द्वारा मंत्र के उच्चारण में विधि के अनुशासन का ज्ञान होता है।

३.॥ देवता ॥

मंत्र का तीसरा अंग है, देवता। जो मंत्र का अधिष्ठाता होता है।

४.॥ बीज ॥

मंत्र का चौथा अंग है, बीज। जो मंत्र को विशेष गति प्रदान करता है।

५ .॥ शक्ति ॥

मंत्र का पाँचवां अंग है, शक्ति। जो मंत्र के अक्षरों को क्षमता देती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह सभी अंग मिलकर साधक अथवा उपासक को अभीष्ट देवता की कृपा प्राप्ति में सहायक होते हैं,इसलिए किसी भी मंत्र साधना के पूर्व संकल्प लेते समय उसके साथ विनियोग में उपरोक्त पॉचों संदर्भों का उल्लेख कर भूमि पर जल छोड़ा जाता है।

इसके पश्चात् साधक अपने शरीर में सर्वप्रथम विनियोग में वर्णित ऋष्यादि का न्यास करता है। जिससे मंत्र का प्रथम दृष्टा वह ऋषि, छंद, देवता, बीज,एवं शक्ति के साथ साधक के शरीर में स्थापित होकर उसे भी अपनी अनुभूति के रहस्य का साक्षी बना दे और वह साधक देवता का बोध कर सके।

न्यास के क्रम में फिर करन्यास एवं हृदयन्यास किया जाता है,जिससे देवता के स्वरूप का प्रतीक बीज मंत्र कर(हाथ)की पॉचों अंगुलियों एवं हथेली के ऊपर तथा नीचे का भाग (जिसे करतल-करपृष्ठ नाम से संबोधित किया जाता है) में न्यास (स्थापित) किया जाता है। इसी तरह षडंगन्यास में शरीर के पॉच भागों क्रमश:१.हृदय २.सिर ३.शिखा ४.कवच (दोनों भुजा) ५.नेत्रों में भी देवता के बीज मंत्र का न्यास किया जाता है तथा दाहिने हाथ को साधक द्वारा अपने सिर के ऊपर,दायें से बायें ओर गोल घुमाकर हृदय के सामने बायें हाथ की हथेली पर अस्त्राय फट् का उच्चारण करते हुए ताली बजायी जाती है। न्यास की इस प्रक्रिया से साधक का शरीर चैतन्य हो जाता है और साधक अभीष्ट (जो उसका इष्ट होता है) देवता की अनुभूति करने व प्रसाद (फल) पाने में पूर्णत: सक्षम हो जाता है।

उपरोक्त क्रम के बाद साध्य देवता का ध्यान कर उसके मंत्र का जप किया जाता है,जो साधक के मानसिक,शारीरिक और दैवीय दोषों का शुद्धिकरण कर उसे देवता का साक्षात्कार कराकर उसकी मनोकामना को पूर्ण करता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्र सिद्धि के इस क्रम में संभव हो,तो मंत्र जप की दशांश संख्या का तर्पण,तर्पण की दशांश संख्या का मार्जन एवं मार्जन की दशांश संख्या का यज्ञ अवश्य करना चाहिए। अगर ऐसा संभव न हो पाये तब, क्रमश: प्रत्येक (तर्पन,मार्जन एवं यज्ञ) की निर्धारित संख्या का जप कर लेना चाहिए।

वस्तुत: ऋषि, देवता एवं मंत्र के विषय में उपरोक्त तथ्य जितने जटिल लग रहे हैं, उतने हैं नहीं। अगर योग्य गुरु से इन क्रियाओं को एक बार समझ लिया जाए तो, मंत्र साधना संबंधि सारी क्रियायें सहज और सरल प्रतीत होने लगेंगी एवं साधक को सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी। मंत्र सिद्धि का एक मूल मंत्र सदैव स्मृति में रखें, वह यह कि मंत्र जप जब भी करें,पूरी आस्था,श्रद्धा एवं शुद्धि से करें ,भले ही आप थोड़ा ही जप करें।

मन-चेतना एवं प्राणों की एकाग्रता ही मंत्र जप का मुख्य आधार है,इसे अपने लक्ष्य पर लगाकर जप करने वाला साधक कभी असफल नहीं हो सकता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वन्दे गुरोर्मण्डलम्

श्रीनाथादिगुरुत्रयम् गणपतिम् पीठत्रयम् भैरवम्,
सिद्धौघम् वटुकत्रयम् पदयुगम् दूतीक्रमम् मण्डलम्।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्ठिनवकम् वीरावलीपंचकम्,
श्री मन्मालिनि मन्त्रराजसहितम् वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

॥ श्री शिव उत्सव प्रार्थना ॥

ईशान-स्सर्व-विद्यानामीश्वर-स्सर्वभूतानां ब्रह्माऽधिपति ब्रह्मणो-धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्वमाम् । भवोद्भवाय नमः॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कल-विकरणाय नमो बल-विकरणाय नमो बलाय नमो बल-प्रमथनाय नमः स्सर्व-भूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव-बन्धनान्- मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ मंत्रानुष्ठान प्रयोग ॥

गुप्तभाषणम्, अनुष्ठान क्रम विधानम्

पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आचमन

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।
हाथ धो लें - ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आसन पूजन

ॐ ह्रीं कमलासनाय नमः ॥

संकल्प

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टविंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त अन्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथा अयनेसूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे यथा नक्षत्रे यथा राशिस्थिते सूर्ये यथा यथा राशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्नमुहूर्त योग करणान्विता एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ श्रुति-स्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्तिकामः गोत्रः(स्वयं का)अहम् (स्वयं का नाम)स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुस्स्थानगत- ग्रहजन्य-सकलारिष्ट निवृत्यर्थम्-उत्पन्नउत्पत्स्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये दीर्घायुष्य सतत-आरोग्यतावाप्तये धन-धान्य समृद्ध्यर्थम् च कायिक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपुरुषार्थ-प्राप्त्यर्थम् च धन -धान्य-पुत्र- पौत्रादि -अनवच्छिन्न -सत्संगति-लाभार्थम्-शत्रु-पराजय-बहुकीर्त्यादि-अनेकानेकअभ्युदय-फल प्राप्त्यर्थम् अमुक (मंत्र जप/पूजन/साधना/अनुष्ठान्/दान/ कर्म) करिष्ये।

॥ अथ नवग्रह ॥

मंत्र सहित जपसंख्या, दान योग्य वस्तुएँ, अनुकूल रत्न, दान का समय तथा गोत्र

॥ श्री सूर्य मंत्र ॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। जप संख्या : ७,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : गेहुँ, गुड़, लाल वस्त्र, पुष्प, ताँबा, स्वर्ण, मणिक्य, लाल चन्दन, लाल गाय, केसर, घृत।

पके अन्न में -गुड़ के साथ भात। अनुकूल रत्न : माणिक्य ।

दान का समय : सूर्योदय । गोत्र: कश्यप।

ॐ ॐ ॐ

॥ श्री चन्द्र मंत्र ॥

ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सःचन्द्रमसे नमः। जप संख्या : ११,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : वंश पात्र, चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, बैल, चाँदी शंख, घी का घड़ा, चंदन, श्वेत पुष्प।

पके अन्न में -दूध से बनी खीर। अनुकूल रत्न : मोती।

दान का समय : संध्याकाल। गोत्र: आत्रेय।

ॐ ॐ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री मंगल मंत्र ॥

ॐ क्राँ क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:। जप संख्या : १०,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : गेहूँ, मसूर, लाल वस्त्र, गुड़, स्वर्ण, ताँबा, मूँगा, लाल रंग का बैल, रक्त कनेर, केसर, कस्तूरी।

पके अन्न में - तिल्ली से बनी समग्री। अनुकूल रत्न : मूँगा।

दान का समय : सूर्योदय से दो घड़ी तक। गोत्र: भरद्वाज।

ॐ ॐ ॐ

॥ श्री बुध मंत्र ॥

ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:। जप संख्या : ४,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : पन्ना, हरा वस्त्र, कपूर, हरी मूँग, स्वर्ण, कांस्य पात्र, हरे फूल, शस्त्र, मिश्री, हाथी दाँत, घृत, दासी, कस्तूरी।

पके अन्न में - दूध से बना साठी चावल। अनुकूल रत्न : पन्ना।

दान का समय : सूर्योदय से पाँच घड़ी तक। गोत्र: आत्रेय।

ॐ ॐ ॐ

॥ श्री बृहस्पति मंत्र ॥

ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं स: बृहस्पतये नम:। जप संख्या : १९,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : घोड़ा, चना, घृत, केसर, कांसे का पात्र, पीत वस्त्र, पीत धान्य, नमक, पीत पुष्प, स्वर्ण, हल्दी, पुष्पराज, शक्कर।

पके अन्न में - दही-भात। अनुकूल रत्न : पुष्पराज।

दान का समय : संध्याकाल। गोत्र: आंगिरस।

ॐ ॐ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

|| श्री शुक्र मंत्र ||

ॐ द्रॉं द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:। जप संख्या : १६,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : चित्राम्बर, धेनु, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन, शंख, दही, मिश्री, श्वेत अश्व, हीरा, चाँदी, स्वर्ण, चावल, घृत, सुगंध। पके अन्न में -घृत-भात। अनुकूल रत्न : हीरा। दान का समय : सूर्योदय। गोत्र: भार्गव।

ॐ ॐ ॐ

|| श्री शनि मंत्र ||

ॐ प्रॉं प्रीं प्रौं स: शनैश्चराय नम:। जप संख्या :२३,०००.

दान योग्य वस्तुएँ : माष (उड़द), तिल, तेल, काले जूते, स्वर्ण, काला कंबल, काला पुष्प, कुलथी, लोहा, भैंस, काली गाय, काले वस्त्र, इंद्रनील मणि, कस्तूरी। पके अन्न में -तिल चूर्ण और भात। अनुकूल रत्न : नीलम। दान का समय : संध्याकाल। गोत्र: कश्यप।

ॐ ॐ ॐ

|| श्री राहु मंत्र ||

ॐ भ्रॉं भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:। जप संख्या : १८,०००.

दान योग्य वस्तुएँ :काला घोड़ा, गोमेद, भैंस, बकरी, उड़द, सरसों, काली गाय, काला पुष्प, स्वर्ण, सीसा, नील, काला कम्बल, तिल, तेल, लोहा, अभ्रक, गेहूँ, नीला वस्त्र। पके अन्न में -उड़द-भात खिचड़ी। अनुकूल रत्न: गोमेद या लाजवर्त। दान का समय : रात्रि बारह बजे। गोत्र: पैठीनसी।

ॐ ॐ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री केतु मंत्र ॥

ॐ स्रॉं स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। जप संख्या : १७,०००.

दान योग्य वस्तुऍं : काले तिल, काला कंबल, मेढ़ा (भेड़ा), सरसो तेल, स्वर्ण, छुरी, वैदूर्य, कस्तूरी, शस्त्र, काला वस्त्र, बकरी, लोहे का पात्र, काला पात्र, काला पुष्प। पके अन्न में -उड़द-भात खिचड़ी।

अनुकूल रत्न : गोमेद या लहसुनिया। **दान का समय :** मध्य रात्रि।

गोत्र : जैमिनीय।

ॐ ॐ ॐ

॥ राशियों के मंत्र ॥

१.मेष राशि -ॐ ऐं क्लीं सौः
२.वृषभ राशि -ॐ ऐं क्लीं श्रीं
३.मिथुन राशि -ॐ क्लीं ऐं सौः
४.कर्क राशि-ॐह्रीं क्लीं श्रीं
५.सिंह राशि -ॐ ह्रीं श्रीं सौः
६.कन्या राशि -ॐ क्लीं ऐं सौः
७.तुला राशि - ॐ ऐं क्लीं श्रीं
८.वश्चिक राशि -ॐ ऐं क्लीं सौः
९.धनु राशि - ॐ ह्रीं क्लीं सौः
१०.मकर राशि-ॐऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः
११.कुंभ राशि -ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं
१२.मीन राशि -ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं

सभी प्राणियों के सुख-दुःख ग्रहों के अधीन हैं इसलिए शांति, धन-सम्पत्ति, कुल-वृद्धि, सौभाग्य, आयु, ऐश्वर्य की कामना करने वालों को शुभ कर्म करते हुए भक्ति एवं संकल्पपूर्वक ग्रहों का पूजन, जप, यज्ञ, दान आदि अवश्य करना चाहिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ दानं के संदर्भ में ॥

श्रेष्ठदानों में विद्या का दान उत्तम कहा गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि विद्या को जितना भी बाँटा जाये वह निरंतर बढ़ते ही रहती है और परोक्ष-अपरोक्ष रुप से उसका श्रेय उसे जाता है, जिसके द्वारा उसका प्रसार होता है। श्रेष्ठ दान सदैव दानकर्ता को यश और पुण्य प्रदान करता है इसलिए ग्रहों या अन्य देवों के प्रसन्नार्थ दान करते समय उनसे संबंधित पुस्तक अनिवार्य रुप दान में देनी चाहिए। जिसमें उनके प्रसन्नार्थ कथा, स्तोत्र व मंत्र हो, जिससे उनकी महिमा का विस्तार हो और उनकी कृपा प्राप्त हो। इस संदर्भ को ध्यान में रखते हुए केन्द्र ने एक अनुठी योजना आरम्भ की है। इस योजना से अब तक हजारों लोग लाभान्वित हुए हैं। आप भी इस योजना का लाभ ले सकते हैं। पूजन और अनुष्ठान में विशेषकर शनि, राहु-केतू से संबंधित वस्तुओं को जहाँ लोग दान स्वरुप लेने में कतराते हैं, वहीं पुस्तकों को ससम्मान स्वीकार कर लेते हैं। पुस्तक कई लोगों द्वारा पढ़ी जाती है एवं वर्षों तक सुरक्षित रहती है। इस योजना के अंतर्गत आप केन्द्र से अपने सामर्थ्यानुसार पुस्तकें मँगाकर अपने मित्र, रिश्तेदार अथवा किसी भी योग्य व्यक्ति या संस्थान, मंदिर, पुस्तकालय में वितरित (दान) कर सकते हैं। पुस्तकों पर आपका नाम ॥श्री शिव उत्सव केन्द्र ॥ द्वारा निःशुल्क रुप से छाप कर दिया जायेगा।★

★ २१ या उससे अधिक पुस्तकें लेने पर ही यह सुविधा उपलब्ध है। पुस्तकें मँगाने का खर्च अतिरिक्त होगा। २५ या उससे अधिक पुस्तकें मँगाने पर भेजने का खर्च केन्द्र द्वारा किया जाएगा।

पुस्तकों से प्राप्त धनराशि का उपयोग ॥ श्री शिव उत्सव केन्द्र ॥ के विकास एवं लोककल्यारार्थ कार्यों में किया जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

|| नवग्रह स्तोत्रम् ||

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१ सूर्य मंत्र ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ चंद्र मंत्र ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभ् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥३ मंगल मंत्र ॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ बुध मंत्र ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुकांचनसंन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ गुरु मंत्र ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ शुक्र मंत्र ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ शनि मंत्र ॥
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ राहु मंत्र ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ केतु मंत्र ॥

फलश्रुति- इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥ नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्। ऐश्वर्यम् अतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ नवग्रहादि गायत्री मंत्र ॥

सूर्य • चंद्र • मंगल • बुध • गुरू • शुक (कवि:) • शनि • राहु • केतु

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्य: प्रचोदयात् ॥
ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नो चन्द्र: प्रचोदयात् ॥
ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौम: प्रचोदयात् ॥
ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुध: प्रचोदयात् ॥
ॐ अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरू: प्रचोदयात् ॥
ॐभृगुवंशजातस्य विद्मह श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नो कवि:प्रचोदयात्।
ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शौरि: प्रचोदयात् ॥
ॐ नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहु: प्रचोदयात् ॥
ॐ अश्वध्वजाय विद्महे शुलहस्ताय धीमहि तन्नो केतु: प्रचोदयात् ॥

॥ अथ नवग्रह बलिअर्पणम् प्रयोग ॥

नवग्रह बलिदान् के लिए केले के पत्ते पर सिन्दुर,काजल, तला हुआ साबूत पापड़,दही,साबूत काली उड़द,दीपक और दक्षिणा रखकर नवग्रहों से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें।

बलि प्रार्थना मंत्र:- ग्रहेभ्य: सांगेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य: एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि, भो ग्रहा: ! दिशं रक्षस्वम् बलिं भक्षस्वम अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्तार: शान्ति कर्तार: तुष्टि कर्तार: पुष्टि कर्तार: वरदा भवत ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ दशमहाविद्या नवग्रह प्रयोग ॥

यह एक अद्भुत् और परम उच्च-स्तर का साधनात्मक मंत्र प्रयोग है। जो लोग केवल ग्रहों की शांति तक ही मंत्रों या अन्य प्रयोंगों को करने की अभिलाषा रखते हैं,उनके लिए यह साधनात्मक मंत्र प्रयोग नहीं है। यह मंत्र प्रयोग उनके लिए है,जो सामान्य मनुष्य से ऊपर उठकर कुछ विशेष करना चाहते हैं। विपरीत परिस्थितियों में जीवन से घबराकर समय काटने की अपेक्षा,अपने साधनात्मक पक्ष को दृढ़ बनाकर परिरिथतियों को अपने अनुकूल करने की अभिलाषा रखते हैं। इस प्रयोग की विशेषता ही यही है कि यह साधक के जीवन के सबसे विपरीत (कमजोर) पक्ष को सर्वप्रथम साधक के समक्ष प्रस्तुत करती है,उसका साधक को अनुभव कराती है और जब साधक अपनी वास्तविकता का साक्षात्कार कर लेता है तब,यह उसे उसके जीवन के सौभाग्य के शिखर की ओर गतिमान करती है। यह महाविद्या साधना साधक के लिए मन एवं परिस्थिति से ऊपर उठकर लौकिक और पारलौकिक जगत् के रहस्यों को जानने एवं काल के भाल पर अपनी उपस्थिति लिखने की अद्वितीय विधि है। साधक महाविद्या साधना का चुनाव निम्न प्रकार से कर सकता है:-

१.जिस ग्रह का प्रभाव उसके जीवन में सबसे अधिक हो।
२.जिस ग्रह का कुप्रभाव उसके जीवन में सबसे अधिक हो।
३.जिस ग्रह की महादशा चल रही हो।

महाविद्या साधना में श्रद्धा,साहस और पवित्रता की विशेष आवश्यकता होती है इसलिए उचित यह है कि,योग्य साधक या समर्थ गुरु जो महाविद्या साधना सिद्ध हो, उनके श्रीमुख से आप अपनी पात्रता (योग्यता) के आधार पर महाविद्या मंत्र पाप्त करें तो अति उत्तम होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाविद्या मंत्र जप के पूर्व शुद्धि व दिग्बंधन एवं क्रमशः गणपति, भैरव मंत्र का जप अवश्य करें।

॥ दशमहाविद्या प्राकाट्य ॥

महाभागवत में कथा आती है,दक्ष प्रजापति ने यज्ञ में सारे देवताओं को आमंत्रित किया पर शिव को आमंत्रित नहीं किया। देवी सती अपने पिता के इस यज्ञ में चलने के लिए शिव को मनाने लगीं लेकिन बिना बुलाये दक्ष के यज्ञ में जाने से शिव ने साफ मना कर दिया। इस पर देवी सती अकेले ही पितृगृह जाने की अनुमति माँगने लगीं तब भी शिव ने मना कर दिया। अनुमति न मिलने पर देवी क्रोध से भर गयीं,उनका शरीर दहकने लगा। वह क्रोधाग्नि में मुण्डमाला धारणकर भयानक गर्जना करते हुए विकट हुंकार भरनें लगीं। देवी का वह भयानक रुप देखकर महादेव शिव विचलित हो गये और भागने लगे। शिव को इस प्रकार इधर-उधर भागते देख उन्हें नियंत्रण में करने के लिए देवी सती के शरीर से दशमहाविद्या क्रमशः देवी काली, तारा, षोडशीत्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी,छिन्नमस्ता,त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला आदि महाविद्याओं का प्राकाट्य हुआ। महा विद्या ओं ने सभी दिशाओं से शिव को अपने नियंत्रण में ले लिया,अंततः शिव ने अनमने भाव से सती को दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जाने की स्वीकृति दे दी और फलस्वरुप दक्ष यज्ञ का विध्वंस हो गया तथा बावन शक्तिपीठों का निर्माण हुआ।

(दशमहाविद्या संबंधित अन्य जानकारी के लिए श्री शिव उत्सव केंद्र प्रकाशन की 'रुद्राक्ष प्रसंग' एवं 'सौभाग्य चिंतामणि' पुस्तक देखें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ पौराणिक फल ॥

१.काली- प्रबल शत्रु, कमजोर आत्मबल,रोग,शोक,आलस्य और भय के वातावरण पर विजय के लिए.

२.तारा-वाक्शक्ति,ज्ञान,आर्थिक उन्नति,व्यापार वृद्धि,शक्ति एवं आकस्मिक धन प्राप्ति एवं शत्रुनाश के लिए.

३.षोडशीत्रिपुरसुंदरी- जीवन में माधुर्य,भोग एवं मोक्ष,गृहस्थ सुख, पौरुष प्राप्ति,कार्य की अनुकूलता एवं आर्थिक सफलता के लिए.

४.भुवनेश्वरी-कुंडलिनी जागरण,सम्मोहन,जीवन में आनद,ऐश्वर्य, सम्पन्नता और आरोग्य के लिए.

५.छिन्नमस्ता-विद्याप्राप्ति,तंत्रबाधा निवारण,अभिचारिकशांति प्रयोग शत्रु नाश,भीषण परिस्थिति एवं मुकदमें में विजय प्राप्ति के लिए.

६.त्रिपुरभैरवी-आत्मबल,ऐश्वर्य प्राप्ति,भय,रोग,भूत-प्रेत से मुक्ति एवं अदृश्य शक्तियों की सिद्धि के लिए.

७.धूमावती- भीषण तांत्रिक प्रयोग, अकाल मृत्यु,मृत्युतुल्य कष्ट, उच्चाटन,दारुण दुःख,से मुक्ति एवं संतान व धनरक्षा के लिए.

८.बगलामुखी-रुके हुए धन की प्राप्ति, शत्रुवत मित्र बाधा निवारण, स्तंभन,सुरक्षा,मुकदमें में विजय एवं शत्रुओं पर विजय के लिए.

९.मातंगी-मनोनुकूलपति/पत्नी,आनंद,माधुर्य,धन-धान्य,साहित्य, प्रेम,कला,संगीत,ज्ञान,बुद्धि,वाक्सिद्धि, वाहन, सामाजिक प्रतिष्ठा, भोग विलास,शीघ्र विवाह के लिए.

१०.कमला- धन प्राप्ति, व्यापार वृद्धि, मान-सम्मान, भोग विलास, भौतिक सुख की प्राप्ति एवं दरिद्रता निवारण के लिए.

प्रत्येक मंत्र साधना के लिए मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त यंत्र एवं माला आवश्यक है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ दशमहाविद्या ध्यान ॥

त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं त्वं दुर्गा
छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमा मातंगिनी त्वं त्वमसि च बगला मंगलादिस्तवाख्या
क्षन्तव्यो मे अपराधः प्रकटिवदने कामरुपे कराले ॥

दशमहाविद्या मंत्र नवग्रह क्रमांनुसार

१.लग्न-त्रिपुरभैरवी - ॥ हसैं हसकरीं हसैं ॥

२.सूर्य-मातंगी - ॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ॥

३.चंद्र-भुवनेश्वरी - ॥ ह्रीं ॥

४.मंगल-बगलामुखी - ॥ ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

५.बुध-षोडशीत्रिपुरसुंदरी - ॥ ह्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ॥

६.गुरु-तारा - ॥ ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ॥

७. शुक्र-कमला-॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौः जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

८. शनि-काली - ॥ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा ॥

९.राहु-छिन्नमस्ता .श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीयै हुं हुं फट् स्वाहा ॥

१०.केतु-धूमावती - ॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

उपरोक्त मंत्रों का कम से कम सवा लाख जप श्रेष्ठ फल प्रदान करता है।

('सौभाग्य चिंतामणि' पुस्तक से)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि साधना (जप विधान) ॥

शनि साधना के लिए सर्वप्रथम मंत्र जप हेतु - रुद्राक्ष,शमी या काली हकीक की माला, शनि चैतन्य यंत्र एवं चित्र जो कि शुद्ध,प्राण-प्रतिष्ठित होने चाहिए। आसन हेतु-काले रंग का कपड़ा एवं कंबल। पूजन सामग्रीं में काली उड़द,तिल,तिल या कडु-तेल,नीले या काले पुष्प,विल्वपत्र,काले रंग में रंगा अक्षत,कुंकुम,काले तिल और गुड़ के प्रसाद,दीपक और लोहे आदि के पात्र इत्यादि की पहले से ही व्यवस्था कर लें।

शनि साधना विधान :-उपरोक्त सामग्रियों की व्यवस्था कर पीपल वृक्ष के नीचे या समीप अथवा सुविधानुसार किसी मंदिर में या स्वच्छ स्थान में पश्चिम दिशा की ओर मुख कर काले वस्त्र या ऊनी आसन बिछा कर सुखासन में बैठ जायें। अपने सामने काले वस्त्र का आसन बिछाकर उसपर शनि यंत्र व चित्र स्थापित करें,शनि मंत्र से स्वयं एवं आसन पर जल छिड़कते हुए पवित्रता की भावना करें। लौह पात्र में सरसों तेल का दीपक जलायें बिल्वपत्र,काले पुष्प और काले अक्षत से शनि आवाहन करें,पूजन सामग्रींयों से शनि पूजन करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः शने इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

अब संकल्प करें-

ॐ विष्णुः विष्णुःविष्णुः तत्सदद्येहेत्यादि मम जन्म- वर्ष-मासादिषु योअनिष्टफलकारकः शनिग्रहस्तस्य अनुकूल्यार्थ सकलाधिव्याधि-झटितिप्रशमनपूर्वकं दीर्घाआयुष्यबल-पुष्टिनैरुज्यादि-सकलइष्ट-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिद्ध्यर्थं शनिग्रहप्रीतये शनिग्रहस्य त्रयोविंशतिसहस्रसंख्याकं जपं करिष्ये, तदंगत्वेन आदौ गणपतिजपं करिष्ये।

तत्पश्चात् भगवान् गणपति के ॥ॐ गं गणपतये नमः॥ मंत्र की तीन माला जप करें, इसके बाद पुराणोक्त शनि मंत्र, वेदोक्त शनि मंत्र विधान अथवा, तान्त्रोक्त शनि मंत्र विधान (जो आगे के पृष्ठों में दिया गया है।) में से किन्हीं एक का २३ हजार जप अगले सात दिनों में पूर्ण करें। आठवें दिन अर्थात् अगले शनिवार को दशांश जप कर उसके दशांश भाग का हवन करें। पुर्ण लाभ के लिए सवा लक्ष मंत्र का जप २१ दिनों में श्रेष्ठ फल दायक कहा गया है। यथा शक्ति शनि अनुकूलता हेतु दान योग्य वस्तुएँ सुपात्र व्यक्ति को दान में दें।

शनि निमित्त दान अवश्य करें, जब - ✪ जब रोग लंबे समय तक बना रहे। ✪ हाथ-पैरों या शरीर के किसी अन्य जोड़ वाले हिस्से में वात की पीड़ा हो। ✪ वैवाहिक विलंब हो रहा हो या अनुकूल परिस्थिती नहीं बन पा रही हो। ✪ प्रेम प्रसंग मधुर होने पर भी विवाह का संयोग नहीं बन पा रहा हो। ✪ आलस्य/संकोच के कारण सुअवसर का लाभ नहीं ले पा रहे हों। ✪ मुकदमें या फौजदारी में विवाद लबा खिंच रहा हो। ✪ घर-परिवार या समाज से बार-बार विरक्ति का भाव जाग रहा हो। (यह दान माता-पिता या पत्नी करे) ✪ स्वगृह, परिवार के बीच जाने का योग न बन रहा हो।

CC0: In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि ध्यान, आवाहन, स्थापन संकल्प ॥

पुस्तक में जहाँ शनि से संबंधित ध्यान, आवाहन, स्थापन का उल्लेख हो परंतु ध्यान, आवाहन, स्थापन का मंत्र नहीं लिखा गया हो, वहाँ इस मंत्र को पूजन के पुर्व प्रयोग करना चाहिए, अगर कहीं शनि मंत्र के साथ ध्यानादि श्लोक लिखा गया हो तो भी, ध्यानादि श्लोक पढ़ने के पुर्व भी इसका प्रयोग कर सकते हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः, शनैश्चर इहागच्छ, शनैश्चरं, नीलवर्णं, नीलगंधं, नीलपुष्पं, नीलमाल्यांबरधरं, नीलच्छत्रं, ध्वज-रथ-पताकादिशोभितं, दिव्यरथं समारुढं, मेरुं, प्रदक्षिणीकुर्वाणं, चापासनस्थं, प्रत्यंमुखं, गृध्ररथं, चतुर्भुजं, शूलायुधं, सौराष्ट्र-देशाधिपतिं, काश्यपसगोत्रं, मकर- कुंभ- राश्याधिपतिं, किरीटिनं सुखासीनं पत्नीपरिवारसहितं, ग्रहमंडले प्रविष्टं, अस्मिन् अधिकरणे, सूर्यग्रहस्य पश्चिमदिग्भागे, धनुराकार-मण्डले, शनैश्चरग्रहं अधिदेवताप्रजापतिं, प्रत्यधिदेवता-धर्मराजं अधिदेवताप्रत्याधिदेवतासहितं शनैश्चरं ध्यायामि आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

आगे मंत्र शब्दांकित हैं।

॥ पुराणोक्त शनि मंत्र ॥

ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥ <u>अथवा</u>

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ तन्त्रोक्त शनि मंत्र विधान ॥

विनियोग-

ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः,गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास-

ॐ ब्रह्मर्षये नमः-शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः- मुखे।
ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः- हृदये। ॐआपःशक्तये नमः-पादयोः।

करन्यास-

ॐ शं-अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ शं-तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ शं- मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शं-अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ शं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ शं -करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास-

ॐ शं -हृदयाय नमः। ॐ शं-शिरसे स्वाहा।
ॐ शं - शिखायै वषट्। ॐ शं-कवचाय हुम्।
ॐ शं -नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ शं - अस्त्राय फट्।

ध्यान -

नीलांजनाभं मिहिरस्य पुत्रं ग्रहेश्वरं पाश भुजंगपाणिम्।
सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पापितोऽहम्॥

मंत्र-॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः॥

अथवा मंत्र-॥ ॐ प्रॉं प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः॥

अथवा मंत्र-॥ ॐ ऐ ह्रीं स्रीं शनैश्चराय नमः॥

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ वेदोक्त शनि मंत्र विधान ॥

विनियोग - ॐ शं नो देवीरिति मंत्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्री छन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

पदन्यास-

ॐ शं नः -शिरसि । ॐ देवीः-ललाटे । ॐ अभिष्टये-मुखे । ॐआपो-कण्ठे । ॐ भवन्तु-हृदये । ॐ पीतये-नाभौ । ॐ शं-कट्याम् । ॐयोः-ऊर्वोः।ॐ अभि-जान्वोः । ॐ स्रवन्तु-गुल्फयोः। ॐनः-पादयोः।

करन्यास-

ॐ शं न्नो देवीः-अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ अभिष्टये- तर्जनीभ्यां नमः। ॐआपो भवन्तु-मध्यमाभ्यां नमः।ॐपीतये-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ शय्योरभि-कनिष्ठिकाभ्यांनमः।ॐस्रवन्तुनः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास-

ॐ शं नो देवीः-हृदयाय नमः।ॐअभिष्टये-शिरसे स्वाहा ।
ॐआपो भवन्तु-शिखायै वषट् । ॐ पीतये-कवचाय हुम् ।
ॐ शंय्योरभि -नेत्रत्रयाय वौषट् ।ॐ स्रवन्तु नः-अस्त्राय फट् ।

ध्यान

नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी ॥

मंत्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।
शंय्योरभि स्रवन्तु नः ॥

अथवा

मंत्र-॥ ॐ खाँ खीं खौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः भुवः भूः
ॐ सः खौं खीं खाँ ॐ शनैश्चराय नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ दशरथ कृत शनि स्तोत्र ॥

ॐ ॐ ॐ

विनियोग: ॐअस्य श्रीशनैश्चर स्तोत्र मंत्रस्य दशरथ ऋषि:। त्रिष्टुप छन्द:। श्रीशनैश्चरो देवता। श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रु:कृष्ण:शनि:पिंगल मन्दसौरि:।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडा तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
सुरासुरा: किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
नरा नरेन्द्रा पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंग भृंगा।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशा: पुरपत्तनानि।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्न दानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
प्रयागकूले यमुनातटे वा सरस्वती पुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
अन्यप्रदेशात् स्वगृहं प्रविष्टसतदीवारे स नर: सुखी स्यात्।
गृहाद् गतो यो न पुन: प्रयाति तस्मै नम: श्रीरविनंदनाय॥
स्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजु: साममूर्तिस्तस्मै नम: श्रीरविनंदनााय॥
शन्यष्टकं य: प्रयत: प्रभाते नित्यं सपुत्रै: पशुवान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्त: प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्राऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चर कृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति ॥
॥ इति श्री दशरथ कृत शनि स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ जैन साहित्य में शनि मंत्र ॥

प्राचीन जैन साहित्य के ग्रंथों में शनि पीड़ा निवारण हेतु मंत्रों की तीन विधियाँ मिलती हैं-

शनि से संबंधित णमोकार महामंत्र का जप।
शनि से संबंधित तीर्थंकरों का जप।
शनि से संबंधित मंत्र पाठ।

हम यहाँ तीनों प्रकार के मंत्रों को शब्दांकित कर रहे हैं। शनिवार के दिन एकाग्रचित्त होकर,काले रंग के सूती कपड़े या ऊन के आसन पर बैठ कर काले ऊन या हकीक की माला से ७,११ या २१ रात्रियों में ३२ हजार मंत्र जप संपन्न कर लें। जप के साथ-साथ अंतर्बाह्य की शुद्धि भी परम आवश्यक है।

मंत्र इस प्रकार हैं :-

णमोकार मंत्र- ॐ ह्रीं णमों लोए सव्व साहूणं।

मुनिसुव्रत तीर्थंकर मंत्र- ॐ ह्रीं अर्ह श्रीं नमो श्रीमुनिसुव्रतस्वामिने मम शनि ग्रह शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

शनि ग्रह मंत्र

ॐ ध्मां ध्मीं ध्मौं ध्मः शनिदेवो रविसुतः।
तुष्टमानः ममानंदं मम शत्रुहरो भव ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि कवचम् ॥

कवच का अर्थ है सुरक्षा का आवरण। शनि कवच का नित्यपाठ शनिग्रह जनितपीडा को शांत कर दोषों का शमन करता है।

विनियोग

अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रस्य । कश्यप ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः। शनैश्चरो देवता । शीं शक्तिः । शूं कीलकम् । शनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

नीलांबरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः॥

ब्रह्मोवाच

शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥
कवचं देवतावासं वज्रपंजरसंज्ञकम् ।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥
शिरः शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु कर्णौ पातु यमानुजः॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकंठश्च मे कंठं भुजौ पातु महाभुजः॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षं पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मंदः पातु कटिं तथा ।
उरु यमांतकः पातु यमो जानुयुग्मं तथा ॥
पादौ मंदगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः।
अंगोपांगानि सर्वाणि रक्षेत् सूर्यसुतश्च मे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कवचं शनिदेवस्य यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥
व्ययजन्म द्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीडा जायते क्वचित् ॥
इत्येतत् कवचं दिव्यंसौरेर्यन्निर्मितं पुरा
द्वादशाष्टम - जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदा ।
जन्म लग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाश्यते प्रभुः॥

॥ जप सूत्र ॥

श्रद्धा, विश्वास, नियमित जप, धैर्य एवं सदाचरण किसी भी प्रयोग की अनिवार्य आवश्यकताएँ होती हैं। कोई भी व्यक्ति इन्हें अपनाते हुए यदि अनुष्ठान करता है, तो सफलता उसे अवश्य वरण करती है।

एक ही माला से सभी मंत्रों का जप न करें। मंत्र जपते समय जम्हाई लेना, सोना, बात करना, पैर हिलाना वर्जित है।

दिनचर्या एक समान रखें और निश्चित समय तथा निश्चित स्थान पर ही जप करें। मंत्रों का उच्चारण शुद्ध हो एवं जप की गति समान हो।

मंत्र जप में मत्र के अर्थ और देवता का ध्यान निरंतर करते रहें। जप के बाद जप देवता को समर्पित करें। पूजा, जपकाल में अखण्ड दीपक अवश्य जलायें एवं जप के बाद माला को मस्तक व चक्षुओं पर स्पर्श कराकर स्वच्छ एवं सुरक्षित स्थान पर कपड़े में लपेट कर रखें माला को खुंटी या कहीं अन्य स्थान पर टाँग कर नहीं रखना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्व सिद्धिप्रदायक

॥ शनि अष्टोतरशतनामस्तोत्रम् ॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः॥ ❀ ॐ शं शान्ताय नमः॥ ❀ ॐ शं सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः॥ ❀ ॐ शं शरण्याय नमः॥ ❀ ॐ शं वरेण्याय नमः ❀ ॐ शं सर्वेशाय नमः॥ ❀ ॐशं सौम्याय नमः॥ ❀ ॐ शं सुरवन्द्याय नमः॥ ❀ ॐ शं सुरलोकविहारिणे नमः॥ ❀ ॐ शं सुखासनोपविष्टाय नमः॥ ❀ ॐ शं सुन्दराय नमः॥ ❀ ॐ शं घनाय नमः॥ ❀ ॐ शं घ रुपाय नमः॥ ❀ ॐ शं घनाभरण धारिणे नमः॥ ❀ ॐ शं घनासारविलेपाय नमः॥ ❀ॐ शं खद्योताय नमः॥ ❀ ॐ शं मन्दाय नमः॥ ❀ ॐ शं मन्द-चेष्टाय नमः॥ ❀ ॐ शं महनीयगुणात्मने नमः॥ ❀ ॐ शं मर्त्य पावनपादाय नमः॥ ❀ ॐ शं महेशाय नमः॥ ❀ ॐ शं छायापुत्राय नमः॥ ❀ ॐ शं शर्वाय नमः॥ ❀ ॐ शं शततूणीर-धारिणे नमः॥ ❀ ॐ शं चरस्थिरस्वभावाय नमः॥ ❀ ॐ शं चंचलाय नमः॥ ❀ ॐ शं नीलवर्णाय नमः॥ ❀ ॐ शं नित्याय नमः॥ ❀ ॐ शं नीलांजननिभाय नमः॥ ❀ ॐ शं नीलांबर-विभूषाय नमः॥ ❀ ॐ शं निश्चलाय नमः॥ ❀ ॐ शं वेद्याय नमः॥ ❀ ॐ शं विधिरुपाय नमः॥ ❀ ॐ शं विरोधाधार भूमये नमः॥ ❀ ॐ शं वेदास्पदस्वभावाय नमः॥ ❀ ॐ शं वज्रदेहाय नमः॥ ❀ ॐ शं वैराग्यदाय नमः॥ ❀ ॐ शं वीराय नमः॥ ❀ ॐ शं वीतरोग-भयाय नमः॥ ❀ ॐ शं विपत्परम्परेशाय नमः॥ ❀ ॐ शं विश्ववन्द्याय नमः॥ ❀ ॐ शं गृध्रवाहाय नमः॥ ❀ ॐ शं गूढाय नमः॥ ❀ ॐ शं कूर्मांगाय नमः॥ ❀ ॐ शं कुरूपिणे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः॥ ❁ ॐ शं कुत्सिताय नमः॥ ❁ ॐ शं गुणाढ्याय नमः॥ ❁ ॐ शं गोचराय नमः॥ ❁ ॐ शं अविद्यामूलनाशाय नमः॥ ❁ ॐ शं विद्याऽविद्यास्वरुपिणे नमः॥ ❁ ॐ शं आयुष्य-कारणाय नमः॥ ❁ ॐ शं आपदुद्धर्त्रे नमः॥ ❁ ॐ शं विष्णु-भक्ताय नमः॥ ❁ ॐ शं वशिने नमः॥ ❁ ॐ शं विविधागमवेदिने नमः॥ ❁ ॐ शं विधिस्तुत्याय नमः॥ ❁ ॐ शं वन्द्याय नमः॥ ❁ ॐ शं विरुपाक्षाय नमः॥ ❁ ॐ शं वरिष्ठाय नमः॥ ❁ ॐ शं गरिष्ठाय नमः॥ ❁ ॐ शं वज्रांकुश धराय नमः॥ ❁ ॐ शं वरदाभयहस्ताय नमः॥ ❁ ॐ शं वामनाय नमः॥ ❁ ॐ शं ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः॥ ❁ ॐ शं श्रेष्ठाय नमः॥ ❁ ॐ शं मितभाषणे नमः॥ ❁ ॐ शं अष्टौघनाशकार्याय नमः॥ ❁ ॐ शं पुष्टिदाय नमः॥ ❁ ॐ शं स्तुत्याय नमः॥ ❁ ॐ शं स्तोत्रगम्याय नमः॥ ❁ ॐ शं भक्तिवश्याय नमः॥ ❁ ॐ शं भानवे नमः॥ ❁ ॐ शं भानुपुत्राय नमः॥ ❁ ॐ शं भव्याय नमः॥ ❁ ॐ शं धनदाय नमः ॥ ❁ ॐ शं धनुर्मंडल संस्थाय नमः॥ ❁ ॐ शं पावनाय नमः ॥ ❁ ॐ शं धनुष्मते नमः॥ ❁ ॐ शं तनुप्रकाशदेहाय नमः॥ ❁ ॐ शं तामसाय नमः॥ ❁ ॐ शं अशेषजनवन्द्याय नमः॥ ❁ ॐ शं विशेषफलदायिने नमः॥ ❁ ॐ शं वशीकृतजनेशाय नमः॥ ❁ ॐ शं पशूनांपतये नमः॥ ❁ ॐ शं खेचराय नमः॥ ❁ ॐ शं खगेशाय नमः॥ ❁ ॐ शं घननीलाम्बराय नमः॥ ❁ ॐ शं काठिन्यमानसाय नमः॥ ❁ ॐ शं आर्यगणस्तुत्याय नमः॥ ❁ ॐ शं नीलछत्राय नमः॥ ❁ ॐ शं नित्याय नमः॥ ❁ ॐ शं निर्गुणाय नमः॥ ❁ ॐ शं गुणात्मने नमः॥ ❁ ॐ शं निरामयाय नमः॥ ❁ ॐ शं निन्द्याय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः॥ ❁ ॐ शं वन्दनीयाय नमः॥ ❁ ॐ शं धीराय नमः॥ ❁ ॐ शं दिव्यदेहाय नमः॥ ❁ ॐ शं दीनार्तिहरणाय नमः॥ ❁ ॐ शं दैन्यनाशकराय नमः॥ ❁ ॐ शं आर्यजनगण्याय नमः॥ ❁ ॐ शं क्रूराय नमः॥ ❁ ॐ शं क्रूरचेष्टाय नमः॥ ❁ ॐ शं कामक्रोधकराय नमः॥ ❁ ॐ शं कलत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमः॥ ❁ ॐ शं परिपोषितभक्ताय नमः॥ ❁ ॐ शं परभीतिहराय नमः॥ ❁ ॐ शं भक्तमनोभीष्ट फलदाय नमः॥

इत्थं शनैश्चरस्येदं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
प्रत्यहं प्रजपन्मर्त्यो दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥
॥ शन्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ शनि-व्रत ॥

शनिवार को ब्रह्म मुहुर्त में उठकर दैनिक कर्म से निवृत्त होकर स्नान के उपरांत स्वच्छ वस्त्र धारण कर शनि व्रत रखें। शनि के दस नाम

यथाः- कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्राऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥

अथवा शनि के किसी भी मंत्र या स्तोत्र का पाठ करते हुए सूर्योदय के पूर्व पीपल के वृक्ष को प्रणाम करें और उसके चारों ओर ७ बार कच्चा सूत लपेट कर ७ परिक्रमा करें। तदनंतर संध्याकाल में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिंदूर, लाल पुष्प,काला तिल एवं तिल या सरसो के तेल से दीपक प्रज्वलित कर पीपल की पूजा करें। शनि एवं हनुमानजी का दर्शन कर तिलक लगायें और प्रणाम करें। इस दिन भोजन में नमक का प्रयोग न करें, अगर ऐसा संभव न हो तो एक समय भोजन में नमक का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार ७ शनिवार व्रत रखें। राजा विक्रमादित्य की कथा पढ़ें अथवा श्रवण करें। काले घोड़े की नाल या नाव की सतह की कील से बना हुआ छल्ला पहनें तो उत्तम होगा।

विशेष लाभ के लिए व्रत में निम्न विधान भी जोड़ लिया जाए तो अतिउत्तम होगा, परंतु यह अनिवार्य नहीं है।

॥ श्री शनि यंत्र ॥

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

उपरोक्त शनि यंत्र को लोहे के पत्र या नीले कागज पर काली स्याही से योग्य ब्राह्मण से लिखवा लें या स्वयं लिखकर प्राणश्चेतना मंत्रों से अभिमंत्रित कर पूजा स्थान में रखें और ७ शनिवारों में शनि के २३ हजार मंत्रों का जप संपन्न कर लें। जप के पूर्ण होने पर यथा दशांश संख्या में तर्पण, मार्जन करें अथवा इतनी संख्या में ही अतिरिक्त जप संपन्न करें।

व्रत एवं जप की समाप्ति पर यज्ञ पूर्णाहुति कर यंत्र धारण कर लें और उड़द की खिचड़ी एवं दही तथा तिल का प्रसाद ग्रहण करें। ऐसे अवसर पर यथाशक्ति दान करना एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शास्त्रोचित कहा गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनैश्चर व्रत कथा ॥

(राजा विक्रमादित्य कथा)

कथा इस प्रकार है,एक बार परस्पर नौ ग्रहों में इस बात पर विवाद हो गया कि हममें सबसे बड़ा कौन है। अंततः इस बात का निर्णय होता न देखकर सबने देवराज इन्द्र के पास जाने का निर्णय लिया। इन्द्र नौ ग्रहों की बात सुनकर घबरा गये और स्वयं को न्याय करने में असमर्थ बताते हुए कहा कि,"इस समय पृथ्वी पर वीर विक्रमादित्य नामक महाप्रतापी न्यायपरायण राजा राज करते हैं। आप लोग उन्हीं के पास जाइये।" इन्द्र के परामर्शानुसार सभी ग्रह राजा विक्रम के पास जाते हैं। नौ ग्रहों की बात सुनकर राजा विक्रमादित्य मन में विचार करने लगते हैं कि जिसे भी छोटा कहूँगा वही नाराज हो जायेगा। विचार करने के उपरांत राजा ने एक उपाय निकाला और क्रमशः स्वर्ण,रजत,कांसा,पीतल, सीसा,राँगा,जस्ता, अभ्रक एवं लोहे का आसन बनवाकर उन्हें एक कतार में लगवा दिया और नौ ग्रहों से अपने-अपने आसन पर विराजमान होने का अनुरोध किया। लोहे का आसन शनिदेव का था,चूंकि वह सबसे अंत में रखा गया था,इसलिए शनिदेव को यह समझते देर नहीं लगी कि उन्हें सब से पीछे का स्थान देकर बिना कहे ही छोटा कह दिया गया है।

शनिदेव के क्रोध की सीमा न रही,वे बोले राजन संभवतः तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता है। बड़े-बड़े देवताओं ने भी मुझसे दारुण दुःख पाया है। सूर्य एक माह तक एक राशि में,चंद्रमा सवा दो दिन,मंगल डेढ़ महीना,बृहस्पति तेरह महीना,बुध और शुक्र एक-एक महीना,राहु-केतु वक्री अर्थात् उल्टा चलते हुए अठारह महीना एक राशि पर रहते हैं। लेकिन मैं एक राशि पर तीस महीना रहता हूँ। भगवान् रामचंद्र, लंकापति रावण, राजा हरिश्चन्द्र,राजा नल,पाण्डव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदि लोग भी मुझसे बच नहीं पाये हैं । अब तुम भी सावधान हो जाओ । राजा विक्रमादित्य इस घटना को संयोग मानते हुए,आगे जो होगा उसे भाग्य पर छोड़ दिया । कुछ समय बीता राजा विक्रमादित्य पर साढ़ेसाती आयी । इधर शनिदेव घोड़ों के सौदागर का रुप धरकर राजा विक्रमादित्य की राजधानी जा पहुँचे और राजा विक्रमादित्य को सुंदर और श्रेष्ठ घोड़े दिखाने लगे । राजा ने एक घोड़ा चुना और जैसे ही उसकी पीठ पर सवारी के लिए बैठे वह घोड़ा बेहतासा भागने लगा, उसे वश में करना असंभव हो गया । घोड़ा देर तक दौड़ता रहा और भागते-भागते घनघोर जंगल में जाकर राजा को गिराकर स्वयं कही लोप हो गया ।

राजा भूख-प्यास से व्याकुल होकर जंगल में इधर-उधर भटकते हुए चले जा रहे थे कि, उन्हें एक ग्वाला दिखायी दिया । ग्वाले ने राजा की क्षुधा शांत की,थोड़े विश्राम के बाद राजा ने ग्वाले से नगर की ओर जाने का मार्ग पूछा । ग्वाले द्वारा नगर का मार्ग बताने पर राजा ने उससे प्रसन्न होकर उसे अपनी एक अंगूठी निकाल कर दे दी और स्वयं नगर की ओर चल पड़े ।

नगर पहुँचकर राजा एक दुकान पर जाते हैं जहाँ पर वहाँ का सेठ राजा को एक सभ्रांत परिवार का व्यक्ति मानकर उन्हें आसन देकर जलपान आदि से सत्कार करता है । नाम पूछने पर राजा अपना नाम वीका बताते हैं । संयोग से राजा (वीका)द्वारा दुकान पर बैठने के बाद से ही दुकान की बिक्री अप्रत्याशित रुप से बढ़ जाती है । सेठ इसे वीका के भाग्य की प्रबलता मानते हुए उसे अपने साथ भोजन करने के लिए अपने घर लेकर जाता है । घर जाकर भोजन करने के पूर्व सेठ अपना हार उतारकर एक खूँटी पर टांग देता है और वीका के साथ बैठकर भोजन करता है । भोजन करते समय वीका को एक आश्चर्य दिखायी देता है, वह यह कि , टंगे हुये हार को स्वयं खूँटी ही निगल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रही थी। भोजन कर सेठ जब अपना हार खूँटी पर नहीं पाता है और वीका के अतिरिक्त और कोई घर में भी नहीं आया, यह विचारकर सेठ को हार की चोरी का संदेह वीका पर होता है। हार के संदर्भ में वीका से पूछने से पर खूँटी द्वारा हार निगलने की घटना को झूठ मानते हुए सेठ कुछ लोगों एवं फौजदार को साथ लेकर वीका को बंदी बनवाकर वहाँ के राजा सामने प्रस्तुत करता है। घटना का वृतांत एवं साक्ष्यों की बात सुनकर राजा यह आज्ञा देता है कि, वीका के हाथ-पाँव काटकर उसे चौरंगा बना दिया जाए। राजा की आज्ञा से वीका के हाथ-पाँव काट दिये जाते हैं, हाथ- पाँव कट जाने के बाद वीका यों ही रास्ते में पड़ा रहता। कोई राह चलते कभी कुछ खाने को मुँह में डाल दिया तो खा लेता, कोई मुँह में पानी डाल देता तो पी लेता।

समय बीतते गया, एक दिन एक तेली वीका को अपने घर ले आया और उसे तेल पेरने वाले कोल्हू पर बैठा दिया। वीका मुँह से बोलकर बैलों को हाँकता। बदले में तेली वीका का भरण पोषण करता था। इसप्रकार से दिन व्यतीत होने लगे। वर्षाऋतु का आगमन हुआ, एक रात जब वीका राग मल्हार गा रहा था, उसी समय उस राज्य की राजकुमारी मनभावती ने वीका का गाना सुना और राग पर मोहित होकर अपनी दासी को यह पता लगाने के लिये भेजा कि, यह गाना कौन गा रहा है। दासी ने मल्हार राग गाने वाले वीका का पता लगाया, वह तेली के घर एक चौरंगा था जो हाथ-पाँव से हीन था। दासी ने सारा वृतांत राजकुमारी को जाकर कह सुनाया। राजकन्या मनभावती ने मन-ही-मन प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो मैं विवाह करूँगी तो इस चौरंगे से ही, अन्यथा नहीं करूँगी और खाना-पीना छोड़ दिया। राजा एवं रानी को जब इस बात का पता लगा तो उन्होंने राजकुमारी मनभावती को बहुत समझाया कि बेटी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तेरा विवाह तो किसी सुयोग्य और सुंदर राजकुमार से होना चाहिए। तुम चौरंगे का विचार मन से त्याग दो। राजकुमारी मनभावती ने कहा-मैंने प्रण कर लिया है,अब मैं अपना प्रण नहीं तोड़ूँगी,अगर आप लोग मुझे अधिक विवश करेंगे तो,मैं अपने प्राण त्याग दूँगी।

राजकुमारी मनभावती की इच्छा के आगे झुकते हुए क्रोध में आकर राजा तेली को तुरंत बुलवाते हैं और उससे कहते हैं -तुम्हारे घर जो चौरंगा रहता है,मैं राजकुमारी मनभावती का विवाह उससे करना चाहता हूँ। तुम जाकर विवाह की तैयारी करो। निर्धारित समय पर राजकुमारी मनभावती का राजा विक्रमादित्य से जो चौरंगे के रुप वीका नाम से तेली के यहाँ कोल्हू का बैल हाँकते हैं,विवाह संपन्न हो जाता है। उसी रात शनिदेव स्वप्न में आकर राजा विक्रमादित्य को कहते हैं,"राजन,मुझे सबसे पीछे का आसन देकर तुमने छोटा घोषित किया,देखा मेरे कारण तुम्हें कितने दुःख उठाने पड़े ?" शनिदेव का दर्शन पाकर राजा विक्रमादित्य ने अनेको प्रकार से उनसे क्षमा याचना की। शनिदेव ने प्रसन्न होकर राजा विक्रमादित्य को पुनः हाथ-पाँव दे दिये,तब राजा विक्रमादित्य शनिदेव से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि-हे शनिदेव कृपया मेरी एक विनती स्वीकार करें कि जैसा दारुण दुःख आपने मुझे दिया है,ऐसा दुःख किसी को भी न दें। शनिदेव ने कहा-मुझे तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार है। जो मनुष्य मेरी कथा कहेगा या सुनेगा,उसे मेरी दशा में किसी भी प्रकार का दुःख या क्लेश नहीं होगा और जो मेरा नित्य ध्यान,जप करेगा और चीटियों को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे।

प्रातःकाल जब राजकुमारी मनभावती की आँख खुलती है, तो वह राजा विक्रमादित्य को हाथ-पैर समेत देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है। राजा विक्रमादित्य राजकुमारी को आश्चर्य से भरा देख अपना सारा वृतांत कह सुनाते हैं। यह बात धीरे-धीरे राजकुमारी की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सखियों को जब पता चली तो उनके हर्ष का ठिकाना न रहा।

राजा विक्रमादित्य के विषय में जब सेठ को पता चलता है तब, वह भागा-भागा आकर राजा विक्रमादित्य के पैरों में गिरकर क्षमा माँगने लगता है। उसे इस बात का घोर पश्चाताप होता है कि उसके कारण ही राजा विक्रमादित्य के हाथ-पैर काटकर उन्हें चौरंगा बनाया गया। वह राजा विक्रमादित्य से दण्ड देने की प्रार्थना करता है। इस पर राजा विक्रमादित्य सेठ से कहते हैं कि,इसमें आपका कोई दोष नहीं है,यह सब मुझपर शनिदेव के कोप के कारण हुआ था,शनिदेव का कोप अब शांत हो गया है,जिससे अब सबकुछ पूर्ववत सामान्य हो गया है। इसके बाद सेठ राजा विक्रमादित्य को प्रीतिभोज देता हैं। प्रीतिभोज के समय एक विलक्षण घटना घटती है,जो खूँटी पहले हार निगल रही थी,अब वही खूँटी हार उगल रही थी। राजा विक्रमादित्य यह दृश्य सभी को दिखाते हुए कहते हैं कि देखो जब मुझपर शनिदेव की दशा थी तब यही खूँटी हार को निगल गयी थी,जिसके चोरी का दंड मुझे दिया गया था। अब शनि दशा समाप्त हो गयी तब यही खूँटी हार उगल रही है।

एक दिन सेठ अपनी पुत्री श्री कंवरी के विवाह का प्रस्ताव राजा विक्रमादित्य के समक्ष रखता है और सहमति के बाद शुभ मुहुर्त में उसका विवाह राजा विक्रमादित्य से कर देता है। कुछ समय हर्ष और मधुर वातावरण में व्यतीत करने के बाद राजा विक्रमादित्य अपनी दोनों रानी मनभावती और श्री कंवरी के साथ ससुराल से मिले रथ, हाथी-घोड़े,दास-दासी और ढेर सारा धन दहेज में लेकर अपनी राजधानी उज्जैन पहुँचते हैं। जहाँ उनका भव्य स्वागत होता है और नगर में महोत्सव मनाया जाता है,रात्रि में दीप से सारा नगर प्रकाश से भर जाता है। राजा विक्रमादित्य अपने राज्य में यह घोषणा करवा देते हैं कि, शनिदेव ग्रहों में सर्वोपरि हैं, मैंने शनिदेव को छोटा बताया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिससे मुझे भयंकर कष्ट भोगन पड़ा। इसके बाद उज्जैन में शनिदेव की पूजा-अर्चना और कथा होती रही तथा सारी प्रजा समेत राजा विक्रमादित्य अनेक प्रकार के सुख भोगते रहे।

जो कोई शनिदेव की महिमामय इस कथा का व्रत रखकर श्रवण या पठन करता है, शनिदेव उस पर निश्चय प्रसन्न होते हैं। व्रत का उद्यापन अवश्य करें। सूर्योदय से पूर्व वटवृक्ष या पीपल के पेड़ नीचे सरसों या तिल के तेल का दीपक जलायें।

॥ शनि ध्यानम् ॥

इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो धृतवाहनः।
नानाबाणासनधरः कर्तव्यो अर्कसुतः सदा॥

॥ शनिमंगल स्तोत्रम् ॥

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रजः काश्यपः
स्वामी नक्रम-कुम्भयोर्बुध-सितौ मित्रे समश्चांगिराः।
स्थानं पश्चिम दिग प्रजापति-यमौ देवौ धनुष्यासनः
षट्त्रिस्थःशुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्॥

....

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि प्रसन्नता हेतु दान योग्य वस्तुएँ ॥

उड़द के पकोड़े ❁ काले तिल के लड्डू ❁ तिल/सरसों तेल ❁ नीलम रत्न ❁ भूना काला चना ❁ लोहे का तवा/ चिमटा / करछुल ❁ काले/नीले रंग की छाता ❁ स्वर्ण शलाका ❁ काली गाय ❁ काले/नीले रंग के पुष्प ❁ ऊँन का काला/नीला कंबल / आसन ❁ काला /नीला सूती वस्त्र ❁ काले जूते ❁ कस्तूरी ❁ सूखे नारियल ❁ बादाम ❁ सुरमा।

शनि के अरिष्ट फल की शांति निमित्त जब भी संभव हो, तब सुपात्र देखकर उसे यह सामग्रियाँ अपनी शक्ति अनुसार अवश्य दान में देनी चाहिए। इससे लाभ अवश्य होता है। इसमें संशय नहीं है।

॥ शनि अनुकूलता हेतु औषधि स्नान ॥

शनि द्वारा उत्पन्न पीड़ा को कम करने एवं अनिष्ट निवारण हेतु 'मेरू तंत्र' शास्त्र में औषधि स्नान का विशेष महत्व है। यथा सुविधानुसार बाल्टी अथवा टब में जल भरकर निम्न औषधियों को काले सूती कपड़े की पोटली में बाँधकर उस जल में कम से कम एक घंटे तक भीगोकर रखें और स्नान के पुर्व इन्हें जल में से निकाल कर अलग कर दें। अब उस जल से स्नान करें।

रसांजनं कृष्णतिला: शतपुष्पा घनोबला।
लज्जालु-लोध्रमुक्ताभिरद्भि: स्नानं शनेर्मुदे ॥

अर्थात शनि की प्रसन्नता के लिए सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नानोंपरांत स्वच्छ वस्त्र धारण करें और पश्चिम दिशा में मुख कर शनि देव का ध्यान कर निम्न श्लोक का सात बार पाठ करें।

सुर्यपुत्र ! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः।
देवासुर मनुष्याश्च पशु पक्षि सरीसृपाः ॥
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु व्रजन्ति ते।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः ॥
राज्य भ्रष्टाःपतन्त्येते त्वया दृष्टयाऽवलोकिताः।
देशाश्च नगरग्रामा द्विपाश्चैव तथा द्रुमाः ॥
त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे ! वरदो भव भास्करे ॥

इस प्रकार यह विधान पूर्ण हो जाता है। यह पयोग किसी भी शनैश्चरी अमावस्या को या शनिवार के दिन करें,इस बात का अवश्य ध्यान रहे। जल से निकाली गई औषधियों (वस्तुओं)को किसी ऐसे स्वच्छ स्थान में रख दें,जहॉ किसी का पैर न पड़े। इस प्रयोग से ग्रह शांति होकर सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

शास्त्रों में कहा गया है कि-

यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन , ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥

जैसे सिद्ध औषधियों के सेवन से सभी प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं तथा मन्त्र से सभी प्रकार के भय का नाश होता है,उसी तरह उचित विधान से स्नान करने पर ग्रहों के दोष नष्ट हो जाते हैं।
(उपरोक्त सभी औषधियॉं आयुर्वेदिक अथवा यूनानी जड़ी-बुंटी दवा विक्रेताओं के यहॉं सहजता से उपलब्ध रहती हैं.)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि और सातमुखी-रुद्राक्ष ॥

हमारे ऋषियों ने हजारों वर्षों तक प्रकृति का अध्ययन किया और पाया कि रुद्राक्ष में वह सभी गुण समाहित हैं ,जो जीवन को पूर्णता की ओर गतिशील करते हैं । उन्होंने अपने आप को पूर्णता से जोड़ने के लिए रुद्राक्ष को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया । रुद्राक्ष मानव को जीवन में शारीरिक,मानसिक और आध्यात्मिक सद्गुणों को ग्रहण कर उसके अनुरुप समाज में बनने की गति प्रदान करने का एक अलौकिक गुण प्रदान करता है ।

सात मुखी रुद्राक्ष को शास्त्रों में शनि, सप्तमातृका और महालक्ष्मी रूप में जाना जाता है । यह सप्तमातृका अर्थात ब्राह्मणी, माहेश्वरी,कौमारी,वैष्णवी,वाराही,नरसिंही एवं ऐन्द्राणी का स्वरूप होता है । दीर्घायु प्रदान करने की इस रूद्राक्ष में अलौकिक क्षमता है । उच्च-कोटि के ज्योतिषियों के मतानुसार ज्योतिष की दृष्टि से जब किसी जातक पर ग्रहों विशेष के कारण मारकेश या दुर्घटना की स्थिति होती है,उस समय यह रूद्राक्ष धारण करने पर अनुकूल और आश्चर्यजनक परिणाम (फल) दृष्टिगोचर होते हैं । इस रूद्राक्ष को महालक्ष्मी का स्वरूप भी कहा गया है । यह रुद्राक्ष व्यापारवर्धक और कीर्ति प्रदायक है ,इसके धारण से धनागमन निरंतर बना रहता है । यह रूद्राक्ष कुंडलिनी शक्ति जागृत करने में अत्यंत लाभकारी है । सप्तऋषियों का इसमें वास होने से यह साधक की चेतना को यथा भू,भूवः,स्वः,जन,मह,तप,सत्य की ओर प्रेरित करता है । जिन लोगों को शनि की प्रबल बाधा हो अथवा कार्य क्षेत्र में सारे प्रयास निष्फल हो रहे हो,उन्हें इस रूद्राक्ष पर शनि काम्य मंत्र से जप करवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर, चैतन्य कर अवश्य धारण करना चाहिए। इससे शनि पीड़ा शांति में निश्चय ही विशेष लाभ होता है।

पूर्व में जैसा कि वर्णित है, इसे शनि, सप्तमातृका और महालक्ष्मी तीनों का स्वरूप कहा गया है। अतः इस रूद्राक्ष के जिस स्वरूप के फल प्राप्ति की आकांक्षा हो उसी स्वरूप के अनुसार इसकी प्राण- प्रतिष्ठा और पूजन संपन्न कर इसे धारण करें।

शास्त्रों के अनुसार नीलम (रत्न) की तरह रूद्राक्ष भी प्रकृति की ही देन है अंतर सिर्फ इतना है कि रत्न भूगर्भ से प्राप्त होता है और रूद्राक्ष पवित्र वृक्ष से। जहाँ नीलम को धारण करने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि वह जातक के लिए अनुकूल है या नहीं, वहीं रूद्राक्ष धारण करने लिए इस प्रकार का कोई परीक्षण आवश्यक नहीं है, परंतु इसकी जाँच अवश्य कर लें कि रूद्राक्ष एवं उस पर बनीं धारियाँ जिसे मुख कहा जाता है वह असली है या कृतिम।

(रूद्राक्ष संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए श्री शिव उत्सव केन्द्र प्रकाशन की 'रुद्राक्ष प्रसंग' पुस्तक देखें)

॥ शनि रत्न-नीलम ॥

नीलम को शनि के रत्न के रुप में जाना जाता है, इसे अंग्रेजी में सैफायर (saphire) कहते हैं। शुद्ध नीलम चमकीला, मोर के पंख जैसा वर्ण, नीली किरणों वाला पारदर्शी होता है। अगर इस पर सफेद डोरियाँ, चीरे का निशान, जाल, दाग-धब्बा हो तो न लें। उत्तम यही होगा कि किसी विश्वसनीय व्यक्ति या विक्रेता से ही रत्न को खरीदें। *ऐसी मान्यता है कि यह रत्न धारण करने पर व्यापार-व्यवसाय, यश, मान, प्रतिष्ठा, बुद्धि एवं वंश परम्परा में वृद्धि करता*

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है। नीलम रत्न को धारण करने से पूर्व यह अनुकूल है या नहीं,इसका परीक्षण अवश्य कर लेना चाहिए।

नीलम अगर प्रतिकूल प्रभाव देने लगे तो भारी हानि की संभावना हो जाती है। इस रत्न को उत्तराषाढा,श्रवण,धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाति, पूर्वाभाद्रपद,चित्रा,विशाखा नक्षत्र में जब शनिवार हो तब परीक्षण के लिए खरीदें। परीक्षण हेतु इसे अपने शरीर पर (नीले कपड़े या चाँदी के पत्र में लपेटकर) इस प्रकार धारण करें कि यह लगातार शरीर को स्पर्श करता रहे। सामान्यत:नीलम का प्रभाव चौबीस घंटे के भीतर आरंभ हो जाता है और तीन दिन में इसका प्रभाव दिखने लगता है। अगर इन दिनों में बुरे स्वप्न आएँ, आकस्मिक रोग या दुर्घटना हो अथवा चेहरे की बनावट में अंतर दिखायी पड़े तो नीलम रत्न को न पहनें।

धारण विधि:- आयु एवं प्रभावानुसार नीलम ५,७,९,१२ रत्ती का भी हो सकता है। नीलम को पंचधातुं,लोहा अथवा स्वर्ण में शुभ दिन देखकर जड़वायें। इसमें प्रयुक्त होनेवाली धातु ९ रत्ती से कम नहीं होनी चाहिए। नीलम को धारण करने की शुभ विधि यह है कि, पूर्ववर्णित धातुओं एवं नक्षत्रों में ही शनि मंडल यंत्र का भी निर्माण करा लें और दोनों की शुद्धि कर यंत्र के मध्य में अँगूठी को स्थापित करें। तदनंतर षोडशोपचार पूजन करें एवं प्राणप्रतिष्ठा करें। शनि मूलमंत्र का २३ हजार जप संपन्न करें या पुरोहित से करवायें, अँगूठी का शनि अष्टोत्तरशत नाम से अभिषेक कर, ६ हजार मूल मंत्रों से हवन करें। शनि मंडल यंत्र को शनि की दान योग्य वस्तुओं के साथ दान करें तथा संध्याकाल में दीपदान,बलि एवं भैरव पूजन अवश्य करें। धारण के पाँच वर्ष पश्चात् नीलम का पुनः पूजन, अभिषेक आवश्यक है,क्योंकि वह प्रभावहीन हो जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि और हमारा आचार-विचार ॥

सामान्यत: क्रूर एवं प्रतिकूल ग्रहों की दशा के प्रभाव में कुछ आचार-विचार ऐसे होते हैं,जो जातक पर अपना अधिकार कर ग्रहों की क्रूरता में वृद्धि कर देते हैं,इस पर बहुत कम लोग ही गंभीरता पूर्वक ध्यान देते हैं। समय पर उचित ध्यान नहीं देने से कालांतर में यही आचार-विचार जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाता है फिर भले ही कोई ग्रह अपना बुरा प्रभाव दिखाये या न दिखाये, इन आचार-विचारों के दोष जातक के जीवन में रोग एवं परिवार व समाज में उपेक्षा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्माण कर देते हैं। ऐसी स्थिति में मंत्र,रत्न या अन्य उपाय भी अपना शीघ्र और पूर्ण प्रभाव नहीं दिखा पाते हैं। अत: यथा संभव इन आचार-विचारों पर नियंत्रण कर शनै:- शनै: इनका शमन करना चाहिए।

क्रोध-रक्त में उष्णता(विषाक्तता),उच्चरक्तचाप,मस्तिष्क रोग और बेचैनी। चिंता-अपच और कब्ज,सिरोवेदना,अनिद्रा,ऑख के नीचे काला होना,निर्बलता एवं नपुंसकता। लोभ- अपच ,पेट में गैस एवं दर्द। स्वार्थ-कब्ज,मंदाग्नि,मानसिक तनाव। कामुकता-त्वचा रोग, स्वांस फूलना,नसों का अकड़ना,सिरोवेदना,मूत्राशय रोग। घृणा (तिरस्कार)- स्मृति -दोष, मानसिक निर्बलता, शोथ, पक्षाघात, संधिवात,सफेद दाग। अविश्वास (शंका)-रक्त पतला होना,रक्त अल्पता,मानसिक दुर्बलता, भ्रम एवं भय आदि। निराशा-उत्साह में कमी,भय,निष्क्रियता,मंदाग्नि, अकर्मण्यता। असंतोष-मानसिक तनाव,उदण्ड विचार,शरीर में जल की कमी,चिंता में वृद्धि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि की दशा और हमारा संकल्प ॥

ॐ शनि की किसी भी प्रकार की दशा में पहला कार्य यह करें कि,स्वयं के द्वारा की गयी समस्त गलतियों को स्वीकार करें और उसे भूल कर भी भविष्य में न करने का संकल्प करें।

*आचरण में शुद्धता रखें और भूल कर भी किसी को बिना माँगे सलाह न दें।

*जो करना है,आज ही संभव हो तो उसी दिन करें। कोई भी कार्य निर्धारित समय से देर/बाद में करने का विचार कर,कल पर न टालें।

*देश,काल,परिस्थिति देखकर अपनी स्थिति को तौलें और फिर किसी नये कार्य में हाथ डालें।

*संभव होने वाले कार्यों के विषय में सोचें और उसे सहजता से पूरा करने की आदत डालें।

*जहाँ तक हो सके दूसरों के आस भरोसे पर कम ही रहें।

*किसी भी प्रकार का कर्ज लेने और देने से संभवतः बचने का प्रयास करें।

*जहाँ तक संभव हो,सच्चाई कहते समय उसमें थोड़ी मिठास हो इसका अवश्य ध्यान रखें क्योंकि इस काल में कटु सत्य कहने की एक आदत सी भी बन जाती है।

*अपनी दिनचर्या को नियमित रुप से लिखें और उसका अवलोकन करें व अपनी त्रुटियों को सुधारें।

*क्षुद्र आलोचनाओं और उपहास से अप्रभावित रहकर अपने कार्य के प्रति गतिशील रहें।

*हर परिस्थिति एवं व्यक्ति की अच्छाई पर दृष्टि रखें और उसके उपयोग की पात्रता अपने भीतर निर्मित करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

*परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालनें का प्रयास करें, अपनी वास्तविकता को स्वीकार करें,स्वयं के कर्म पर भरोसा रखें और परमात्मा पर पूर्ण श्रद्धा रखें।

*जिसके परिणाम में दूसरों का अहित होता हो,ऐसी बात न कभी सोचें,न कभी कहें,न कभी करें और न कभी समर्थन ही करें। क्योंकि उससे अपना हित कभी नहीं होगा।

*साधना-अनुष्ठान के दिनों में पूर्णत:पवित्रावस्था में रहें, ब्रह्मचर्य का पालन करें,भूमि पर चादर,चटाई बिछाकर शयन करें। परनिंदा,प्रशंसा,उपहास,परिहास कहने-सुनने से बचें। शुद्ध सात्विक व अल्पाहार ग्रहण करें और दूसरे के अन्न-जल-आसन से दूर रहें।

* अगर आपके पास निर्णय लेने की क्षमता है और उसे पूरा करने का संकल्प है आप जीवन में अवश्य सफल होगें।

समदृष्टि, अनुशासन, कर्तव्य और न्याय का निष्ठा से पालन करने के लिए क्रोधी और निष्ठुर बनना ही पड़ता है। शनि न्यायप्रधान देवता हैं,फलस्वरुप यह बातें शनि में स्वभावत: दिखायी देती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि-शांति पर विशेष प्रयोग ॥

शनि-शांति के विशेष प्रयोग अनुभूत एवं स्वयंसिद्ध हैं, इनके प्रभाव अचूक एवं शीघ्र प्रभावशाली हैं। शनि की दारूण पीड़ा से प्रभावित जातकों के लिए ये प्रयोग कल्पना से भी अधिक लाभदायक हैं।

शनि व शनि पत्नी प्रयोग।

शनि के दुष्प्रभाव की शांति और शनि की प्रसन्नता हेतु शनि एवं उनकी पत्नी के इन दस नामों का प्रतिदिन पाठ अनुकूल फल प्रदान करता है। कहा जाता इसके पाठ करने से शुभता का विस्तार होता है।

शनि दस नाम

कोणस्थ:पिंगलो बभ्रु:कृष्णो रौद्राऽन्तको यम:।
सौरि: शनैश्चरो मन्द: पिप्पलादेन संस्तुत: ॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय य: पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति ॥

शनि पत्नी दस नाम

ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलहप्रिया ।
कंटकी कलही चाऽथ तुरंगी महिषी अजा ॥
शनेर्नामानि पत्नीनामेतानि संजपन् पुमान् ।
दु:खानि नाशयेन्नित्यं सौभाग्यमेधते सुखम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

☼ पाशुपतास्त्र प्रयोग।

शनि-पीड़ित जातकों के लिए यह कल्प वृक्ष सदृश्य प्रयोग है। जब सभी प्रयत्न असफल हो जायें। जीवन मृत्युतुल्य कष्ट से गुजर रहा हो। हर समय अज्ञात भय का तांडव हो। अंततः मरने जीने का प्रश्न उपस्थित हो जाए, तब यह अतिदुर्लभ एवं अचूक प्रयोग संपन्न करें। उग्र प्रयोग होने के कारण इसका अनुष्ठान गुरु दीक्षा के उपरांत आवश्यक निर्देशों का पालन करते हुए ही करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि संभव है।

विनियोग: ॐ अस्य पाशुपतास्त्र शान्तिस्तोत्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषि:अनुष्टुप् छंद:श्री सदाशिव परमात्मा देवता सर्वविघ्न-विनाशार्थे पाठे विनियोग :।

ॐ नमो भगवते महापाशुपताय। अतुलवीर्यपराक्रमाय। त्रिपंचनयनाय। नानारूपाय। नानाप्रहरणोद्यताय। सर्वांगरक्ताय। भिन्नांजनचयप्रख्याय। श्मशानवेतालप्रियाय। सर्वविघ्ननिकृन्तन--रताय। सर्वसिद्धिप्रदाय। भक्तानुकंपिनेऽसंख्यवक्त्रभुजपादाय। तस्मिन्सिद्धाय। वेतालवित्रासिने। शाकिनीक्षोभजनकाय। व्याधि-निग्रहकारिणेपापभंजनाय। सूर्यसोमाग्निनेत्राय। विष्णुकवचाय। खड्गवज्रहस्ताय। यमदंडवरुणपाशाय। रुद्रशूलाय। ज्वलज्जिह्वाय। सर्वरोगविद्रावणाय। ग्रहनिग्रहकारिणे। दुष्टनाशक्षयकारिणे।

ॐ कृष्णपिंगलाय फट्। हुंकारास्त्राय फट्। वज्रहस्ताय फट्। शक्तये फट्। दंडाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणाय फट्। वज्राय फट्। पाशाय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्। त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुंडाय फट्। मुंडास्त्राय फट्। कंकालाख्याय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फट् । पिच्छिकास्त्राय फट् । क्षुरिकास्त्राय फट् । बह्मास्त्राय फट् । शक्त्यस्त्राय फट् । गणास्त्राय फट् । सिद्धास्त्राय फट् । पिलिपिच्छ अस्त्रायफट् ।गन्धर्वास्त्राय फट् । पूर्वास्त्राय फट् । दक्षिणास्त्राय फट् । वामास्त्राय फट् । पश्चिमास्त्राय फट् । मंत्रास्त्रायफट् । शाकिन्य-स्त्राय फट् । योगिन्यस्त्राय फट् । दंडास्त्राय फट् । महादंडास्त्राय फट् । नमोऽस्त्राय फट् । शिवास्त्राय फट् । ईशानास्त्राय फट् । पुरुषास्त्राय फट् । अघोरास्त्राय फट् । सद्योजातास्त्राय फट् । हृदयास्त्राय फट् । महास्त्राय फट् । गरुडास्त्राय फट् । राक्षसास्त्राय फट् । दानवास्त्राय फट् । क्षौंनरसिंहास्त्राय फट् । त्वष्ट्रास्त्राय फट् । सर्वास्त्राय फट् । नः फट् । वः फट् । पः फट् । फः फट् । भः फट् । श्रीःफट् । पैःफट् । भूःफट् । भुवःफट् । स्वःफट् । महःफट् । जनःफट् । तपःफट् । सत्यं फट् । सर्वलोक फट् । सर्वपाताल फट् । सर्वतत्व फट् । सर्वप्राण फट् । सर्वनाडी फट् । सर्वकारण फट् । सर्वदेव फट् । ह्रीं फट् । श्रीं फट् । हूँ फट् । स्त्रुं फट् । स्वां फट् । लां फट् । वैराग्याय फट् । मायास्त्राय फट् । कामास्त्राय फट् । क्षेत्रपालास्त्राय फट् । हुँकारास्त्राय फट् । भास्करास्त्राय फट् । चन्द्रास्त्राय फट् । विघ्नेश्वरास्त्राय फट् । गौः गां फट् । स्त्रौं -२फट् । हौं -२ फट् । भ्रामय-२फट् । सन्तापय-२ फट् । छादय-२ फट् । उन्मूलय-२ फट् । त्रासय-२फट् । संजीवय-२फट् । विद्रावय-२ फट् । सर्वदुरितं नाशय -२ फट् ॥

उपरोक्त मंत्रो को अंतर्बाह्य से शुद्ध होकर १००८ पाठ करें । तदुपरांत निम्न मंत्रों से तर्पण, मार्जन और हवन पूरी निष्ठा के साथ संपन्न करें ।

मंत्रः- "ॐ कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा ॥

एवं ॐ नमो भगवते महापाशुपताय नमः स्वाहा ।"

जप हेतु भगवान् पाशुपतास्त्र मंत्र- ॐ श्लीं पशु हुं फट् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विशालाक्ष वरद प्रयोग।

यह प्रयोग विद्वानों द्वारा अत्यंत ही प्रशंसित है और इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है। रुद्राक्ष से संबंधित साहित्य में शनि पीड़ा शांति का यह अनुभूत और चमत्कारीक प्रयोग है। इस प्रयोग में प्राण-प्रतिष्ठित 'विशालाक्ष वरद' मंत्रों से सिद्ध रुद्राक्ष की तीन मणियों को धारण करने का विधान है। रुद्राक्ष मणियों को इस विधान में, इस प्रकार से पिरोया जाता है कि पहले पाँच मुखी रुद्राक्ष (जो कि भगवान रुद्र और देव गुरु बृहस्पति की शुभता का प्रतिनिधित्व करता है) फिर सात मुखी रुद्राक्ष (जो शनिदेव का प्रिय है) तथा पुनः पाँच मुखी रुद्राक्ष को एक सीध में इस प्रकार से पिरोया जाये कि तीनों एक सीध में आ जाएँ। इस प्रकार पाँच मुखी संपुटित सात मुखी रुद्राक्ष पीले डोरे अथवा चाँदी में पिरोकर महेंद्र या अमृत काल में शनिवार को धारण करने पर शनि के अशुभ प्रभावों की शांति होती है

विशालाक्ष वरद मंत्रों से सिद्ध इन रुद्राक्षों को धारण कर नित्यप्रातः यदि सूर्योदय के समय निम्न श्लोक को ७,११ अथवा २१ बार पढ़ा जाये तो अत्यंत ही श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होते हैं।

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

☆ नृसिंह (कवच) प्रयोग।

जब साझेदारी के व्यवसाय में धोखा होने की शत-प्रतिशत स्थिति हो, हितैषियों या संबंधियों द्वारा षडयंत्र कर सर्वस्व हरण करने की परिस्थिति हो, तांत्रिक अथवा दैवीय बाधा हो, धन-जन-जीवन अस्थिर हो और प्रतिपल मृत्युतुल्य क्षण बीत रहा हो तब इस प्रयोग को अवश्य संपन्न करें। यह प्रयोग अंत्यंत पवित्रता और सावधानी की अपेक्षा रखता है इसलिए योग्य निर्देशन में ही इस प्रयोग को संपन्न करें तो उचित होगा।

नृसिंह ध्यानम्

माणिक्याद्रिसमप्रभं निजरुचा सन्त्रस्तरक्षोगणम्।
जानुन्यस्तकराम्बुजं त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम्॥
बाहुभ्याम् धृतशंखचक्रमनिशं दंष्ट्रोग्रवक्त्रोल्लस-
ज्ज्वाला जिह्वमुदग्रकेशनिचयं वन्दे नृसिंहं विभुम्॥

भगवान् नृसिंह माणिक्य पर्वत जैसे प्रभावाले हैं और अपने तेज से राक्षसों को भयभीत कर रहे हैं। वे त्रिनेत्र हैं और रत्नजटित आभुषणों से शोभायमान हैं। दो कर कमल घुटनों पर रखे हैं और अन्य दो भुजाओं में शंख और चक्र धारण किए हैं। दाँतों द्वारा उग्र मुख से अग्नि शिखा के समान जिह्वा बाहर निकली हुई है। दीर्घ केशों से युक्त भगवान नृसिंह की मैं वंदना करता हूँ।

'मानस पूजा' -लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं आघ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्रराज

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

नारद उवाच

इन्द्रादि देववृन्देश ईड्येश्वर जगत्पते ,
महाविष्णोर्नृसिंहस्य कवचं ब्रूहि मे प्रभो ।
यस्य प्रपठनाद् विद्वान् त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥

ब्रह्मा उवाच

श्रृणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन ।
कवचं नरसिंहस्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥
स्रष्टाहं जगतां वत्स पठनाद् धारणाद् यत् ।
लक्ष्मीः जगत्त्रयम्पाति संहर्ता च महेश्वरः॥
पठनाद् धारणाद् देवाः बहवश्च दिगीश्वराः।
ब्रह्ममंत्रमयं वक्ष्ये भ्रान्त्यादिविनिवारकम् ॥
यस्य प्रसादाद् दुर्वासास्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
पठनाद्धारणाद् यस्य शास्ता च क्रोधभैरवः॥
त्रैलोक्यविजयस्यापि कवचस्य प्रजापतिः ।
ऋषिश्छन्दस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः॥
क्ष्रीं बींज मे शिरः पातु चन्द्रवर्णो महामनुः ।
ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ॥
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो मंत्रराजः सुरद्रुमः ॥
कण्ठं पातु ध्रुवं क्ष्रौं हृद् भगवते चक्षुषी मम ।
नरसिंहाय च ज्वालामालिने पातु कर्णकम् ॥
दीपदंष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वरक्षोघ्नाय च तथा सर्वभूतहिताय च॥
सर्वज्वर विनाशाय दह दह पदद्वयम्।
रक्ष रक्ष वर्ममंत्रः स्वाहा पातु मुखं मम॥
तारादि रामचन्द्राय नमः पातु हृदे मम।
क्लीं पायात्पार्श्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः॥
नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रों क्षौं च हुं फट्।
षड्क्षरः कटिं पातु ॐ नमो भगवते पदम्॥
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय क्लीं उरुद्वयम्।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनूत्तमः॥
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमःपायात्पदद्वयम्।
क्ष्रौं नृसिंहाय क्ष्रौं च सर्वांगे मे सदावतु॥
इति ते कथितं वत्स सर्वमंत्रौघविग्रहम्।
तव स्नेहान्मया ख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्॥
गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात् कवचं ततः।
सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धियुतो भवेत्॥

"ॐ नरसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षः स्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलनाय स्तंभोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विसर विसर पच पच हन हन कंपय कंपय मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः ठः एहि एहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा।"

(श्री नृसिंह साधना संबंधित जानकारी के लिए श्री शिव उत्सव केंद्र प्रकाशन की 'रुद्राक्ष प्रसंग' एवं 'सौभाग्य चिंतामणि' पुस्तक देखें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवकृत श्रीनृसिंह स्तोत्रम्।

यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्तोत्र है जो भगवान शिव के श्रीमुख द्वारा किया गया है। मेरे अनुभव में भगवान् नृसिंह को शीघ्र प्रसन्न करने का यह श्रेष्ठतम् स्तोत्र है। यह स्तोत्र जीवन में भोग और मोक्ष प्रदान कर सदैव भयमुक्त रखता है। इसकी अधिक महिमा क्या कहें, प्रातः इस स्तोत्र का एक बार पाठ करने मात्र से उस दिन कोई भय जीवन में स्थायी स्थान नहीं बना पाता है।

श्रीनृसिंह ध्यानं- ध्यायेन्नृसिंहं तरुणार्कनेत्रं
सिताम्बुजातं ज्वलिताग्निवक्त्रम्।
अनादिमध्यान्तमजं पुराणं
परात्परेशं जगतां निधानम्॥

श्रीनृसिंह स्तुति

नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ नरसिंहवपुर्धर।
दैत्येश्वरेन्द्रसंहारि नखशुक्तिविराजित॥
नखमंडलसंभिन्न हेमपिंगलविग्रह।
नमोऽस्तु पद्मनाभाय शोभनाय जगद्गुरो।
कल्पान्ताम्भोद निर्घोष सूर्यकोटिसमप्रभ॥
सहस्रयमसंत्रास सहस्रेन्द्रपराक्रम।
सहस्रधनदस्फीत सहस्रचरणात्मक॥
सहस्रचन्द्रप्रतिम सहस्रांशुहरिक्रम।
सहस्ररुद्रतेजस्क सहस्रब्रह्मसंस्तुत॥
सहस्ररुद्रसंजप्त सहस्राक्षनिरीक्षण।
सहस्रजन्ममथन सहस्रबन्धमोचन।
सहस्रवायुवेगाक्ष सहस्राज्ञकृपाकर॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विवाह-बाधा निवारण प्रयोग।

विवाह विलम्ब में अपेक्षाकृत अधिक समय होने लगे तो निश्चित रूप से यह समझना चाहिए कि, यह शनि का ही कुप्रभाव है। विवाह में देरी होने के मूल कारणों में शनि की भूमिका अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। सप्तम भावमें शनि की उपस्थिति अथवा इस भाव या इसके स्वामी पर किसी भी प्रकार की दृष्टि विवाह विलम्ब के प्रमुख कारणों में से एक है।

जिन जातकों का शनि अनुकूल नहीं है, उनका विवाह देरी से होगा, इसमें संशय नहीं किया जा सकता है। अगर यही योग कन्या की पत्रिका में हो और उसका विवाह विलम्ब से नहीं हुआ हो तो, इस बात की अत्यधिक संभावना बनेगी कि, उसके पति की आयु एवं उसकी आयु में अंतराल अधिक होगा।

वैवाहिक संबध में अगर जातक भागकर, चोरी से, जबरदस्ती से, अधिक या कम आयु वाले से अथवा अन्यजाति, अन्यधर्म वाले स्त्री / पुरुष से विवाह करता है या विवाह से पूर्व अथवा विवाहोपरांत जातक किसी से अनैतिक संबंध स्थापित करता है, तब जातक को कहीं न कहीं शनि से प्रभावित अवश्य समझना चाहिए। ***यहाँ जातक शब्द का अर्थ स्त्री और पुरुष दोनों के लिए प्रयुक्त किया गया है।***

वैवाहिक तथ्य और शनि एक शोध का विषय है क्योंकि वैवाहिक विलंब, बेमेल विवाह, प्रतिकूल गृहस्थी एवं विवाहोपरांत दुःख, कष्ट व निर्धन जीवन का संबंध शनि से अवश्य रहता है। अगर जीवन में इस प्रकार की समस्या दृष्टिगोचर हो तो, शनि शाँति का उपाय अवश्य करना चाहिए। जब स्थिति अत्यंत कष्टप्रद या दयनीय हो तो अविलंब ***शनि-शांति पर विशेष प्रयोग*** में से कोई अनुकूल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रयोग एवं महामृत्युंजय जप अथवा सौभाग्य चिंतामणि अनुष्ठान अवश्य संपन्न करवाना चाहिए।

सामान्यत:विवाह योग्य होने पर या वैवाहिक विलम्ब होने पर मनोनुकूल जीवनसाथी की प्राप्ति हेतु निम्न मंत्रों में से किन्हीं एक मंत्र का प्रयोग अत्यंत श्रेयस्कर कहा गया है। यह मंत्र अनुभूत होने के साथ-साथ शीघ्र प्रभावकारी भी है।

मनोनुकूल पत्नी प्राप्ती मंत्र

१. पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥

अथवा

२."ॐ विश्वावसो राजगंधर्व कन्यां सालंकृतां सहस्रसंवृतां
ममाभीप्सितां(अमुक नाम्नी)प्रयच्छ-प्रयच्छ स्वाहा।"

सुयोग्य पति प्राप्ती मंत्र

१. हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्ताम् सुदुर्लभाम्॥

अथवा २. कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरू ते नमः॥

जप विधान-दीपक,रूद्राक्ष माला,सुंदर-सुगंधित वस्त्र,
संख्या-११ हजार ,दिशा-उत्तर,आसन-लाल या पीला

सुखमय वैवाहिक जीवन के लिए प्रत्येक जातक को विवाह के पुर्व इन मंत्रो का यथा संभव जप अथवा अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए।

विशेष लाभ के लिए सवा लाख जप सम्पन्न करना चाहिए।

(विवाह बाधा निवारण संबंधित विस्तृत प्रयोगों के लिए श्री शिव उत्सव केंद्र प्रकाशन की 'विवाह चिंतामणि' पुस्तक देखें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वटुक भैरव प्रयोग।

जब जातक की जन्मपत्रिका में शनि दोष के अतिरिक्त कालसर्प या पितृ दोष हो तो जातक को अपने उत्कर्ष हेतु वटुक भैरव प्रयोग अवश्य करना चाहिए। दैवीय प्रकोप ,कष्ट , भूत-प्रेत बाधा ,अकारण शत्रु ,अनियंत्रित परिवार,अकस्मात दुर्घटनाएँ, हानि, भय, रोग,दैन्य,दरिद्रता अथवा आत्मबल की कमीं आदि समस्याओं में भी यह मंत्र प्रयोग अत्यंत श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। यह प्रयोग सरल होने के साथ-साथ अपना प्रभाव अतिशीघ्रता से दिखाता है।

विनियोगः-

ॐ अस्य श्री आपदुद्धारण वटुक भैरव मंत्रस्य, बृहदारण्यक ऋषिः,त्रिष्टुपछन्दः,श्रीवटुक भैरवो देवता,ह्रीं बींज, स्वाहा शक्तिः, भैरवः कीलकम् मम धर्म- अर्थ - काम - मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

बृहदारण्यक ऋषये नमः॥ (शिरसि), त्रिष्टुप- छन्दसे नमः॥ (मुखे), श्रीवटुकभैरव देवतायै नमः॥ (हृदये), ह्रीं बींजाय नमः॥ (गुह्ये), स्वाहा शक्तये नमः॥ (पादयोः), भैरवः कीलकाय नमः॥ (नाभौ),विनियोगाय नम :॥ (सर्वांगे)।

करादि- हृदयादि न्यासः-

ॐ ह्राँ वां (अंगुष्ठाभ्यां नमः॥,हृदयाय नमः॥),ॐ ह्रीं वीं (तर्जनीभ्यां नमः॥, शिरसे स्वाहा ॥),ॐ ह्रूं वूं (मध्यमाभ्यां नमः॥,शिखायै वषट् ॥) ॐ ह्रैं वैं (अनामिकाभ्यां नमः॥,कवचाय हुं॥), ॐ ह्रौं वौं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ,नेत्रत्रयाय वौषट् ॥) ॐ ह्रः वः (करतल करपृष्ठाभ्यां नमः॥, अस्त्राय फट् ॥)।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्रन्यासः-

ॐ ह्रीं ह्रौं (अंगुष्ठाभ्यां नमः॥,हृदयाय नमः॥) ॐ ह्रीं वटुकाय (तर्जनीभ्यां नमः॥,शिरसे स्वाहा ॥) ॐ हं आपदुद्धारणाय (मध्यमाभ्यां नमः॥,शिखायै वषट् ॥) ॐ हैं कुरू-कुरू(अनामिकाभ्यां नमः॥,कवचांय हुं ॥) ॐ ह्रौं वटुकाय(कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥) ॐ हः ह्रीं (करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः,अस्त्राय फट्)।

॥ अथ ध्यानम् ॥

करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि
स्तरूणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छित्तिहेतु
र्जयतिवटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

॥ अथ मंत्रम् ॥

ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू-कुरू वटुकाय वं ह्रीं ॐ।

॥ अथ शापम विमोचन मंत्रम् ॥

ॐ ह्रीं वटुक शापम विमोचय विमोचय ह्रीं क्लीं।

अथ वटुक भैरव संक्षिप्त बलिदान विधि

मकान के बाहर द्वार के बायीं ओर दो लौंग एवं गुंड़ की डली(टुकड़ा) पान के पत्ते पर कुंकुम के साथ रखें।

॥ बलिदान मंत्रम् ॥ ॐ ह्रीं वं एह्येहि देवीपुत्र आपदुद्धारक वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर ज्वलत्पिंगलनेत्र सर्वकार्यसाधक मद्दत्तमिमं यथोपनीतं बलिं गृहण् गृहण् मम कर्माणि साधय साधय सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वशत्रून् संहारय ते नमः वं ह्रीं ॐ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वटुक भैरवकवचम् ।

अथ विनियोगः ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवकवचस्य भैरवऋषिअनुष्टुप् छन्दो वटुकभैरवो देवता । मम वटुकभैरव प्रसाद सिद्ध्यर्थे सर्वार्थ साधने च पाठे विनियोगः।

ॐ ह्रीं पातु शिरसि नित्यं पातु ह्रीं कण्ठदेशके । वटुकं पातु हृदये आपदुद्धारणाय च ॥१॥ कुरुद्वयं मे लिंगस्य आधारे वटुकाय च । सर्वदा पातु ह्रीं बींज बाह्वोर्युगलमेव च ॥२॥ षडंगसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः। ॐ ह्रीं वटुकाय सततं सर्वांगे मम सर्वदा ॥३॥ ॐ ह्रीं कालाय पादयोःपातु पातु वीरासनं हृदि । ॐ ह्रीं महाकालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः॥४॥ दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहित- स्ततः। ललिताभैरवः पातु अष्टाभिः शक्तिभिःसह ॥५॥ विश्वनाथः सदा पातु सर्वांगे ममसर्वदा । अन्नपूर्णा सदापातु अंसं रक्षतुचण्डिका ॥६॥ असितांगः शिरः पातु ललाटं पातु भैरवः। चण्डभैरवःपातु वक्त्रे कण्ठे श्रीक्रोधभैरवः ॥७॥ मूलाधारं भीषणश्च बाहुयुग्मं च भैरवः। हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु प्राणयोः ॥८॥ प्राणापानसमानं च उदानं व्यानमेव च । रक्षन्तु द्वारमूले तु दशदिक्षु समन्ततः ॥९॥ प्रणवः पातु सर्वांगं लज्जाबीजं महाभये । इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम् ह्रीं ॐ ॥१०॥

अथवा इस कवच का प्रयोग भी उत्तम फलदायक है-

॥ ॐ ह्रीं सहस्रारे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरूः। पातु मां वटुको देवो भैरवः सर्वकर्मसु ॥१॥ पूर्वस्यामसितांगो मां दिशि रक्षतु सर्वदा। अग्नेय्यां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्डभैरवः ॥२॥ नैर्ऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मत्तः पातु पश्चिमे। वायव्यां मां कपाली च नित्यं पायात् सुरेश्वरः ॥३॥ भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा। संहारभैरवः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पायादीशान्यां च महेश्वरः ॥४॥ ऊर्ध्वं पातु विधाता च पाताले नन्दको विभुः। सद्योजातस्तु मां पायात् सर्वतो देवसेवितः ॥५॥ रामदेवो वनान्ते च वनेऽघोरस्तथाऽवतु। जले तत्पुरुषः पातु स्थले ईशान एव च ॥६॥ डाकिनीपुत्रकःपातु पुत्रान् मे सर्वतःप्रभुः। हाकिनीपुत्रकः पातु दारांस्तु लाकिनीसुतः॥७॥ पातु शाकिनिकः पुत्रः सैन्यं वै कालभैरवः। मालिनी -पुत्रकः पातु पशूनश्वान् गजांस्तथा ॥८॥ महाकालोऽवतु क्षेत्रं श्रियं मे सर्वतो गिरा। वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्यसम्पदा ह्रीं ॐ ॥९॥

चतुर्वर्गप्रदं नित्यं स्वयंदेवप्रकाशितम्।
यःपठेच्छृणुयान्नित्यं धारयेत्कवचोत्तमं ॥

✡ भैरव के कुछ चमत्कारीक सिद्ध मंत्र।

ॐ ह्रीं वं वटुकाय नमः॥१ ॐ भ्रं भ्रं भ्रं क्रीं भ्रं भ्रं भ्रं फट ॥२
ॐ ह्रीं भं भैरवाय नमः॥३ ॐ क्रीं क्रीं कालभैरवाय क्रीं क्रीं फट् ॥४
ॐ हुँ ह्रीं भूतनाथाय वेतालाय नमः॥ ५
ॐ ह्रीं आं अंगभैरवाय (देवदत्त) कोपशमनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

(श्रीबटुक भैरव से संबंधित अन्य प्रयोगों के लिए श्री शिव उत्सव केंद्र प्रकाशन की 'रुद्राक्ष प्रसंग' पुस्तक देखें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्याम सूत्र प्रयोग।

जब शनि का प्रकोप होता है तब आसुरी शक्तियों का वर्चस्व भी बढ़ जाता है फलस्वरूप बार-बार नजर लगना,किसी आत्मा द्वारा आँशिक रुप में पीड़ित रहना अथवा किन्हीं अन्य कारणों से शरीर शिथिल रहना,दु:स्वप्न आना,घबराहट होना,पूरे शरीर में सनसनी जैसा अनुभव होना या सिर भारी रहना आदि घटनायें आये दिन लगभग होती रहती हैं।

यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसकी चर्चा हम हर किसी के समक्ष नहीं कर सकते हैं,कारण सामान्यत: कुछ लोग इसे वहम मानकर हँसी में उड़ा देंगे और कुछ लोग किसी बाबा के सामने खड़ा कर देंगे जो तिल का ताड़ बनाकर एक नया ही बखेडा खड़ा कर डरायेगा और पैसे भी ऐंठ लेगा।

इन परिस्थितियों में श्याम सूत्र प्रयोग को अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है। सायंकाल में संपन्न होनेवाले इस श्याम सूत्र प्रयोग की सरल विधि यह है कि पहले स्वयं हाथ-पैर और मुँह को धोकर एक आसन पर खड़े हो जायें और परिवार का जो सदस्य बाधा से पीड़ित हो उसे भी अपने हाथ-पैर और मुँह धोकर अपने सामने रखे आसन पर खडे होने के लिए कहें। वहाँ उपस्थित सभी लोगों पर रं रं रं बीज मंत्र का उच्चारण कर जल छिड़कते हुए पवित्रता एवं दिव्य तेज की भावना करें। अब काले रंग का सूती धागा (श्याम सूत्र) लें एवं एक अन्य व्यक्ति की सहायता से सामने खड़े (बाधा से पीड़ित) व्यक्ति को पैर से लेकर शिखा तक उसकी ऊँचाई के बराबर धागे (श्याम सूत्र) को नाप कर तोड़ लें और उस धागें को बिना तोड़े तीन भागों में निम्न प्रकार से मोंड़कर लें। इसके बाद एक साबूत (फूल-वाली खड़ी) लौंग लेकर उस पर इस धागे को लपेटकर गाँठ बाँध दें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

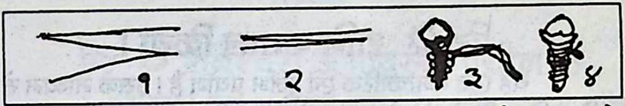

अब पहले से एक पात्र में सरसों का तेल या घी, कपूर के माध्यम से नीम का लकड़ी जलाकर उसमें खड़ी पीलीराई (सरसों) तथा लालमिर्च के बीज डाल-कर पूरे घर में धुआँ देते हुए ॥ ॐ क्रीं क्रीं कालभैरवाय क्रीं क्रीं फट् ॥ मंत्र धीरे-धीरे बोलते जाएँ और अंत में श्याम सूत्र से (काले धागे में) बंधी हुई लौंग को भी उसी में जला दें, इसके बाद अपने हाथ-पैर और मुँह को पुनः धोलें।

उत्तम परिणाम के लिए १५ दिनों तक संध्या समय केवल सरसों का तेल या घी, कपूर के माध्यम से नीम का लकड़ी जलाकर उसमें खड़ी पीली राई (सरसों) तथा लालमिर्च के बीज डालकर पूरे घर में उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए धुआँ दिखाते रहें, तो निश्चय ही आशा के अनुकूल उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। श्याम सूत्र का प्रयोग केवल प्रथम दिन ही किया जाता है।

अनुभूत कदलीफल प्रयोग।

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगल मन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीड़ा तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय॥

अथवा

मंत्र-।। श्री रविनंदनाय नमः प्रसन्नो भव ।।

उपरोक्त श्लोक एक बार या मंत्र ७ बार पढ़कर दिन में कम से कम एक बार केले का सेवन अवश्य करें। इससे शनि पीड़ा के कारण शरीर में उत्पन्न शुष्कता कम होती है और शरीर स्वस्थ रहता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि पाताल क्रिया।

यह एक चमत्कारिक एवं दुर्लभ प्रयोग है। इसके माध्यम से शनि जनित पीड़ा पूर्ण रुपेण शांत हो सकती है।

इस प्रयोग को संपन्न करने के लिए सर्वप्रथम शनि की त्रुटिमुक्त प्रतिमा का निर्माण उत्तराभाद्रपद,पुष्य या अनुराधा नक्षत्र में करवाना चाहिए। इसके बाद शनि की उस प्रतिमा का विधिवत पूजन एवं प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। तत्पश्चात् शनि प्रतिमा के सम्मुख शनि के महामंत्र का कम से कम ९२ हजार, सवा लाख अथवा पाँच लाख जप (पीड़ा,दोष एवं स्थिति के अनुसार) पूर्ण श्रद्धा से करना चाहिए। जप पूर्ण होने के बाद मंत्र जप का दशांश हवन एवं मार्जन विधिवत संप्पन्न करें। तत्पश्चात् बलि विधान करें।

मंत्रः-

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शय्योरभिस्रवन्तु नः॥

उपरोक्त विधि के बाद अब पाताल क्रिया आरंभ करें। शनि पाताल क्रिया के लिए प्रथमतः एक ऐसे शुद्ध स्थल का चुनाव करें जहां जीवन पर्यन्त कभी जाना न हो। स्थल का चुनाव करने के पश्चात् वहां पर एक गहरा गड्ढा खुदवायें एवं बहुत ही गोपनीय विधि से इस गड्ढे में शनि प्रतिमा को उल्टा करके मिट्टी में दबा कर ऊपर से भूमि को समतल कर दें। शनि प्रतिमा का सिर नीचे होने से वह पाताल की तरफ प्रस्थापित हो जाएगी,इससे शनि पीड़ित जातक जीवन पर्यंत शनि पीड़ा से मुक्त रहेगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

☞ ✡ शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग-१

यह अपने आप महत्वपूर्ण प्रयोग है। शनि कष्ट से मुक्ति प्रदान करने वाले विशेष प्रयोगों में इस मंत्र का विशेष स्थान है। शनिवार के दिन जब अमावस्या तिथि हो अर्थात् शनैश्चरी अमावश्या हो,उस दिन काला वस्त्र धारण कर सन्ध्याकाल के समय पश्चिम की ओर मुखकर काले ऊन के आसन पर बैठ जायें। अपने सामने काले वस्त्र का आसन बिछाकर उस पर पाव-किलो काले तिल की ढेरी बना कर उस पर शनि यंत्र स्थापित करें एवं उसके सामने एक लोहे या स्टील के पात्र में सवा-लीटर सरसों का तेल भरकर उसमें सात मुखी रूद्राक्ष डाल दें। अब लोहे की एक कटोरी में दीपक जलाकर, शनिदेव का ध्यानकर शनि यंत्र की कुंकुम,चावल,अगरबत्ती से पूजा करें और काली हकीक माला या रूद्राक्ष माला से शनि के किसी भी मंत्र की इक्कीस माला जप करें। जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र को अपने पूजा स्थान में इस प्रकार स्थापित करें कि यंत्र खड़ा दिखाई दे,उसी के सामने जप की हुई माला भी स्थापित कर दें और सातमुखी रूद्राक्ष को तेल से बाहर निकाल कर उसे शुद्ध जल से धोकर धारण कर लें। तेल में एक बार अपना मुख देखकर उसे पात्र समेत एवं तिल की ढेरी को काले वस्त्र समेत यथाशक्ति दक्षिणासहित किसी वृद्ध अथवा निम्नवर्ण के व्यक्ति या ब्राह्मण को पश्चिम मुख होकर दान में दे दें। अगर दान लेनेवालो न मिले तो,सरसो का तेल और तिल शनि मंदिर में या पीपल वृक्ष का जड़ में भी चढ़ाया जा सकता है। दान करने के पश्चात् पीछे मुड़कर न देखें। इस प्रयोग में शनि यंत्र,रूद्राक्ष या हकीक माला एवं सातमुखी रूद्राक्ष का प्राण-प्रतिष्ठित होना अनिवार्य है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार शनिवार के दिन जब अमावस्या तिथि हो अर्थात् शनैश्चरी अमावश्या हो,उस दिन इस प्रकार से शनिदेव का जप एवं दान उत्तम फल तथा लाभ प्रदान करता है। यह अनुभव सिद्ध है।

☞ ✡ शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग-२

जब परिवार में निरंतर कोई न कोई सदस्य बीमार रहने लगे,रोगी किसी दैवीय अथवा पितृ बाधा से ग्रस्त हो एवं उचित इलाज होने पर भी स्वास्थ्य में लंबे समय तक सुधार न हो तो, शनैश्चरी अमावस्या पर यह प्रयोग अवश्य करें।

यह प्रयोग शनिवार की संध्या में जब अमावस्या हो महाविद्या बगलामुखी देवी का यंत्र,चित्र अपने सामने पीले आसन पर रखकर हल्दी माला या पीली हकीक माला से ११ माला बगलामुखी देवी मंत्र का जप करें और १ माला से पीली सरसो,हवन सामग्री एवं घी से हवन करें। इस प्रयोग में स्वयं के वस्त्र,पूजा के फुल,फल और आसन सभी पीले रंग के होने अनिवार्य हैं। प्रसाद में बेसन के लड्डु रखें। मंत्र के न्यास,ध्यान आदि जप के पहले और बाद में अवश्य करें.

ध्यान

ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभांगरुचि शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरपाशवधरशनां संबिभ्रतीं भूषणं व्याप्तांगीं
बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनीं चिन्तयेत्

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्लीं बगलामुखी परिवारस्य देहस्थितनानारोगान् प्रतिबंधकग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरु कुरु ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिव-प्रार्थना प्रयोग।

(शिव आम्नाय प्रार्थना)

भगवान शिव, शीघ्र प्रसन्न होनेवाले महान देव हैं। यह शनि के गुरू हैं। इनकी नित्य प्रार्थना से शनि पीड़ा निश्चित ही शांत होती है एवं अन्य ग्रहों का दुष्प्रभाव भी समाप्त होता है। भगवान शिव की इस प्रार्थना को अपने दैनिक जीवन में स्थान देकर नित्य पाठ किया जाए तो, पापों का क्षय होकर अवश्य ही पुण्यों का उदय होता है और भगवान शिव की एवं नवग्रहों की कृपा प्राप्त होती है। इस प्रार्थना मंत्र द्वारा शिवलिंग पर नित्य जलाभिषेक करने पर शिव की कृपा से सभी अभिचारिक प्रभावों से रक्षा होती है और भोग एवं मोक्ष सहज हो जाता है।

ॐ गणानां त्वा गणपतिग् हवामहे कविं कवीनामुपम-
श्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत
आ नः शृण्वन्नूतिभिस्सीद सादनम्।

ॐ नमो हिरण्य बाहवे हिरण्य वर्णाय हिरण्य रूपाय
हिरण्यपतये- अम्बिका पतये उमा पतये नमो नमः ॥
ऋतग् सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्ण पिंगलम्। ऊर्ध्व रेतं
विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥
ईशान-स्सर्व विद्यानामीश्वर-स्सर्व-भूतानां ब्रह्माऽधिपति
ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भू र्भुवस्सुव: ॥ ॐ नम: शम्भवे च मयोभवे च नम: शंकराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च ॥

ॐ निधनपतये नम: । निधनपतान्तिकाय नम: । ऊर्ध्वाय नम: । ऊर्ध्वलिंगाय नम: । हिरण्याय नम: । हिरण्यलिंगाय नम: । सुवर्णाय नम:। सुवर्णलिंगाय नम:। भवाय नम:। भवलिंगाय नम:। शर्वाय नम:। शर्वलिंगाय नम:। शिवाय नम:। शिव लिंगाय नम:। ज्वालाय नम: । ज्वललिंगाय नम:। आत्माय नम:। आत्मलिंगाय नम:। परमाय नम:। परमलिंगाय नम:। एतत्सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिंग्ग्ं स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रम् ॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नम:।
भवे भवे नातिभवे भवस्वमाम् । भवोद्भवाय नम: ॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नम: श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नम: कालाय नम: कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बल-प्रमथनाय नम: स्सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नम:॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य: ।
सर्वेभ्य: सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य:॥

सर्वो वै रुद्र-स्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । पुरुषो वै रुद्रस्सन्महो नमो नम:। विश्वभूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत् । सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वो चेम शन्तमगं् हृदे ।
सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

ये ते सहस्त्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे । तान् यज्ञस्य मायया सर्वा नवयजामहे ॥ मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ॐ नमस्ते अस्तु भगवन्विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युंजयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥

ॐ शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे ॥ सदाशिवोम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महामृत्युंजय जप प्रयोग।

ग्रहों(मंगल,शनि,राहु एवं केतु)की मारक/दारुण-पीड़ा शांति,रोग,दु:ख-दारिद्र्य आदि सर्वव्याधिनाश तथा सभी कामनाओं की सिद्धि के लिए महामृत्युंजय जप प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है। नवग्रहादि में यथा सूर्य में सूर्य/शनि/राहु/केतु,चन्द्रमा में सूर्य/गुरु/शुक्र/शनि/केतु,मंगल में मंगल/गुरु/शनि/राहु,बुध में मंगल/गुरु/शनि,गुरु में गुरु/राहु,शुक्र में गुरु/राहु/केतु,शनि में शनि/राहु/गुरु,राहु में गुरु,केतु में केतु/गुरु अनिष्टकारक अथवा दोषयुक्त होने पर भय, बाधा,स्वास्थ्य-हानि,कष्ट,बन्धुवियोग एवं अपमृत्यु होती है। ऐसी स्थिति में योग्य संकल्पानुसार महामृत्युंजय मंत्र का जप करवाकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन,वस्त्र,रजतऔर स्वर्ण दान करने का विधान शास्त्रों में कहा गया है,इसके पश्चात ॥ श्री शिवाष्टोत्तरशतदिव्य-नामामृत स्तोत्रं ॥★ का पाठ करना चाहिए। इससे अनिष्ट एवं ग्रहदोषों की शान्ति होकर आरोग्य,आयु एवं सुख की प्राप्ति होती है। सामान्यत: जन्मपत्रिका में शनि-चन्द्र का विषयोग,सूर्य-चन्द्र का अमावस्या योग,राहु-चन्द्र एवं राहु-सूर्य का ग्रहण दोष, मंगलीदोष, पितृदोष अथवा कालसर्पदोष होने पर महामृत्युंजय जप का अनुष्ठान अवश्य ही करवाना चाहिए।

अथ संकल्पं- अमुकोऽहं अमुकवासरादौ स्वस्य (यजमानस्य वा) निखिलारिष्टनिवृत्तये महामृत्युंजय मन्त्र जपमहं करिष्ये।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठ ऋषय: पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, सदाशिवमहामृत्युंजय-रुद्रो देवता ह्रीं शक्ति:,श्रीं बीजम्,महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्ट--सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षडंगन्यास- वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः।,पंक्तिगायायुष्णि -गनुष्टुप्छंदोभ्यो नमः,वक्त्रे। सदाशिव महामृत्युंजय रुद्र देवतायै नमः, हृदि। ह्रीं शक्तये नमः,लिंगे। श्रीं बीजाय नमः,पादयोः।

करन्यास- ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा। ▲अंगुष्ठाभ्यां नमः॥१॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय। ▲तर्जनीभ्यां नमः॥२॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा।▲मध्यमाभ्यां नमः॥३॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्राँ ह्रौं।▲अनामिकाभ्यां नमः॥४॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय। ▲कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥५॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल माम् रक्ष रक्ष अघोराय। ▲करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः॥६॥

हृदयादि-न्यास- ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा। ▲हृदयाय नमः॥१॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय। ▲शिरसे स्वाहा॥ २॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा। ▲शिखायै वषट्॥ ३॥

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्राँ ह्रौं। ▲कवचाय हं॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रूद्राय त्रिलोचनाय। ▲नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रूद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल मां रक्षरक्षअघोराय।▲अस्त्राय फट् ६॥

अथ ध्यानम्

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः
सिंचंतं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ ।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्दस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम् ॥

ध्यान इस प्रकार करें -'भगवान् मृत्युंजय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों कर कमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रख लिया है। शेष दो हाथों में वे रुद्राक्ष की माला तथा मृगी-मुद्रा धारण किये हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हैं और उनके शिरःस्थ चन्द्र से निरंतर अमृतवृष्टि के कारण उनका शरीर भींगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है,उनके वामांगभाग में गिरिजानन्दिनी भगवती उमा विराजमान हैं।'

मंत्रः-

ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ।
ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह सम्पुटयुक्त मंत्र है, इस मंत्र का सवा लाख संख्या में जप अभीष्ट-सिद्धिदायक माना गया है। जप के उपरांत दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिये।

सर्वव्याधिनाशक लघु मृत्युंजय मंत्र:- ॐ जूँ सः (माम् या जिसके लिए किया जाए उसका नाम) पालय पालय सः जूँ ॐ।

इस मंत्र का ग्यारह लाख या इतना संभव न हो तो, कम-से-कम सवा लाख जप करें। जप संख्या का क्रमश: दशांश हवन अर्थात् जप संख्या का दसवाँ भाग, तर्पण, मार्जनएवं ब्राह्मण भोजन करवायें।

जन्मदिवस के अवसर पर रुद्राक्ष, बिल्वपत्र, बिल्वफल एवं बिल्व की समिधा से महामृत्युंजय मंत्र से यज्ञ करने पर आयुष्य, विद्या, बल एवं धन की प्राप्ति होती है, इसमें रंचमात्र भी संशय नहीं है।

('रुद्राक्ष प्रसंग' पुस्तक से)

॥ श्री शिवाष्टोत्तरशत दिव्यनामामृत स्तोत्र ॥

यह स्तोत्र श्रीमन्नारायण ने देवी पार्वती को प्रदान किया, इस दिव्य स्तोत्र के प्रभाव से उन्होने भगवान् शिव को वर के रुप में प्राप्त किया। इसमें रंचमात्र भी संशय नहीं है कि, भगवान् शिव इस स्तोत्र से प्रसन्न होते हैं और भक्तों के दु:खों का संहार कर उनकी मनोकामना को पुर्ण करते हैं। इस स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करने से भगवान् शिव की कृपा बनी रहती है और मनोरथ स्वत: ही पूर्ण होने लगते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री शिवाष्टोत्तरशत दिव्यनामामृत स्तोत्र ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

शरीरार्धमहं शम्भोर्येन प्राप्स्यामि केशव।
तदिदानीं समाचक्ष्व स्तोत्रं शीघ्रफलप्रदम्॥

॥ नारायण उवाच ॥

अस्ति गुह्यतम गौरि नाम्नामष्टोत्तरम् शतम्।
शम्भोरहम् प्रवक्ष्यामि पठतां शीघ्रकामदम्॥

॥ विनियोग ॥ 'ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशत दिव्यनामामृत स्तोत्रमाला मन्त्रस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवः परमात्मा देवता श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।'

शिवसंकल्प इति हृदयम्। पुरूषसूक्तमिति शिरः।
उत्तरनारायणेति शिखा। अप्रतिरथेति कवचम्।
ॐ विभ्राडिति नेत्रम्। शतरूद्रियमित्यस्त्रम्।
आत्मानं रूद्ररूपं ध्यायेत् (उपरोक्त सूक्तों द्वारा न्यास करें)

॥ ध्यान ॥

धवलवपुषमिन्दोर्मण्डले संनिविष्टम्,
भुजगवलयहारम् भस्मदिग्धांगमीशम्।
हरिणपरशुपाणिम् चारुचन्द्रार्धमौलिम्
हृदयकमलमध्ये सततम् चिन्तयामि॥

'चन्द्रमण्डल में श्री शिव जी विराजमान हैं, उनका गौर शरीर है, सर्प का ही कंगन तथा सर्प का ही हार पहने हुए हैं तथा शरीर में भस्म लगायें हुए हैं, उनके हाथों में मृगी- मुद्रा एवं परशु है और अर्धचन्द्र सिर पर विराजमान है। मैं उन भगवान् शंकर का हृदय में अहर्निश चिंतन करता हूँ।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री शिवाष्टोत्तरशत दिव्यनामामृतस्तोत्रम्

शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः ।
वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः ॥
शंकरः शूलपाणिश्च खट्वांगी विष्णुवल्लभः ।
शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः ॥
भवः शर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः ।
उग्रः कपालिः कामारिरन्धकासुरसूदनः ॥
गंगाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः ।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥
कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः ।
वृषांको वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥
सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः ।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः॥
हविर्यज्ञमयः सोमः पंचवक्त्रः सदाशिवः।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥
हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः।
भुजंगभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः ॥
कृत्तिवासा पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः ।
मृत्युंजयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः ॥
व्योमकेशो महासेनजनकश्चारुविक्रमः ।
रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगंम्बरः ॥
अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ।
शाश्वतः खण्डपरशुरजपाशविमोचकः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः।
पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः॥
भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः॥

एतदष्टोत्तरशतनाम्नामाम्नायेन सम्मितम्।
विष्णुना कथितं पूर्वं पार्वत्या इष्टसिद्धये॥
शंकरस्य प्रिया गौरी जपित्वा त्रैकालमन्वहम्।
नोदिता पद्मनाभेन वर्षमेकम् प्रयत्नतः॥
अवाप सा शरीरार्ध प्रसादाच्छूलधारिणः।

यस्त्रिसंध्यम् पठेच्छम्भोर्नाम्नामष्टोत्तरम् शतम्॥
शतरुद्रित्रिरावृत्त्या यत्फलम् प्राप्यते नरैः।
तत्फलम् प्राप्नुयादेतदेकवृत्त्या जपेन्नरः॥
बिल्वपत्रैः प्रशस्तैर्वा पुष्पैश्च तुलसीदलैः।
तिलाक्षतैर्यजेद् यस्तु जीवन्मुक्तो न संशयः॥
नाम्नामेषाम् पशुपतेरेकमेवापवर्गदम्।
अन्येषाम् चावशिष्टानाम् फलम् वक्तुम् न शक्यते॥

इति श्रीशिवरहस्ये गौरीनारायणसंवादे
श्रीशिवाष्टोत्तरशतदिव्यनामामृतस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

('रुद्राक्ष प्रसंग' एवं 'सौभाग्य चिंतामणि' पुस्तक से)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ✡ हनुमान प्रयोग।

॥ हनुमद्स्मरण ॥

मंजुल मंगल मोदमय, मूरति मारुत पूत।
सकल सिद्धि कर कमल तल, सुमिरत रघुबर दूत॥
धीर बीर रघुबीर प्रिय, सुमिरि समीर कुमारु।
अगम सुगम सब काज करु, करतल सिद्धि बिचारु॥

श्रीरामजी के दूत वायुपुत्र श्रीहनुमानजी मनोहर मंगल और आनंद की मूर्ति हैं। उनका स्मरण करते ही समस्त सिद्धियाँ करतल-गत (सुलभ) हो जाती हैं। धीर,वीर श्रीरघुवीर के प्यारे पवनकुमार का स्मरण करके चाहे जैसे दुर्लभ या सुलभ सब काम करो,निश्चय रखो कि उनकी सफलता तुम्हारे हाथ में ही रखी है।

अखिल विजय मंत्र

ध्यान

महाशैलम् समुत्पाट्य धावन्तम् रावणम् प्रति॥
लाक्षारसारुणम् रौद्रम् कालान्तकयमोपमम्।
ज्वलदग्निसमम् जैत्रम् सूर्यकोटिसमप्रभम्॥
अंगदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितम् रुद्ररूपिणम्।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट सृजन्तम् घोरनिःस्वनम्॥
शैवरूपिणमभ्यर्च्य ध्यात्वा लक्षम् जपेन्मनुम्।

"हनुमान्‌जी एक बहुत बड़ा पर्वत उखाड़कर रावण की ओर दौड़ रहे हैं। वे लाक्षा (महावर) के रंग के समान अरूणवर्ण हैं। काल, अन्तक तथा यम के समान भयंकर जान पड़ते हैं,उनका तेज प्रज्वलित अग्नि के समान है। ये विजयशील तथा करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी हैं। अंगद आदि महावीर उन्हें चारों ओर से घेर कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चलते हैं। वे साक्षात् रूद्रस्वरूप हैं। भयंकर सिंहनाद करते हुए वे रावण से कहते हैं।-'अरे ओ दुष्ट! युद्ध में खड़ा तो रह!'इस प्रकार शिवावतार भगवान् हनुमानजी का ध्यान और पूजन करके एक लाख मंत्र का जप करना चाहिए।''

मंत्र :- ॥ हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुँ फट् ॥

मंत्र जप पूर्ण होने पर दूध,दही और घी मिलाये हुये चावल से दशांश होम करें। यह मंत्र अत्यंत शक्तिशाली और तेजस्वी है। बड़े से बड़ा पाप एवं दोष नाशक यह मंत्र पुण्य एवं शीघ्र सिद्धि प्रदान करने में समर्थ है। इस मंत्र का साधन करने पर विजयश्री अनुगमन करने लगती है।

अभीष्ट-लाभ एवं रक्षा के लिए :-

अंजनीगर्भसम्भूत कपीन्द्रसचिवोत्तम।
रामप्रिय नमस्तुभ्यम् हनूमन् रक्ष सर्वदा॥

आत्मरक्षण,शत्रुनिवारण एवं सम्पत्ति प्राप्ति हेतु :-

मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशन।
शत्रून् संहर मां रक्ष श्रियम् दापय मे प्रभो॥

सभी विपत्तियों का निवारण,सर्वसम्पत्तियों की पुनः प्राप्ति एवं सभी प्रकार के अभीष्ट सिद्धि हेतु :-

आपदामपहर्तारम् दातारम् सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामम् श्रीरामम् भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

हनुमानजी के किसी भी जप प्रयोग के अंत में प्रतिदिन हनुमान चालिसा और बजरंग बाण का पाठ मनसा-वाचा-कर्मणा शुद्ध होकर अवश्य करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वत्र विजयश्री मारुति स्तोत्र

इस स्तोत्र की सभी पक्तियाँ हनुमद् मंत्र के अक्षरों से आरंभ होती है।

'ॐ नमो भगवत आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।'

ॐ नमो वायुपुत्राय भीमरूपाय धीमते।
नमस्ते रामदूताय कामरूपाय श्रीमते ॥१॥
मोहशोकविनाशाय सीताशोकविनाशिने।
भग्नाशोकवनायास्तु दग्धलंकाय वाग्मिने ॥२॥
गतिनिर्जितवाताय लक्ष्मणप्राणदाय च।
वनौकसां वरिष्ठाय वशिने वनवासिने ॥३॥
तत्त्वज्ञानसुधासिन्धुनिमग्नाय महीयसे।
आंजनेयाय शूराय सुग्रीवसचिवाय ते ॥४॥
जन्ममृत्युभयघ्नाय सर्वक्लेशहराय च।
नेदिष्ठाय प्रेतभूतपिशाचभयहारिणे ॥५॥
यातनानाशयास्तु नमो मर्कटरूपिणे।
यक्ष- राक्षस- शार्दूल- सर्प - वृश्चिक- भीहृते ॥६॥
महाबलाय वीराय चिरंजीवन उद्धते।
हारिणे वज्रदेहाय चोल्लंघितमहाब्धये ॥७॥
बलिनामग्रगण्याय नमो नः पाहि मारुते।
लाभदोऽसि त्वमेवाशु हनुमन् राक्षसान्तक ॥८॥
यशो जयम् च मे देहि शत्रुन् नाशय नाशय।
स्वाश्रितानामभयदम् य एवम् स्तौति मारुतिम्।
हानिः कुतो भवेत्तस्य सर्वत्र विजयी भवेत् ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हनुमान चालीसा।

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन - कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि- पुत्र पवन सुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुःख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनि चालीसा।

दोहा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन को दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय-जय श्रीशनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

जयति-जयति शनिदेव दयाला। करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा तन श्याम विराजै। माथे रतन मुकुट छबि छाजै॥
परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमकै। हिये भाल मुक्तन मणि दमकै॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा। पल विच करैं अरिहिं संहारा॥
पिंगल कृष्णो छाय नन्दन। यम कोणस्थ रौद्र दुःख भंजन॥
सौरी मन्द शनी दश नामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥
जापर प्रभु प्रसन्न होई जाहीं। रंकहु राउ करें क्षण माहीं॥
पर्वतहू तृण होई निहारत। तृणहू को पर्वत कर डारत॥
राज मिलन बन रामहि दीन्हा। कैकेइहुँ की मति हरि लीन्हा॥
बनहू में मृग कपट दिखाई। मात जान की गयी चुराई॥
लखनहि शक्ति विकल करि डारा। मचिगे दल में हाहाकारा॥
रावण की गति मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका। बजि बजरंग बीर को डंका॥
नृप विक्रम पर जब पगु धारा। चित्र मयूर निगिल गै हारा॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी। हाथ पैर उरवायो तोरी॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो। तेलिहुँ घर कोल्हू चलवायो॥
विनयराग दीपकमहँ कीन्ह्यो। तब प्रसन्नप्रभु होईसुख दीन्ह्यों॥
हरिश्चन्द्रहुँ नृप नारि बिकानी। आपहुँ भरे डोम घर पानी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैसे नल पर दशा सिरानी । भूंजी मीन कूद गयी पानी ॥
श्री शंकरहि गह्यो जब जाई । पारवती को सती कराई ॥
तनिक बिलोकतही करि रीसा । नभ उड़िगयो गौरिसुत सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी । बची द्रौपदी होति उघारी ॥
कौरव के भी गति मति मार्‍यौ । युद्ध महाभारत करि डार्‍यौ ॥
रवि कहँ मेह मुख धरि ततकाला । लेकर कूदि पर्‍यौ पाताला ॥
शेष देव लखि विनती लाई । रवि को मुख ते दियो छुड़ाई ॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना । गज दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना ॥
जम्बुक सिंह आदि नखधारी । सोफल ज्योतिष कहत पुकारी ॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवें । हय ते सुख सम्पत्ति उपजावे ॥
गर्दभ हानि करै बहु काजा । सिंह सिद्धकर राज समाजा ॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट करि डारै । मृग दे कष्ट प्राण संहारै ॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी । चोरी आदि होय डर भारी ॥
तैसहिं चारि चरण यह नामा । स्वर्ण लौह चाँदी अरू तामा ॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवें । धन जन सम्पत्ति नष्ट करावें ॥
समता ताम्र रजत शुभकारी । स्वर्ण सर्व सुखमंगल भारी ॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै । कबहुँ न दशा निकृष्ट सतावै ॥
अद्भुत नाथ दिखावें लीला । करें शत्रु के नशि बल ढीला ॥
जो पंडित सुयोग्य बुलवाई । विधिवत शनिग्रह शांति कराई ॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत । दीप दान दै बहु सुख पावत ॥
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा । शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अनुष्ठान प्रयोग ॥

॥ शनैश्चर जयन्तियाँ ॥

(वर्ष २०११ से २०९० तक)

वर्ष २०२० तक	वर्ष २०३० तक	वर्ष २०४० तक	वर्ष २०५० तक
०१/०६/२०११	१०/०६/२०२१	२१/०५/२०३१	२९/०५/२०४१
२०/०५/२०१२	३०/०५/२०२२	०८/०६/२०३२	१९/०५/२०४२
०८/०६/२०१३	१९/०५/२०२३	२८/०५/२०३३	०७/०६/२०४३
२८/०५/२०१४	०६/०६/२०२४	२८/०५/२०३४	२७/०५/२०४४
१८/०५/२०१५	२१/०५/२०२५	०६/०६/२०३५	१६/०५/२०४५
०५/०६/२०१६	१६/०५/२०२६	२५/०५/२०३६	०४/०६/२०४६
२५/०५/२०१७	०४/०६/२०२७	१५/०५/२०३७	२५/०५/२०४७
१५/०५/२०१८	२४/०५/२०२८	०३/०६/२०३८	११/०६२२०४८
०३/०६/२०१९	१२/०६/२०२९	२३/०५/२०३९	३१/०५/२०४९
२२/०५/२०२०	०१/०६/२०३०	०९/०६/२०४०	२०/०५/२०५०
वर्ष २०६० तक	**वर्ष २०७० तक**	**वर्ष २०८० तक**	**वर्ष २०९० तक**
०८/०६/२०५१	१९/०५/२०६१	२९/०५/२०७१	०७/०६/२०८१
२८/०५/२०५२	०७/०६/२०६२	०८/०५/२०७२	२७/०५/२०८२
१८/०५/२०५३	२८/०५/२०६३	०५/०६/२०७३	१६/०५/२०८३
०६/०६/२०५४	१६/०५/२०६४	२५/०५/२०७४	०३/०६/२०८४
२६/०५/२०५५	०४/०६/२०६५	१३/०६/२०७५	२३/०५/२०८५
१३/०६/२०५६	२४/०५/२०६६	०१/०६/२०७६	११/०६/२०८६
०२/०६/२०५७	११/०६/२०६७	२२/०७/२०७७	०१/०६/२०८७
२५/०५/२०५८	३१/०५/२०६८	१०/०६/२०७८	२०/०५/२०८८
१०/०६/२०५९	२०/०५/२०६९	३०/०५/२०७९	०८/०६/२०८९
२९/०५/२०६०	०८/०६/२०७०	१९/०५/२०८०	२९/०५/२०९०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनैश्चरी अमावस्याएँ ॥

(वर्ष २०११ से २०३६ तक)

०३/०७/२०११	११/०८/२०१८	०३/०८/२०२४	१७/०७/२०३१
२४/१२/२०११	०५/०६/२०१९	३०/११/२०२४	१५/११/२०३१
२१/०४/२०१२	०४/०५/२०१९	२९/०३/२०२५	१३/१२/२०३१
१५/०९/२०१२	२८/०९/२०१९	२३/०८/२०२५	१०/०४/२०३२
०२/०२/२०१३	२५/०१/२०२०	२०/१२/२०२५	०८/०५/२०३२
०८/०६/२०१३	२२/०२/२०२०	१६/०१/२०२६	०४/०९/२०३२
०५/१०/२०१३	२०/०६/२०२०	०१/१०/२०२६	०१/०१/२०३३
०२/११/२०१३	१७/१०/२०२०	०६/०२/२०२७	२८/०५/२०३३
०१/०३/२०१४	१४/११/२०२०	०५/०६/२०२७	०८/१०/२०३३
२६/०७/२०१४	१३/०३/२०२१	०३/०७/२०२७	२२/१०/२०३३
१२/०९/२०१५	१०/०७/२०२१	२७/११/२०२७	१८/०२/२०३४
०९/०१/२०१६	०७/०८/२०२१	२५/०३/२०२८	१५/०७/२०३४
०७/०५/२०१६	०४/१२/२०२१	२२/०७/२०२८	११/११/२०३४
०४/०६/२०१६	३०/०४/२०२२	१९/०८/२०२८	०९/१२/२०३४
०१/१०/२०१६	२७/०८/२०२२	१६/१२/२०२८	१०/०३/२०३५
१९/१०/२०१६	२१/०१/२०२३	१३/०१/२०२९	०७/०४/२०३५
२८/०१/२०१७	१७/०६/२०२३	१४/०४/२०२९	०१/०९/२०३५
२५/०२/२०१७	१४/१०/२०२३	१२/०५/२०२९	२५/१२/२०३५
२४/०६/२०१७	१०/०२/२०२४	०८/०९/२०२९	२६/०४/२०३६
२२/०७/२०१७	०९/०३/२०२४	०१/०६/२०३०	२०/०९/२०३६
१८/११/२०१७	०६/०७/२०२४	२६/१०/२०३०	१८/१०/२०३६
१७/०३/२०१८		२२/०३/२०३१	

विशेष-शनैश्चर जयंती एवं अमावस्या के दिवसों पर जप, पूजा, यज्ञ और दान का विशेष महत्व होता है, इसलिए इन अवसरों का लाभ अवश्य लेना चाहिए। श्री शिव उत्सव केंद्र द्वारा इन दिवसों पर विशेष यज्ञ एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, पाठक वर्ग केंद्र से संपर्क कर इसका लाभ ले सकते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शीघ्र सफलता दायक,उपयोगी कुछ मंत्र ॥

गुरु मंत्रः- ॐ श्रीं श्रीं गुरुवर प्रदाय श्रीं नमः॥
गणपति मंत्र-ॐ गं गणपतये नमः।
भैरव मंत्र-ॐ ह्रीं भं भैरवाय नमः।
गायत्री मंत्र :-ॐ भू र्भुवः स्वः तत्स वितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥
चेतना मंत्रः-ॐ ह्रीं मम् प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः॥
अमृत मंत्रः- ॐ आत्मप्राण चैतन्यपूर्णत्व सिद्धिं ऐं ह्रीं श्रीं नमः ॥
तेजस् मंत्रः- ॐ ह्रीं हुं हुं तेजसे हुं हुं ह्रीं ॐ फट् ॥
कायाकल्प मंत्रः- ॐ मम समस्त देह रोम अंतर्बाह्य जाग्रय कायाकल्पाय फट् ॥
प्रायश्चित मंत्र-ॐ भूताय त्वां देह प्रायश्चितं परिमार्जन देह भूताय फट् ॥
वरवरद गणपति मंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
वाग्वादिनी मंत्र :- ऐं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ॥
वाक्शक्ति एवं स्मृति हेतू मंत्रः- ऐं शक्ति चालिनी उभय ऐं ॥
आत्म रक्षण मंत्रः- ॐ दुर्गे रक्षिणि हूँ हूँ फट् स्वाहा ॥
नृसिंह गायत्री मंत्रः- नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि । तन्नो नृसिंह प्रचोदयात् ॥
सुदर्शन मंत्रः- श्रीं ह्रीं ॐ सुदर्शनचक्राय रिपुचित्तं भ्रामय स्वाहा ॥
संतानप्रद गोपाल मंत्रः-क्लीं देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शनि यज्ञ (संक्षिप्त विधान) ॥

स्वयं तथा उपस्थित लोगों पर मंत्र उच्चारण करते हुए जल छिड़के।

पावित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आचमन

क्रमशः हथेली में जल लेकर मंत्र उच्चारण कर पीयें।

ॐ नारायणाय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

आचमन के बाद निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए हाथ धोकर पोंछ लें।

ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

सुचना-हाथों में हल्दी-कुंकुम से रंगे अक्षत,पुष्प लेकर पूजा की गई सामग्री को,जिस देवता का ध्यान,आवाहन या पूजन करें,उस देवता का आसन जहाँ स्थापित हो वहीं या उसके सामने पान के पत्ते पर नैवेद्य,सुपारी सहित चढ़ा (रख) दें।

दीप नमस्कार

दीपक प्रज्वलित कर हल्दी-कुंकुम रंगे अक्षत,पुष्प लेकर हाथ जोड़ें।

दीपज्योतिः परं ब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोस्तु ते ॥
दं दीपनाथाय नमः॥

गुरू ध्यानम्

हल्दी-कुंकुम से रंगे अक्षत,पुष्प लेकर हाथ जोड़ें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
ॐ श्री श्री गुरुवर प्रदाय श्री नमः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गणपति ध्यानम्

हल्दी-कुंकुम से रंगे अक्षत, पुष्प लेकर हाथ जोड़ें।

ॐ गणानां त्वा गणपति ग्वं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः। शृण्वन्नूतिभिस्सीद सादनम्॥
ॐ गं गणपतये विघ्नेश्वराय नमः॥

आसन पूजा

हल्दी-कुंकुम से रंगे अक्षत, पुष्प लेकर हाथ जोड़ें।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।
ॐ ह्रीं कमलासनाय नमः॥

हल्दी-कुंकुम रंगे अक्षत, पुष्प अपने आसन के अग्रभाग पर चढ़ा दें।

आत्मपूजा

स्वयं तथा उपस्थित लोगों को तिलक लगाकर अक्षत, पुष्प स्वयं पर डालते हुए मंत्रोच्चार करें।

देहो देवालयः प्रोक्तः जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहम भावेन पूजयेत्॥

शनैश्चर ध्यानम्, आवाहनम्

हल्दी-कुंकुम से रंगे अक्षत, पुष्प लेकर शनि ध्यान, पूजन करें।

ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः, शनैश्चर इहागच्छ, शनैश्चर, नीलवर्ण, नीलगंधं, नीलपुष्पं, नीलमाल्यांबरधरं, नीलच्छत्रध्वज-रथ-पताकादिशोभितं, दिव्यरथं समारुढं, मेरुं, प्रदक्षिणीकुर्वाणं, चापासनस्थं, प्रत्यंमुखं, गृध्र-रथं, चतुर्भुजं, शूलायुधं, सौराष्ट्रदेशाधिपतिं, काश्यपसगोत्रं, मकर-कुंभ- राश्याधिपतिं, किरीटिनं सुखासीनं पत्नीपरिवारसहितं, ग्रह-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंडले,प्रविष्टं,अस्मिन् अधिकरणे,सूर्यग्रहस्य पश्चिमदिग्भागे, धनुरा आकार मण्डले,शनैश्चरग्रहं अधिदेवतां प्रजापतिं, प्रत्यधिदेवता, धर्म-राजं अधिदेवता,प्रत्याधिदेवतासहितं शनैश्चरं ध्यायामि आवाहयामि, स्थापयामि,पूजयामि।

संकल्प

कुंकुम,अक्षत,पुष्प,सुपारी,जल एवं मुद्रा हाथ में लेकर संकल्प करें।

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मनें श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोऽर्ह्निं द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे- वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त अन्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथा अयने सूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे यथा नक्षत्रे यथा राशिस्थिते सूर्ये यथा यथा राशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्नमुहूर्त योग करणान्विता-याम् एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिकामः(स्वयंका)गोत्रः (स्वयंका) नाम अहम् स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुस्स्थानगत -ग्रहजन्य - सकलारिष्ट-निवृत्यर्थम्-उत्पन्न-उत्पत्स्यमान अखिलारिष्ट निवृत्तये दीर्घायुष्य सतत आरोग्यता वाप्तये धन-धान्य समृद्ध्यर्थम् च - कायिक - वाचिक - मानसिक - सांसर्गिक-चतुर्विध पुरुषार्थ-प्राप्त्यर्थम् च -धन -धान्य- पुत्र-पौत्रादि - अनवच्छिन्न-सत्संगति-लाभार्थम्-शत्रु-पराजय-बहुकीर्त्यादि-अनेकानेकअभ्युदय-फल प्राप्त्यर्थम् यज्ञ, दानं करिष्ये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निर्मुखं प्रथमो देवतानाम्
सभी देवताओं का मुख अग्नि हैं इसलिए यज्ञ में
अग्निं वै देवाना प्रथमं यजेत् ।
सभी देवताओ के पहले के पहले अग्नि पूजन कर आहुति प्रदान करें ।

अग्निम् पूजनम्

यज्ञ के लिए समिधा एवं हवन सामग्री की उचित व्यवस्था कर यज्ञ वेदी में अग्नि प्रज्वलित कर लें और हल्दी, कुंकुम, अक्षत, पुष्प लेकर अग्नि पूजन के लिए हाथ जोड़ें ।

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम् ॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षि शिरोमुखः।
विश्वरुपो महानग्निः प्रणीत सर्वकर्मसु ॥

अग्निदेव से प्रार्थना करें हल्दी, कुंकुम, अक्षत, फल, पुष्प नैवेद्य चढ़ायें ।

विधिनाम्ने अग्नये नमः। सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।

हल्दी, कुंकुम, अक्षत, पुष्प से अग्नि की सप्त जिव्हा का पूजन करें ।

ॐकराल्यै नमः। ॐधूमिन्यै नमः। ॐश्वेतायै नमः।ॐलोहितायै नमः।
ॐमहालोहितायै नमः। ॐसुवणायै नमः। ॐपद्मरागायै नमः।

यज्ञ में घृत आहुति प्रदान करें ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम ।
ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय न मम ।
ॐ अग्नये स्वाहा-इदमग्नये न मम ।
ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम ।
ॐ भूःस्वाहा- इदमग्नये न मम ।
ॐ भुवःस्वाहा-इदं वायवे न मम ।
ॐ स्वःस्वाहा -इदं सूर्याय न मम ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञ में घृत एवं हवन सामग्रीयों की आहुतियाँ प्रदान करें।

ॐ श्री श्री गुरुवर प्रदाय श्री नमः स्वाहा- इदं गुरुवे न मम ॥१॥
ॐ गं गणपतये नमः स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रीं भं भैरवाय नमः स्वाहा ॥३॥
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः स्वाहा ॥४॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः स्वाहा ॥५॥
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः स्वाहा ॥६॥ ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः स्वाहा ॥७॥
ॐ भू र्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् स्वाहा ॥८॥

नवग्रह मंत्र

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः स्वाहा ॥१॥
ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः स्वाहा ॥२॥
ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः स्वाहा ॥३॥
ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः स्वाहा ॥४॥
ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः बृहस्पतये नमः स्वाहा ॥५॥
ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः स्वाहा ॥६॥
ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः स्वाहा ॥७॥
ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः स्वाहा ॥८॥
ॐ स्राँ स्रीं स्रौं सः केतवे नमः स्वाहा ॥९॥

राशियों के मंत्र

१.मेष -ॐ ऐं क्लीं सौः स्वाहा । २.वृषभ -ॐ ऐं क्लीं श्रीं स्वाहा।
३.मिथुन -ॐ क्लीं ऐं सौः स्वाहा। ४.कर्क -ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा।
५.सिंह -ॐ ह्रीं श्रीं सौः स्वाहा। ६.कन्या - ॐ क्लीं ऐं सौः स्वाहा।
७.तुला-ॐ ऐं क्लीं श्रीं स्वाहा। ८.वश्चिक - ॐ ऐं क्लीं सौः स्वाहा।
९.धनु-ॐ ह्रीं क्लीं सौः स्वाहा।१०.मकर-ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः स्वाहा।
११.कुंभ-ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं स्वाहा। १२.मीन-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशमहाविद्या मंत्र नवग्रह क्रमांनुसार

१.लग्न-त्रिपुरभैरवी- ॥ हसैं हसकरीं हसैं स्वाहा ॥

२.सूर्य-मातंगी-॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ॥

३.चंद्र-भुवनेश्वरी-॥ ह्रीं स्वाहा ॥

४.मंगल-बगलामुखी-॥ॐह्लीं बगलामुखी सर्व्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

५.बुध-षोडशीत्रिपुरसुंदरी -॥ ह्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा ॥

६.गुरु-तारा-॥ ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा ॥

७.शुक्र-कमला-॥ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौ:जगत्प्रसूत्यै नम:स्वाहा ॥

८.शनि-काली-॥ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा ॥

९.राहु-छिन्नमस्ता-॥श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ॥

१०.केतु-धूमावती-॥ धूं धूं धूमावती ठ: ठ: स्वाहा ॥

पुराणोक्त शनि मंत्र

ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्ष: शिवप्रिय: ।
मन्दचार: प्रसन्नात्मा पीड़ां हरतु मे शनि: स्वाहा ॥१॥

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् स्वाहा ॥२॥

वेदोक्त शनि मंत्र

॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।
शय्योरभि स्रवन्तु न: स्वाहा ॥ १॥

तान्त्रोक्त शनि मंत्र ॥ ॐ खाँ खीं खौं स: ॐ भूर्भुव: स्व: भुव: भू: ॐस:खौं खीं खाँ ॐ शनैश्चराय नम:स्वाहा ॥१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः स्वाहा ॥२॥
॥ ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः स्वाहा ॥३॥
॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं शनैश्चराय नमः स्वाहा ॥४॥

शनि गायत्री मंत्र - ॥ ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि
तन्नः शौरिः प्रचोदयात् स्वाहा ॥

शनिदेव या जिस मंत्र का जप किया गया हो, उस मंत्र का दशांश संख्या में काले तिल व निर्धारित हव्य सामग्री से आहुति प्रदान करें

हनुमद् मंत्र

॥ हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुँ फट् स्वाहा ॥

अभीष्ट-लाभ एवं रक्षा के लिए :-

अंजनीगर्भसम्भूत कपीन्द्र सचिवोत्तम ।
रामप्रिय नमस्तुभ्यम् हनूमन् रक्ष सर्वदा स्वाहा ॥

आत्मरक्षण, शत्रुनिवारण एवं सम्पत्ति प्राप्ति हेतु :-

मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशन ।
शत्रून् संहर मां रक्ष श्रियम् दापय मे प्रभो स्वाहा ॥

सभी विपत्तियों का निवारण, सर्वसम्पत्तियों की पुनः प्राप्ति एवं सभी प्रकार के अभीष्ट सिद्धि हेतु :-

आपदामपहर्तारम् दातारम् सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामम् श्रीरामम् भूयो भूयो नमाम्यहम् स्वाहा ॥

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ । सः जूँ हौं ॐ स्वाहा ।

शिव आम्नाय मंत्र

ॐ ईशान-स्सर्व-विद्यानामीश्वर-स्सर्वभूतानां ब्रह्माऽधिपति र्ब्रह्मणो-धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् स्वाहा ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्वमाम् । भवोद्भवाय नमः स्वाहा ॥२॥

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कालाय नमः कल-विकरणाय नमो बल-विकरणाय नमो बलाय नमो बल-प्रमथनाय नमः सर्व-भूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः स्वाहा ॥३॥

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रूद्ररूपेभ्यः स्वाहा ॥४॥

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रूद्रः प्रचोदयात् स्वाहा ॥५॥

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव-बन्धनान्- मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा ॥६॥

यज्ञ की पूर्णाहुति-यज्ञ की पूर्णाहुति हेतु श्रीफल,सुपारी के साथ हरिद्रा,कुंकुम, अक्षत,घृत,मिष्ठान एवं थोड़ी-सी यज्ञ सामग्री लेकर हाथ जोड़ें और निम्न मंत्र बोलते हुए उसे श्रद्धा से यज्ञकुंड में छोड़ दे।

ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽ आ जातमग्निं। कविं ख्वँ सम्राजमतिथिम् जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

अब पात्र में बचे हुए शेष घृत को यज्ञकुंड के मध्य भाग में जहाँ पूर्णाहुति डाली गई है,ठीक उसके ऊपर बिना धार रोके (घृत) गिराते हुए वसोर्धारा मंत्र बोलें।

वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसिसहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ सप्तते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।

घृतादि शेष सामग्री को निम्न वाक्य को उच्चारण करते हुए अग्नि में छोड़ दें।

इदमग्नये वैश्वानराय न मम।

यज्ञ (अग्नि) देव प्रार्थना मंत्र

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्।
आयुष्यं द्रव्यं आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥
भो भो वन्हे महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधक।
कर्मान्तरे अपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम समृध्यर्थ पुनरागमनाय च॥

प्रदक्षिणा मंत्र

ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

देव प्रणाम मंत्र

ओम् नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टांगोयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥

क्षमा प्रार्थना

यदक्षर पदभ्रष्ट मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत् सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद सुरेश्वर्॥

(यज्ञ विधान से संबंधित अन्य प्रयोगों के लिए श्री शिव उत्सव केंद्र प्रकाशन की 'रुद्राक्ष प्रसंग' एवं 'सौभाग्य चिंतामणि' पुस्तक देखें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

|| श्री शनि-हनुमान महायज्ञ ||

देवतोद्देशेन हविस्त्यागः

शनि एवं रोग, शत्रु, अभाव आदि बाधा निवारण हेतु

यज्ञ का आत्यन्तिक प्रयोजन है यज्ञकर्ता का देवताओं के साथ परस्पर-भावन। मनुष्य को हर पल दैवी सहायता की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए उसे तो देवताओं का मुखापेक्षी होना ही पड़ता है, किन्तु हवि के लिए देवताओं को भी मनुष्य की ओर उन्मुख होना पड़ता है। इस प्रकार दोनों का परस्पर-भावन दृढ़ हो जाता है।

हमें अत्यंत प्रसन्नता है, कि पूज्य कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी (के निर्देशन) की उपस्थिति में 'श्री शिव उत्सव केंद्र' द्वारा संपन्न हो रहे 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' से हजारों शनि-पीड़ित लोगों को शांति और अनुकूलतायें मिली हैं। इसके माध्यम से लोगों ने जो लाभ अर्जित किया है, वह वास्तव में ही अंधेरे में प्रकाश की तरह है। यह उनके द्वारा नित्य आने वाले फोन एवं पत्रों से स्पष्ट है।

केन्द्र दवारा 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' से प्रतिवर्ष हजारों लोग लाभन्वित हो रहे हैं। महायज्ञ में भाग लेने के पश्चात उनकी पीड़ा तो शांत होती ही है, साथ ही वे वह सब कुछ प्राप्त कर रहे हैं, जो उनकी आवश्यकता या अभिलाषा रही है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह महायज्ञिय आयोजन उन सभी लोगों (पीड़ितों) को अनुकूलता प्रदान करता है, जिन पर साढ़ेसाती या ढैय्या चल रही है अथवा जन्मकुंडली में शनि के किसी स्थान विशेष में होने के कारण या महादशा/अंतर्दशा की अवस्था होने से कष्टकर पीड़ा हो रही है। साथ ही यह आयोजन उनके लिए भी कल्याणकारी एवं महत्वपूर्ण है, जिन्हें शनि के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह से भी बाधा है।

आज जब इस तेजी से भागते युग में जप-पूजन विधान जन-सामान्य के लिए समय एवं साधन के अभाव में सहज नहीं है, इस प्रकार का आयोजन मील के पत्थर के समान है।

महायज्ञ का माध्यम ही क्यों?

ब्रह्माण्ड में देवता सृष्टि के शक्तिशाली प्रशासक हैं। जीव जन्म से लेकर मृत्यु तक शरीर एवं प्रकृति पर निर्भर रहता है। जीव के जीवन क्रम में उसकी समस्त आपूर्ति का उत्तरदायित्व देवताओं पर रहता है। इस उत्तरदायित्व की पूर्ति हेतु करोड़ो रुप धारण कर देवता अपना कर्म करते हैं। देवताओं की प्रसन्नता और अप्रसन्नता मनुष्य के यज्ञ पर निर्भर है, आवश्यकता है देवताओं के सही स्वरुप को जानकर उनके योग्य वस्तु उन्हें यज्ञ के माध्यम से प्रदान करने की।

श्रीमद्भगवद्गीता कर्मयोग के तृतीय अध्याय के ग्यारहवें श्लोक में भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं कि.

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः
परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥११॥

अर्थात् यज्ञों से प्रसन्न होकर देवता तुम्हें भी प्रसन्न करेंगे। इस प्रकार परस्पर एक दूसरे के पोषण से सर्वत्र सबके लिए समृद्धि हो जायेगी।

केन्द्र की ओर से 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' का आयोजन शनैश्चरी-अमावस्या और शनि-जयंती के अवसर पर वर्ष में दो या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तीन बार ही आयोजित किया जाता है। इस आयोजन में लगने वाली समस्त पूजन-सामग्री केन्द्र द्वारा ही उपलब्ध करायी जाती है।

केन्द्र के श्रेष्ठतम् विद्वानों एवं कर्मकांडीय ब्राह्मणों के द्वारा पूर्ण विधि-विधान से संपन्न होने वाले इस आयोजनमें उपस्थित होना ही अपने आप में सौभाग्य का सूचक है।

इस आयोजन में कोई भी सम्मिलित हो सकता है, पर इसके लिए आवश्यक है कि,समय रहते हुये आपका (यज्ञ में सहभागी होने वाले महानुभाव) नाम हमारे पास पहुँच जाना चाहिए,क्योंकि कभी-कभी यज्ञ में भाग लेने वालों की निर्धारित संख्या पहले की अपेक्षा बढ़ जाती है,इस कारण हमें कुछ अतिरिक्त यज्ञकुंड बनाने पड़ते हैं। इससे यज्ञ आयोजन में विलंब तो होता ही है,जो असुविधा होती है, सो अलग। अत:आयोजन में भाग लेने के लिए बहुत पहले से ही आप अपना स्थान आरक्षित करवा लें। जिससे कि हम यज्ञशाला में आपका स्थान आरक्षित रख सकें। इस आयोजन में शनि मंत्र की सवा लाख आहुतियाँ प्रदान करने का लक्ष्य रहता है,जो शनि की जप संख्या अर्थात २३,००० का लगभग साढे पाँच गुना अधिक होता है।

यज्ञ के अंतर्गत सम्पन्न होने वाले पूजन एवं यज्ञ

卐 गणपति,भैरव,नवग्रह,नक्षत्र,दशमहाविद्या एवं रूद्राभिषेक 卐

पूजन एवं यज्ञ में सहभाग लेने के लिए

आप अपना पूरा नाम,आयु (संभव हो जन्म दिनांक,महिना,वर्ष और स्थान भी),पता एवं संपर्क नं./ईमेल नं. इत्यादि विवरण हमें भेज दें। महायज्ञ उत्सव के २१ दिन पूर्व आपको प्रवेश पत्र भेज दिया जाएगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ महायज्ञ विचार ॥

अर्थानुसंधानपूर्वक कथन

श्रद्धेय कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी की लेखनी से शब्दांकित् '॥ शनि प्रसंग ॥' संस्करण एवं समय-समय पर उनके निर्देशन में सम्पन्न होने वाले '॥ श्री शनि-हनुमान महायज्ञ ॥' शनि जनित पीड़ा से व्यथित लोगों के लिए संजीवनी के समान हैं।

॥ जोर्तिविद् श्रीमती चंद्राबेन प्रजापति ॥
ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ.
(ज्योतिष शिखर,ज्योतिष रत्न)

निश्चय ही वे परम सौभाग्यशाली हैं,जो किसी न किसी माध्यम से आप (श्रद्धेय कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी) से संयुक्त होकर महायज्ञों का हिस्सा बनकर आपकी सेवा और पूण्य दोनों का ही लाभ ले रहे हैं।

॥ श्री.लक्ष्मण महागडे ॥ 'साहित्य सुरभि'
लेखक एवं समाजसेवी
(ग्रीन स्वस्तिक चॅरिटेबल ट्रस्ट)

प्राय: महापुरूष कोई चमत्कार नहीं करते अपितु वे जो भी करते हैं, वह अपने आप में चमत्कारिक घटना होती है। सामान्यत: ऐसा ही अनुभव आपके (श्रद्धेय कर्मयोगी श्री विष्णु दत्त जी) द्वारा सम्पन्न होने वाले यज्ञों में सम्मिलित होने पर किसी न किसी बहाने होने ही लगता है।

॥ श्री .सुबोध गुप्ता ॥
रिसर्च ऐनलिस,शेयर मार्केट
(एम.बी.ए.फाइनैंस)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री ॥
शिव उत्सव
केन्द्र

द्वारा संचालित सेवायें .

ज्योतिष विभाग-

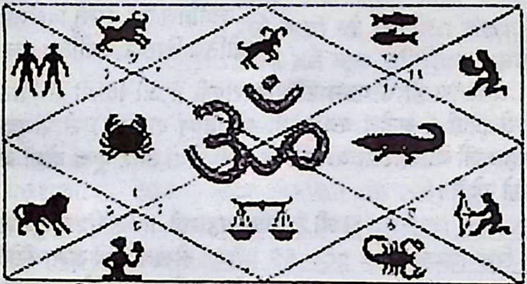

जन्मपत्रिका (कुंडली) निर्माण जिसमें आप पायेंगे .

- ग्रह, चलित भाव, दशा -प्रत्यन्तर दशा, जन्मकुंडली के अनुसार शुभ-अशुभ योग,दशा के अनुसार अशुभ योगों के विचार,दान,रत्न,व्रत,पूजन,यज्ञ आदि का विवरण .
- विवाह के लिए जन्मकुंडली मिलान में वर्ण, वश्य,तारा, योनि,ग्रह मैत्री,गण,भकूट,नाड़ी,द्वादश भाव पर विचार.
- विवाहादि,मंगलदोष,कालसर्पदोष,शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या विचार,कालसर्प दोष योग विचार,पितृदोष, नक्षत्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदि पर रोचक लेखों से समन्वित पूर्ण जन्मपत्रिका .
⇨ अपने घर बैठकर जन्मपत्रिका प्राप्त करें और फोन द्वारा परामर्श लेने की सुविधा पायें .

समस्या विशेष का विवेचन व समाधान अंतर्गत .
⇨ दैनिक/साप्ताहिक/मासिक/वार्षिक राशिफल जानकारी
⇨ प्रश्न कुण्डली द्वारा भविष्य प्रश्नफल की जानकारी .
⇨ वधू-वर गुण मिलान, तिलक, सगाई, विवाह, विवाह दोष निवारण मुहूर्त .
⇨ शुभकार्यों, भूमि-गृह लेन-देन, भवन निर्माण, वास्तु शांति वाहन, व्यापार, नौकरी करने, आभूषण धारण, पूजा, मंत्र साधना, यज्ञ- अनुष्ठान, शल्यक्रिया, नामकरण मुहूर्त .

वास्तु विभाग-

वास्तु अंतर्गत घर, फैक्टरी, कार्यालय, होटल आदि के दोष विवेचन, वास्तु दोष निवारणार्थ उपायों में यंत्र स्थापन, रंगों एवं रत्नों के प्रयोग व अनुष्ठान, पूजन, यज्ञादि आदि का सुझाव एवं सम्पन्न कराने की व्यवस्था।

यंत्र विभाग-

इस विभाग में शुभ नक्षत्र, वार, तिथि, मुहूर्त में कर्मकाण्डी, श्रेष्ठ पंडितों द्वारा कामना प्रदायक मंत्रों से यंत्र और माला की प्राण-प्रतिष्ठा कर उन्हें सिद्ध, चैतन्य करने की व्यवस्था है, जिससे लाभान्वित होकर लोग अपना जीवन सुखमय बना सकें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञ महोत्सव, साधना विभाग-८

केन्द्र समय-समय पर नवरात्री, दीपावली, होली, ग्रहण, पुष्य नक्षत्र महाशिवरात्रि, अक्षय तृतीया आदि के विशेष मुहूर्त पर साधना-पूजन एवं यज्ञ महोत्सवआयोजित करता है। वैसे तो केन्द्र अपने सभी आयोजनों को प्रधानता देते हुए उसे पूरी श्रद्धा और निष्ठा से सम्पन्न करता है, पर केन्द्र द्वारा आयोजित चार महायज्ञों का अपना विशेष महत्त्व है। यथा:-

॥ श्री शनि-हनुमान महायज्ञ ॥

शनि एवं रोग, शत्रु, अभाव आदि बाधा निवारण हेतु.

॥ सौभाग्य चिंतामणि महायज्ञ ॥

भाग्य के सर्वतोमुखी उदय एवं पारिवारिक सुख समृधि हेतु.

॥ विवाह चिंतामणि महायज्ञ ॥

वैवाहिक विलंब समाधान एवं मनोनुकूल वर/वधू की प्राप्ति हेतु.

॥ महालक्ष्मी वरद महायज्ञ ॥

महालक्ष्मी कृपा एवं मनोवाँछित कार्य सिद्धि हेतु.

इन महायज्ञों में सहभाग लेकर पूजन और दर्शन करके साधारण जन भी दु:ख, अभाव और परेशानियों से मुक्ति पा सकते हैं। इस महायज्ञ में साधकों, यजमानों को पूजा का क्रम, मंत्रों का उच्चारण, न्यास-ध्यान आदि बताया जाता है, पूजन के विधि-विधान से परिचित करवाया जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमानों के हाथों से उनके पूजन यंत्र, सामग्री आदि प्राण-प्रतिष्ठित करवाये जाते हैं,जिसमें वे अभिषेक,अर्चन और अग्निदेव के पूजन क्रम से अवगत होते हैं। प्रतिवर्ष इन महायज्ञों में भाग लेकर हजारों लोग अलौकिक आनंद की अनुभूति और भौतिक सुख की प्राप्ति करते हैं। उपरोक्त चारो महायज्ञ २१,५१ एवं १०८ हवनकुंड की संख्या में सामूहिक रुप से ही सम्पन्न किये जाते हैं।

व्यक्तिगत अनुष्ठान विभाग-

इस विभाग में केन्द्र द्वारा व्यक्तिविशेष की समस्या के निवारण के लिए व्यक्तिगत् पूजा-अनुष्ठान की व्यवस्था की जाती है जिसमें केन्द्र के विद्वान पण्डित अनुष्ठान सम्पन्न करवाते हैं। यदि किसी के घर पर स्थान का अभाव हो तो, केन्द्र द्वारा पूजन-अनुष्ठान के लिए स्थान की भी व्यवस्था की जाती है।

विशेष अनुष्ठान विभाग-

इस विभाग में विशेष अनुष्ठान के अंतर्गत गणपति प्रयोग, भैरव प्रयोग,दश महाविद्या प्रयोग (देखिये दशमहाविद्या नव ग्रह प्रयोग में पौराणिक फल),तंत्रबाधा,शत्रुबाधा, मंगली दोष,विवाह बाधा निवारण प्रयोग,महा-मृत्युंजय जप,श्रीमहालक्ष्मीविलास प्रयोग,श्रीसूक्त प्रयोग, श्रीयंत्र अर्चन प्रयोग,दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग,एकाक्षी नारियल कल्प प्रयोग,रुद्राक्ष कल्प प्रयोग (१ से १४ मुखी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्राक्ष पर एवं १५ से २१ मुखी रुद्राक्ष पर उपलब्धता के आधार पर),वास्तु शांति,नवग्रह शांति,नक्षत्र शांति(पंचक, गंडमुल,यमघंट योग,अमावस्या),पितृदोष शांति,पिण्डदान नारायण नाग बली, त्रिपिण्डी श्राद्ध (गया, बिहार में) किया जाता है।

प्रकाशन विभाग-

इस विभाग द्वारा नियमित रुप से उत्सव समाचार पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। जिससे केन्द्र द्वारा आयोजित होनेवाले कार्यक्रमों की जानकारी सहजता से लोगों तक पहुँच सके और वे इसका लाभ उठा सकें। इसके अतिरिक्त ज्योतिष,वास्तु,मंत्र-तंत्र-यंत्र,आयुर्वेद एवं कला साहित्य, तीर्थाटन और पर्यटन आदि विविध संदर्भों पर लोकोपयोगी प्रकाशन कार्य किया जाता है।

आपकी अनुकूलता हुई अब और भी आसान

⇨.जो लोग किसी कारणवश केन्द्र द्वारा आयोजित महायज्ञ में सम्मिलित नहीं हो पाते हैं या जिन्हें घर पर पूजन-स्थापन के लिए यंत्र-माला या अन्य सामग्रियों की आवश्यकता है। वे पूजा-अनुष्ठान या साधना से सबंधित सिद्ध यंत्र,माला एवं पूजन की अन्य सामग्रियों को जिनको श्रेष्ठतम् मुहूर्त में सिद्ध कर जप-पूजन द्वारा विशेष उर्जा प्रदान किया जाता है,अब असानी से घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाठक वर्ग किसी भी प्रकार की साधना, पूजन की माला, यंत्र, चित्र या कोई अन्य भी वस्तु श्री शिव उत्सव केन्द्र से मँगा सकते है, या सलाह लें सकते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए हमें लिखें या फोन करें अथवा हमारी बेवसाइट देखें।

⇨ जन्मपत्रिका निर्माण, कुण्डली मिलान, अनुष्ठान या अन्य सेवा के लिए अग्रिम राशि श्री शिव उत्सव केंन्द्र, (Shri Shiv Utsav Kendra), मुंबई के नाम से भेजें।

अधिक जानकारी के लिए आप संपर्क कर सकते हैं

॥ श्री शिव उत्सव केंन्द्र ॥

१०२, आय- २ विंग, रॉयल मिडोस, कोप्रोली, माथेरान रोड, न्यु पनवेल..

संपर्क:-०९० २२२ ८८ ७७ ९

०९३२ ४७८ ४२३१/०९०२९२१०३०३

या हमारी बेवसाइट देखें।

visit on-www.shrishivutsavkendra.com

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री शिव उत्सव केंन्द्र ॥

की संग्रहणीय पुस्तकों की एक झलक

***

॥ विवाह चिंतामणि ॥

विवाह प्रसंग पर एक अन्यतम पुस्तक

वैवाहिक विलंब के कारण और उनके निदान सहित, मनोवांछित सुयोग्य वर/वधू की प्राप्ति के विशिष्ट सिद्ध मंत्र एवं प्रयोग।

समय पर उचित विवाह शरीर में गठन, चेहरे पर तेज, बातों और मन में आत्मविश्वास पैदा करता है, वहीं बेमेल जीवन-साथी और विवाह विलंब जीवन में अव्यक्त करुण उदासी, दमित इच्छा और व्याकुलता के अंधकार को और भी गहन कर देता है।

यह पुस्तक बौद्धिक, नैतिक और आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ स्तर के जिसमें ईमानदारी, चरित्र, रुप और निष्ठा हो ऐसे वर या वधु की खोज में जिन जातकों या माता-पिता का चेहरा आवेश से आरक्त, निराशा और डर से विवर्ण हो रहा है, ऐसे लोगों के लिए मील के पत्थर के सदृश है।

॥ सौभाग्य चिंतामणि ॥

हृदय की उमंगों को उत्साह में परिवर्तन कर सौभाग्य को आंखों में भरने, भाग्य के सर्वतोन्मुखी उदय एवं पारिवार में सुख-समृद्धि एवं जीवन में अद्भुत सामर्थ्य देनेवाले विलक्षण सिद्ध मंत्रों एवं प्रयोगों से संकलित पुस्तक।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ रुद्राक्ष प्रसंग ॥

१,२९,००० लोगों के दिव्य अनुभवों से संस्पर्शित, जिसका प्रत्येक शब्द हीरे के समान मूल्यवान है। जिसमें रुद्राक्ष के प्रामाणिक एवं गोपनीय तथ्यों को पुनः जीवंत किया गया है।

भगवान् की लीला बड़ी अद्भुत है। सारा अस्तित्व, सारा जीवन, सारा क्षण, अहर्निश उसी की कृपा में स्नान कर रहा है। लीलावश जिस क्षण वह प्रकट होता है, वह क्षण मुहूर्त बन जाता है। जिस दिन वह प्रकट होता है, वह दिन पर्व बन जाता है। जहाँ वह अपनी लीला प्रकट करता है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है। यही नहीं, लीलावश जो वह कह देता है, वह शब्द मन्त्र। जो कर देता है, वह क्रिया तन्त्र। जो छू देता है, वह वस्तु यन्त्र बन जाती है, चैतन्य हो जाती है। उसकी लीला से निर्जीव भी सजीव होकर गति करने लग जाता है।

भगवान् की इसी प्रकार की एक लीला का प्रसाद है, रुद्राक्ष। जो भगवान् के परम मंगल रुप सदाशिव के नेत्रों से गिरे जल - बिंदुओं द्वारा लीलावश उत्पन्न हुआ और इतना तेजस्वी, इतना चैतन्य एवं पुण्यदायी हुआ कि देवता भी इस रुद्राक्ष का आश्रय ग्रहण कर इसके माध्यम से जीवमात्र का कल्याण करने लगे। केवल देवताही नहीं बल्कि यक्ष, गंधर्व, ग्रह, ऋषि, पितृ एवं महाविद्या आदि देवियाँ भी रुद्राक्ष धारण करने वाले पर अपनी कृपा बरसाते हैं और माध्यम बनते हैं, उसके जीवन में ऐश्वर्य को प्रकट करने में, उसे तृप्त कर देने में, जो उसके जीवन में इच्छित होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्राक्ष प्रतीक है, उस आनन्द का जिसमें भगवान् शिव के नेत्र सदा डूबे रहते हैं। रुद्राक्ष शिव के नेत्रों से गिरे जल बिन्दुओं से निर्मित हुआ है, जो प्रतीक है उस बूँद का, जो सागर से मिलने के लिए आतुर रहती है। उस सागर से, जिसकी अतल गहराइयों में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के प्रतीक सदाचरण, आरोग्य, धन, वैभव, कीर्ति, यश, उत्तम स्वास्थ्य, पुत्र-पौत्र, आयु, बल, यौवन, सृष्टि का साक्षी भाव एवं निरंतर आनंद की अनुभूति छिपी है। यद्यपि जीवन भर हम उस सागर की थाह लेते रहें तब भी उसकी अतुलनीय गहराइयों का पता नहीं लगाया जा सकता है। हमारे ऋषियों ने हजारों वर्षो तक इस पर अध्ययन किया और पाया कि रुद्राक्ष में वह सभी गुण समाहित हैं, जो जीवन को पूर्णता की ओर गतिशील करने में सक्षम हैं। उन्होंने अपने आप को पूर्णता से जोडने के लिए रुद्राक्ष को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया। रुद्राक्ष मानव जीवन में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सद्गुणों को ग्रहण कर उसके अनुरुप बनने की गति प्रदान करने का एक अलौकिक गुण प्रदान करता है।

जो मनुष्य रुद्राक्ष धारण करता है, उसकी भली प्रकार से पूजा करता है, वह उसी क्षण से अपने लक्ष्य के निकट पहुँचने लगता है। ऐसे मनुष्य की कीर्ति उसके पदचिह्नों पर चल कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करने लगती है।

प्रस्तुत पुस्तक *॥ रुद्राक्ष प्रसंग ॥* में एक से लेकर इक्कीस मुखी रुद्राक्ष की उत्पत्ति, प्रकार, गुण (फल), पूजन, मन्त्र एवं धारण विधि सहित, रुद्राक्ष से संबंधित अनेक सिद्ध मन्त्रों, प्रयोग विधानों एवं रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, जिससे प्रायः अब तक जन-सामान्य वंचित रहा है।

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आपके शुभ चिंतन, विचार एवं सहयोग ने इस पुस्तक को जनमानस में अभिनन्दनीय बना दिया विशेष आभार सहित आपका हार्दिक धन्यवाद.

श्रीमज्जगदाचार्य स्वामी देवेन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज
नैमिष व्यास पीठाधीश्वर, नैमिषारण्य, उत्तर प्रदेश.

श्रद्धेय श्री श्री श्री निरंजन स्वामीजी महाराज
श्री अम्बिका अन्नपुर्णेश्वरी मंदिर, सातरस्ता, मुंबई.

श्री रामनरेश यादव, राज्यपाल (गवर्नर)
भोपाल, मध्यप्रदेश.

वेदाचार्य डॉ. कीर्त्तिकान्त शर्मा, अनुसन्धानाधिकारी
इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दी विभाग
मुंबई विश्व विद्यालय, मुंबई.

श्री .कामाख्या शर्मा
प्र. पुजारी, कामाख्या पीठम्, आसाम

आचार्य श्री वेदव्रत मिश्र, दर्शन-पुराणेतिहासाचार्य
हरदोई, उत्तर प्रदेश.

श्री. हरिभाऊ गोविंदराव उंब्रनकर, ओर्डिनैन्स अधिकारी
सिविलीऐन्स, रक्षा मंत्रालय (भारत सरकार)

श्री प्रमोद दातरंजे, वरिष्ठ अधिक्षक.
नेशनल सैम्पल सर्वे ऑर्गनाइजेशन(एफ.ओ.डी), भारत.सरकार

प्रो. दिनेश कुमार (काव्य भूषण) एम.ए., एम.फिल.
सिद्धार्थ कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मुंबई

श्री .सुबोध गुप्ता
रिसर्च अैनलिस, शेयर मार्केट (एम.बी.ए.फाइनैंस)

श्री. लक्ष्मण महागडे 'साहित्य सुरभि'
लेखक एवं समाजसेवी (ग्रीन स्वस्तिक चॅरिटेबल ट्रस्ट)

श्री. सुनील मतकर
मैंन्ट्रोनिक्स आर्ट, मुंबई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

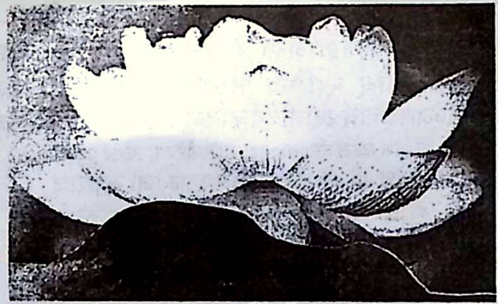

॥ महान पुरुषों के लक्षण ॥

स्वर्गस्थितानामिह जीवलोके चत्वारि चिन्हानि वसन्ति देहे।
दानप्रसंगों मधुरा च वाणी देवार्चनं ब्राह्मण तर्पणं च॥

दान अर्थात् दुसरों के हित के लिए त्याग, मीठे-मधुर, हितकारी वचन। देव पूजा अर्थात् उपकार करने वाले के प्रति कृतज्ञता एवं सम्मान। ब्राह्मणों को तृप्त करना अर्थात् गुरुजनों, ज्ञानियों एवं दैवज्ञों को अपने आचरण, सेवा आदि से संतुष्ट करना। जिन लोगों में ये लक्षण होते हैं, वे इस संसार में स्वर्ग से आकर जन्म लेने वाले और अपना कर्म फल पुर्ण कर पुनः स्वर्ग की ओर आरोहण करने वाले कहे गये हैं अर्थात् स्वर्ग के निवासियों में ये लक्षण स्वभावतः होते ही हैं।

॥ पाठकों निवेदन ॥

पाठक अपने विचार, अनुभव हमें अवश्य भेजें जिससे आगामी प्रकाशन एवं सामुहिक यज्ञिय अनुष्ठानों में हम उसका समावेश कर अधिक से अधिक पाठकों तक उसका लाभ पहुँचा सकें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रसंग संदर्भ
(आवश्यक सूत्र हेतु)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'शनि प्रसंग' पाठकों के लिये विशेष उपहार

जिसमें पाठकों के लिये 'श्री शिव उत्सव केन्द्र' व्दारा सम्पन्न होने वाले 'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' में पुर्णाहुती प्रदान करने की विशेष सुविधा उपलब्ध की गई है। वह भी सर्वथा निःशुल्क। इस सुविधा को प्राप्त करने के लिये आपको बस इतना करना होगा कि आप अपना नाम, आयु, जन्मतिथी विवरण और पता हमें लिखकर भेज दें और फोन व्दारा सुचित कर दें। यज्ञोत्सव कार्यक्रम की सुचना हम आप तक पत्र या फोन के माध्यम से भेज देंगे, जिससे आप इस सुविधा का लाभ निःशुल्क रुप से प्राप्त कर सकें।

'श्री शनि-हनुमान महायज्ञ' आपके जीवन से

दुर्भाग्य को दूर भगाकर भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से जीवन को पूर्णता प्रदान करनें में समर्थ है। जिसमें उपस्थित होना ही अपने आप में सौभाग्य का सुचक है, जिसे सम्पन्न कर, आप आश्चर्य से भर जायेंगे।

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक अचूक फलदायक, महत्त्वपूर्ण, तीव्र प्रभावकारक, विलक्षण समारोह। .... और यदि फिर भी आप चूक गये, तो फिर आपके भाग्य को क्या कहा जाए ?

हमें विश्वास है, कि आप किसी भी स्थिति में इस सौभाग्य से स्वयं को वंचित नहीं करेंगे ....। आपको हर हालत में इस सुअवसर पर उपस्थित होना ही है। यह हमारा भावभरा अनुरोध भी है और 'शनि प्रसंग' पुस्तक व्दारा आमंत्रण भी।

व्यवस्थापक

'श्री शिव उत्सव केन्द्र'

..

....

....

अधिक जानकारी के लिए आप संपर्क कर सकते हैं

॥ श्री शिव उत्सव केंन्द्र ॥

१०२, आय-२ विंग, रॉयल मिडोस, कोप्रोली, माथेरान रोड, न्यु पनवेल. महाराष्ट्र.
मो. ०९३२ ४७८ ४२३१/०९०२९२१०३०३

या हमारी बेवसाइट देखें।

visit on-www.shrishivutsavkendra.com

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुस्तकदान का संकल्प

ओम् अद्य इत्यादि अमुक गोत्रः अमुक राशिः अमुक शर्मा अहम् दृष्ट श्रुतानुमानादि दुःशकुन दुःस्वप्न भय पीड़ा ग्रहसूचित सर्वारिष्ट प्रशान्ति सर्वपाप विनिर्मुक्ति शत्रु रोग महामारी ग्रहराजोपद्रव देव दानव प्रेतादि कृत पीड़ा कष्ट बन्ध परयंत्र परमंत्र मोहनादि सकल संकट विनाशार्थम् मम ऐहिक जन्मान्तर कृत पातक निवृत्तिद्वारा शनि देवता प्रीत्यर्थम् शनि प्रसंग पुस्तकं अहं दानं करिष्ये .

....

यह पुस्तक आप इन स्थानों से भी प्राप्त कर सकते हैं.

श्री.हरिभाऊ गोविंदराव उंब्रजकर
फ्लैट नं.ए-७,रुनोल ड्यु ड्रोप,मणिमंगल हाऊसिंग
सोसायटी,कासारवाडी,पुणे-३४,महाराष्ट्र .
९९२२९८०८२३/९८८१०९८३२६/९८६७०२८३८४

राजूभाई परमार
शॉप नं.ए/२२,कर्म संकल्प,घाटकोपर राजावाड़ी गार्डेन सी एच एस.
राजावाड़ी,रोड नं.७,सोमैया महाविद्यालय के सामने
घाटकोपर(पू),मुंबई-४०० ०७७.मो. ०९८७०३१८६०९

.....

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारी अन्य संग्रहणीय पुस्तकें

।। रुद्राक्ष प्रसंग ।।

(रुद्राक्ष रहस्य संजीवनी)

१,२५,००० लोगों के दिव्य अनुभवों से संस्पर्शित, जिसका प्रत्येक शब्द हीरे के समान मूल्यवान है। जिसमें रुद्राक्ष के प्रामाणिक एवं गोपनीय रहस्यों को पुनः जीवंत किया गया है।

।। विवाह चिंतामणि ।।

वैवाहिक विलंव के कारण और उनके निदान सहित, मनोवांछित सुयोग्य वर/वधु की प्राप्ति के विशिष्ट सिद्ध मंत्र एवं प्रयोग ।

शिव उत्सव केन्द्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection